शतचण्डी विधान

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri.

शतचण्डी विधान

माँ दुर्गा का चरित्र अखण्ड है, असीम है। भौतिकता की होड़ में लगे मानव को द्रुतवाही काल में इतना अवकाश कहाँ कि वह माँ दुर्गा के सम्पूर्ण चरित्र का ध्यान, मनन व चिन्तन कर सके। अत: विभिन्न अभीष्टों की प्राप्ति के लिए कौन सा पाठ कब और किस विधि से करना चाहिए ? यह इस पुस्तक में बताने का प्रयास किया गया है।

श्रद्धा तथा प्रेम का भाव ही सच्ची उपासना है। उपास्य शिव तथा श़क्ति रूप होता है। शक्ति के बिना शिव शव है। अत: शक्ति ही भक्ति की मूलोत्पादिका है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

समर्पण

परम श्रद्धेय पण्डित तिलकराज पराशर जी को समर्पित! जिन्होंने मार्ग-दर्शन करके मेरा रोम-रोम भक्ति की पावन सुगन्ध से सुवासित कर दिया।

—पण्डित जमुना प्रसाद

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

शतचण्डी विधान

(नवरात्र में विधिवत् देवी-उपासना)

संकलन कर्ता:

पण्डित जमुना प्रसाद जी

मूल्य: 120-00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

जम्मू विक्रेता : **पुस्तक संसार**
167, नुमाइश का मैदान, जम्मू तवी (ज.का.)

संस्करण : **सन्** 2008

शब्द सज्जा : **मधुर ग्राफिक्स,** दिल्ली-6

मुद्रक : **राजा ऑफसेट प्रिंटर्स**, दिल्ली-92

© रणधीर प्रकाशन

SHATCHANDI VIDHAN

Compiled by : Pt. Jamuna Prasad Jee
Published By : Randhir Prakashan, Hardwar (INDIA)

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अनुक्रमणिका

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी के सम्बन्ध में

- कण-कण में व्याप्त महामाया की शक्ति ही सारे विश्व को चलाने वाली और सम्पूर्ण चराचर की स्वामिनी है व अनादि और अनन्त है।
- महामाया के किसी भी अवतार की अथवा किसी भी रूप की आराधना दुष्टों को दण्ड देने वाली और तेज को बढ़ाने वाली है।
- नवदुर्गाओं या नवरात्रों में भगवती की उपासना अधिक फलदायक होती है।
- हठयोग की भाषा में भी महामाया की नौ शक्तियाँ मनुष्य के नौ छिद्र कहे जाते हैं।
- पंचभूत और तीन गुण महामाया की आठ भुजायें हैं।
- महाशक्ति की एक अद्‌भुत महिमा यह है कि उसका प्रत्येक अवतार तन्त्र-शास्त्र से सम्बन्धित है।
- शिवपुराण के अनुसार शिवजी के दस अवतारों में उनके प्रत्येक अवतार के समय महाशक्ति भी उनके साथ थीं, जिनके नाम हैं:—

१. **महाकाल** अवतार में	—	महाकाली के रूप में
२. **तारकेश्वर** अवतार में	—	तारा के रूप में
३. **भुवनेश** अवतार में	—	भुवनेश्वरी के रूप में
४. **षोडश** अवतार में	—	षोडशी के रूप में
५. **भैरव** अवतार में	—	भैरवी के रूप में
६. **छिन्नमस्तक** अवतार में	—	छिन्नमस्ता के रूप में
७. **धूम्रवान** अवतार में	—	धूमावती के रूप में
८. **बगलामुख** अवतार में	—	बगलामुखी के रूप में
९. **मातंग** अवतार में	—	मातंगी के रूप में
१०. **कमल** अवतार में	—	कमला अथवा कमलात्मिका

महामाया के ये दस रूप '**दस महाविद्या**' के नाम से तांत्रिकों की उपासना का प्रमुख अंग है। दस-महाविद्या का प्रत्येक स्वरूप विभिन्न सिद्धियों एवं इष्ट-फल को प्रदान करने वाला है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दो शब्द

जीवन में उपासना का विशेष महत्व है। उपासना का अर्थ है— भगवान का पवित्र नाम का बारम्बार स्मरण करना, ध्यान करना, जप करना आदि। मन को एकाग्र करके अपने इष्ट के ध्यान में लीन हो जाने से एक ओर मन को परम शान्ति प्राप्त होती है तो दूसरी ओर लौकिक और पारलौकिक (आध्यात्मिक) उन्नति भी अनायास ही हो जाती है।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि परमात्मा के असंख्य रूप एवं नामों में से किसकी उपासना की जाये? उत्तर मिलता है कि उपासना तो उपासक के भावों पर निर्भर है। उसके भाव ही देवता को महान् बनाते हैं। फिर जिसको जो रूप अच्छा लग जाये! क्योंकि जिसकी जैसी भावना होती है, उसको भगवान् वैसे ही दिखायी पड़ते हैं। 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूर्ति देखी तिन तैसी।'

परमात्मा के शिव रूप के साथ उनकी शक्ति की पूजा भी प्रचलित हुई। पिता को प्रसन्न करने के लिए माँ का प्रसन्न होना आवश्यक है। इसीलिए महाकवि तुलसीदास जी श्रीराम की स्तुति के साथ-साथ माता सीता की भी वन्दना करते हैं। शिव की शक्ति के रूप में सिंहवाहिनी दुर्गा को विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ है। शक्ति के दो रूप दिखाई पड़ते हैं। त्रिपुर-भैरवी और त्रिपुर सुन्दरी। त्रिपुर-सुन्दरी ने शिव कर्पूर-गौर वक्षस्थल में अपनी ही छाया देखकर उसे भैरवी नाम दिया था। त्रिपुर-भैरवी, त्रिपुर-सुन्दरी के अहंकार की छाया है। वे अहंकार के रूप में उद्दाम वासना को उकसाती है तथा सेवा के वास्तविक धर्म से वंचित रहने को उत्साहित करती हैं, परन्तु सम्पूर्ण

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जगत् की माता त्रिपुर-सुन्दरी सदा सबकी रक्षा करती रहती है। उनका सिंह प्रतीक रूप में है।

जो पुरुष साहसी हैं, धर्म के अनुकूल आचरण करने वाले हैं तथा पापी से डरना नहीं जानते, वे सिंह हैं। उन्हीं को वाहन बनाकर वे धर्म से विद्वेष करने वालों, अविवेकी तथा अहंकारियों का संहार करके, वे धर्म की स्थापना करती हैं। त्रिपुर-सुन्दरी का ऐसा मनमोहक रूप, जो सदा कल्याणकारी है, किसको अपनी ओर आकर्षित नहीं करेगा।

इन सबका ध्यान रखते हुए ही मैंने श्री दुर्गा देवी की स्तुति पर बल दिया है, जो थोड़े समय में ही अधिक फलदायी है। मेरा दृढ़ विचार है कि आज के अति व्यस्त समय में भी यदि मनुष्य बहुत थोड़ा-सा समय निकालकर भी सच्चे मन से देवी की उपासना करें तो शीघ्र ही मन के अनुकूल फल प्राप्त करेंगे।

हमारे पास कम समय होने अथवा शक्ति का अभाव होने पर भी यदि हम देवी का यह लघु पाठ करें तो पूर्ण फल की प्राप्ति होगी। मेरी इच्छा है कि यह पाठ घर-घर पहुँचे और हमारे बच्चों में आदिशक्ति भवानी के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति का पवित्र संस्कार जागृत करे। वास्तव में 'दुर्गा-पाठ' रोग-शोक को दूर करके सदा कल्याण करने वाला और शीघ्र ही फल देने वाला है। यदि मैं कतिपय भक्तों का ध्यान इस ओर आकर्षित कर सका तो अपना यह तुच्छ प्रयास सफल समझूँगा।

प्रस्तुत दुर्गा पाठ के लेखन कार्य में अपनी विदुषी पुत्री डॉ० (श्रीमती) विदुला सिंह, प्रवक्ता हिन्दी विभाग जे० वी० जैन कॉलेज सहारनपुर ने अमित सहयोग दिया है। मैं अपनी दूसरी पुत्री डॉ० (कु०) अरुण वर्मा (एम० ए० बी० एड०, साहित्य रत्न, पी० एच० डी०) का

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ क्योंकि प्रस्तुत दुर्गा-पाठ की पांडुलिपि को अपने सुलेख से कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ अल्प अवधि में अत्यन्त मनोयोग से तैयार की है, जो कि अविस्मरणीय है। माँ दुर्गा सदैव उनका मार्ग प्रशस्त करें।

प्रस्तुत दुर्गा-पाठ के संकलन में जिन सहायक ग्रन्थों का मैंने प्रयोग किया है, उनके विद्वान् लेखकों का मैं आभारी हूँ तथा उन समस्त लेखकों का भी मैं आभार व्यक्त करना अपना परम कर्त्तव्य समझता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपना सहयोग दिया है।

संकलन कर्ता:

तन-मन से माँ के श्री चरणों में समर्पित—

पण्डित जमुना प्रसाद

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

आचार्य एवं महानुभावों के विचार तथा सुझाव

भारतीय जीवन में ज्ञान, कर्म और उपासना का अत्यन्त महत्व है। वस्तुत: तीनों तत्त्वों का समन्वय समावेश ही पूर्णतया है। ऐहिक जीवन की सानन्द अनुभूति के साथ परमानन्द की प्राप्ति तथा नि:श्रेयस की अधिगति है। मानवता की विजय है। आराधकों ने अपनी भावना या अल्पज्ञता की दृष्टि से किसी एक को प्रश्रय देकर अन्यों को गौण कहा है। ज्ञान के बिना कर्म अन्धा है। कर्म के बिना ज्ञान पंगु है और बिना ज्ञान तथा कर्म के उपासना एक आडम्बर है। एतावतापि इनमें उपासना का मार्ग सहज, सरल, एवं सरस है। इस पद्धति से अर्जित ज्ञान एवं कर्म भी अपने काठिन्य एवं रुक्षता का परिहार करके जीवन में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् का आधान करते हैं।

उपासना में उपासक अपने उपास्य के श्रीचरणों में बैठकर आत्मचिंतन करता हुआ तन्मय बना रहता है और उसके अलौकिक गुणों को आत्मसात करता है। श्रद्धा तथा प्रेम का भाव ही सच्ची उपासना है। उपास्य शिव तथा शक्ति रूप होता है। शक्ति के बिना शिव शव है। अत: शक्ति ही भक्ति की मूलोत्पादिका है। बिना भय के प्रेम सम्भव ही नहीं, यह वास्तविक सत्य है।

प्रारम्भ से ही मानव शक्ति का उपासक रहा है। उसके अनन्त रूपों में शक्ति बिखरी हुई है। विकीर्ण शक्ति को ही पूर्ण मानकर लौकिक तृष्णाओं से श्रान्त, क्लान्त एवं म्लान मानव मन परमसुख की प्राप्ति चाहता है, ये कितनी विडम्बना है ? इतना ही नहीं अपनी शक्ति को पूर्ण मानकर दूसरी शक्तियों का उपहास कर रहा है। इसी से ही साम्प्रायदिक तथा धार्मिक उन्मादों का ज्वाल-जाल सकल संसार को अपने में परिवेष्टित किये है। सम्पूर्ण मानवता के विकास के लिए बिखरी हुई इन शक्तियों का समन्वय अपरिहार्य है, आवश्यक है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

माँ दुर्गा का चरित अखण्ड है, असीम है। असीम में ही ससीम का विलय होता है। सौविध्य, सम्प्रक्त, भौतिकता की होड़ में लगे मानव को द्रुत-वाही काल में इतना समय ही कहाँ कि माँ दुर्गा के सम्पूर्ण चरित का ध्यान, मनन एवं चिन्तन कर सके। अतः विभिन्न अभीष्टों की प्राप्ति के लिए सुधी जनों ने दुर्गा सप्तशती के त्रयोदश सर्गीय चरित को विभिन्न प्रयोजनों में महिमान्वित किया। यथा—चिन्ता दूर करने, पुष्ट तथा शक्तिशाली शत्रु से भय होने पर, शत्रु को मोहित और नष्ट करने के लिए प्रथम अध्याय या चरित का पाठ करना चाहिए। जब बलवान शत्रु भूमि या घर पर अधिकार कर ले, झगड़े में विजय के लिए, धन, ऋद्धि, सिद्धि, मनोरम पत्नी की प्राप्त्यर्थ क्रमशः द्वितीय तृतीय तथा चतुर्थ अध्याय का पाठ समीचीन कहा गया है। यह मध्यम चरित है। भूत-प्रेत बाधा, दुःस्वप्न फल, भय आदि षष्ठम् तथा सप्तम् अध्याय में। सैनिक की सुरक्षा के लिए अष्टम। लाभ तथा सम्पत्ति के लिए नवम। शक्ति एवं सन्तान सुख के लिए दशम। इष्ट लाभ, भविष्य की चिन्ता के निवारणार्थ एकादश। मनचाही वस्तु की प्राप्ति के लिए त्रयोदश अध्याय का प्रतिदिन विधिपूर्वक पाठ करना चाहिए।

कर्मकाण्ड प्रवीण पण्डित जमुना प्रसादजी ने विधि-विधान पूर्वक माँ दुर्गा के मध्यम चरित को उपस्थित किया है। इसी प्रकार प्रथम तथा तृतीय चरित को भी प्रस्तुत किया जाना चाहिए। वस्तुतः विधिरहित अर्थवाद का कोई औचित्य नहीं होता। पण्डित जी ने समस्त अपेक्षित विधि-विधान को प्रस्तुत कर उसे पुस्तक रूप में उपस्थित किया है। अतः माँ दुर्गा के उपासकों के लिए यह पुस्तक परम उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है।

—डॉ० देवी चन्द शर्मा
(अध्यक्ष संस्कृत विभाग)

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पूजन सामग्री के विषय में जानने योग्य बातें

किसी भी देवी-देवता की पूजा में कुछ वस्तुएँ विशेष रूप से प्रयुक्त होती हैं। कुछ वस्तुएँ लगभग सभी की पूजा में आवश्यक रहती हैं, जैसे—जल, चन्दन, पुष्प, अक्षत, हवन-सामग्री, धूप-दीप, नैवेद्य, मुद्रा आदि। चूँकि इस पुस्तक में हमारा प्रतिपाद्य विषय केवल देवीजी की उपासना का विवरण प्रस्तुत करना है, अत: यहाँ केवल प्रमुख देवी-अवतारों की पूजा-उपासना से सम्बन्धित सामग्री और विधि-विधान का उल्लेख किया जा रहा है।

हम यह नहीं कह सकते कि यही विधि सर्वश्रेष्ठ और पूर्ण है, शेष सब त्याज्य हैं। स्वानुभव के आधार पर विभिन्न प्राचीन मनीषियों ने अनेक विधियों की सफलता प्रमाणित की हैं। ग्रन्थों में इसीलिए अन्तर दीख पड़ता है। परन्तु वे सब शुद्ध और अपने में पूर्ण हैं। किसी की उपेक्षा या निन्दा नहीं की जा सकती। जैसे एक रोग के निवारण हेतु अनेक औषधियों की खोज की गई है, वैसे ही एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनेक पूजन-पद्धतियों की परिकल्पना की गई है। अब यह साधक की श्रद्धा और सामर्थ्य पर निर्भर है कि वह किस पद्धति से अपनी साधना पूरी करे। लाभ तो अवश्य होगा ही।

जल

पूजा-साधना की सामग्री में जल का प्रमुख स्थान है। उपासना-गृह की लिपाई-पुताई से लेकर देव-प्रतिमाओं के स्नान, चन्दन, धूप-दीप, हवन और नैवेद्यार्पण तक में जल का प्रयोग बराबर किया जाता है।

जिन्हें गंगाजल उपलब्ध न हो, वे सहज विश्वास के साथ कुएँ

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

का या समीपस्थ किसी अन्य नदी, तीर्थ, सरोवर का जल ला सकते हैं।

चाहे जहाँ से जल लिया जाये उसे शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल और साफ मँजे-धुले बर्तन में होना चाहिए। जल-पात्र ढका हुआ रखना चाहिए, ताकि उसमें कूड़ा-करकट और कोई कीट-पतंगा न जा सके। पूजा के समय आवश्यकतानुसार पात्र में जल लिया जा सकता है।

चन्दन

वैसे तो 'चन्दन' एक विशेष जाति के वृक्ष को कहते हैं। उसके काष्ठ को घिसने से सुगन्धित-लेप बनता है। वह लेप देव-प्रतिमा को लगाया जाता है। साधक-जन उसे अपने मस्तक पर भी लगाते हैं। कितनी ही औषधियों में भी उसका प्रयोग होता है। उपयोगिता के आधार पर उस वृक्ष, उसके काष्ठ (लकड़ी)और लेप—सभी को 'चन्दन' कहते हैं। परन्तु प्रयोगानुसार, अध्यात्म (पूजा-पाठ) के क्षेत्र में वे सभी पदार्थ 'चन्दन' माने जाते हैं, जिनके लेप का तिलक की भाँति प्रयोग किया जा सके।

मनीषियों के अनुभव के आधार पर निर्दिष्ट किया है कि चन्दन का प्रयोग इस प्रकार करें—

देवी-पूजा में लाल चन्दन। विष्णु-पूजा में पीला चन्दन। राम-पूजा में श्वेत-चन्दन।

शिव-पूजा में श्वेत-चन्दन अथवा भस्म। शिवजी को भस्म से बड़ा प्रेम है। उज्जैन में महाकालेश्वर की प्रतिमा को तो प्रतिदिन ताजी चिता-भस्म का लेप किया जाता है।

अक्षत

पूजन सामग्री में 'अक्षत' एक प्रमुख घटक माना जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से अक्षत का शाब्दिक अर्थ होता है—क्षत न होने वाला, अर्थात जिसका क्षय न हो। नष्ट न होने वाला, न टूटने वाला, दीर्घजीवी, अमर, शाश्वत और पवित्र। पूजन-सामग्री में अक्षत का आशय है—चावल। धान के दानों को कूट-छीलकर चावल निकाला जाता है। यही चावल के दाने से पूजन-क्रिया में प्रसंगानुसार प्रयुक्त हैं। उन्हें 'अक्षत' कहते हैं। प्रयोग करने से पूर्व चावलों को धो लेना चाहिए।

पुष्प

वनस्पति-जगत में हम सैंकड़ों प्रकार के फूल देखते हैं। फूल जहाँ एक ओर सृष्टि के सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं, वहीं दूसरी ओर वे सुगन्ध भी प्रसारित करते हैं। करौंदा, मेंहदी, बेर, कटहल, आम जैसे पेड़ों के फूल अपनी सुगन्ध से आस-पास का वातावरण इतना मादक बना देते हैं कि जो भी उधर से निकलता है, तृप्त हो जाता है। कुछ पौधे अपने फूलों के लिए विख्यात हैं। वे रूप, गुण और सुगन्ध तीनों में बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं। इसी वर्ग के कई फूल देवार्चन में प्रयुक्त होते हैं।

किन्तु यहाँ यह तथ्य स्मरण रखने योग्य है कि सब फूल सब देवताओं के लिए प्रयोज्य नहीं होते। कई फूल कई देव-पूजाओं में वर्णित हैं। यों, सामान्य रूप से कोई भी प्रचलित फूल प्रयुक्त हो सकता है फिर भी निषेध का ध्यान रखना चाहिए।

श्रद्धा के साथ यदि नियम-पालन भी होता रहे तो सोने में सुगन्ध जैसी स्थिति बन जाती है। बेला, चमेली, कुन्द, गेंदा, कमल, गुड़हल, गुलाब, केवड़ा, धतूरा, मदार आदि के फूल देव-पूजन में काम आते हैं।

धतूरा-मदार के फूल केवल शिव-प्रतिमा पर चढ़ाये जाते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी पूजा में कनेर, धतूरा, मदार आदि के पुष्प वर्जित हैं। साधारण रूप से सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गाजी आदि देवी-विग्रहों पर कमल, गुड़हल, गुलाब, गेंदा के फूल चढ़ाए जाते हैं। यों, अपनी श्रद्धा सामर्थ्य के अनुसार, साधक कोई भी फूल प्रयोग में ला सकता है। तो भी वर्जित पुष्प नहीं लेना चाहिए। प्रचलित नियमों के अनुसार शिवजी की पूजा में लाल रंग के पुष्प प्रयुक्त होते हैं। अस्तु पूजा में देवता की प्रकृति और रुचि के अनुसार ही पुष्पों का निर्णय करना चाहिए।

धूप

पूजा के समय धूपदानी में अंगारे रखकर उन पर कुछ विशिष्ट वस्तुओं का मिश्रण छिड़का जाता है। इस क्रिया को 'धूप देना' कहते हैं। अंगारों पर मिश्रण छिड़कने से सुगन्धित धुआँ उठता है। यह धुआँ सामान्य कोयले के धुएँ की तरह काला न होकर, प्रायः सफ़ेद होता है। वास्तव में धूप-क्रिया भी हवन-क्रिया का संक्षिप्त रूप है।

किन्तु जब किसी देवी-देवता की विशेष रूप से पूजा की जा रही हो, तब उस पूजन-विधान के अनुसार हवन-सामग्री की व्यवस्था करनी चाहिए। उदाहरण के लिए किसी पूजा में गूगल से हवन करने का विधान होता है, किसी में लोबान से, किसी में काष्ठ विशेष (बरगद की लकड़ी, गूलर की लकड़ी, कोई पत्ता-विशेष, कोई अन्न विशेष, कोई अन्न विशेष आदि) का नियम निर्दिष्ट है। अतः विशिष्ट पूजन के सन्दर्भ में उससे सम्बन्धित हवन-क्रिया और सामग्री की जानकारी कर लेना चाहिए।

अगरबत्ती में बाँस की तीली होती है और चूँकि बाँस का प्रयोग ईंधन के रूप में सर्वथा वर्जित है (यह तो शव के साथ चिता में

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जलता है) अतः बाँस की तीली से बनी अगरबत्ती प्रयोग न करें। धूप देना सम्भव न हो (शहरों में गैस और स्टोव के प्रचलन से चूल्हे समाप्त हो गये है। इसलिए अंगारों का अभाव रहता है) तो वे किसी अच्छी श्रेणी की धूपबत्ती का प्रयोग कर सकते हैं।

यद्यपि धूप देने के पीछे केवल आध्यात्मिक नियम की प्रतिबद्धता ही नहीं है तथापि इसके पीछे एंक विज्ञान-सम्मत तर्क भी निहित है—धूपबत्ती की गन्ध और उसका धुआँ वातावरण की विषाक्ततता को दूर करके, उसका शुद्धीकरण करता है। विभिन्न कारणों से वायुमण्डल में जो प्रदूषण उत्पन्न होता रहता है, हवन या धूप से निकलने वाला धुआँ उसके आसपास के वातावरण को मुक्त करके स्वच्छ, निर्मल, प्राणपोषक और स्फूर्तिदायक बनाता है।

परीक्षा के लिए देखें कि जब हम किसी सड़े हुए फल, अन्न या कीचड़ मिट्टी की बू पाते हैं तो तुरन्त जी मिचला उठता है—मिचली आने लगती है और लगभग सभी इन्द्रियाँ अपनी स्वाभाविक स्थिति के विपरीत व्याकुलता का अनुभव करने लगती है। परन्तु जब हम किसी सुगन्धित पदार्थ के निकट होते हैं, हमारी घ्राणेन्द्रिय किसी सुगन्धित पदार्थ के निकट होती है, हमारी घ्राणेन्द्रिय किसी सुवास का—केवड़ा, चमेली, मेंहदी (हिना) खस, केसर, कस्तूरी, कपूर आदि का स्पर्श करती है, हम तुरन्त ही आनन्द-विभोर हो उठते हैं।

आशय यह है कि सुगन्ध और दुर्गन्ध का प्रभाव मनुष्य पर अवश्य और तत्काल पड़ता है। धूप देने का विधान, वस्तुतः वातावरण के शोधन के उद्देश्य से किया गया है। अतः पूजा के समय, नियमानुसार धूप की व्यवस्था अवश्य करनी चाहिए। मेरा अपना व्यक्तिगत अनुभव है कि यदि कोई व्यक्ति नित्य सुबह-शाम अपने घर, कमरे, पूजा-गृह, बैठक में, जहाँ भी वह रहता हो, यदि लोबान या गूगल की

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

धूनी दे दिया करें तो उसकी मनोवृत्ति, स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति और पारिवारिक वातावरण पर चमत्कारी प्रभाव पड़ता है।

इस प्रभाव को और अधिक प्रत्यक्ष, सशक्त बनाने के लिए यदि वह धूप देते समय किसी मन्त्र का जाप (उच्चारण)करता रहे तो निश्चित रूप से अलौकिक अनुभूति पाता है। आशय यह है कि चाहे जैसे भी हो, किसी न किसी रूप में घर में हवन (धूप-क्रिया) अवश्य होती रहनी चाहिए।

दीप

'दीपक' को भारतीय-संस्कृति में चेतना, श्री-समृद्धि, ज्ञान और जागरूकता का प्रतीक माना जाता है। इसी कारण जीवन के प्रत्येक आयाम में, प्रकारान्तर से दीपक का उपयोग किया जाता है। यहाँ तक कि मृत्योपरान्त व्यक्ति की समाधि पर भी दीपक जलाया जाता है।

देव-स्थान में, देव-पूजन में, किसी भी माँगलिक-कार्य के अवसर पर और अनुष्ठान के समय दीपक जलाना अनिवार्य कहा गया है। कहीं साधारण रूप में, कहीं कलश पर रखकर, कहीं दीवट पर, दीपक की उपयोगिता और महत्ता सर्वत्र स्वीकृत है।

साधना-भेद से, दीपक में प्रयुक्त होने वाला स्नेह (चिकनाई) क्या हो, इसके लिए किसी योग्य विद्वान से पूछ लेना चाहिए। सामान्यतः घी का दीपक सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से, आज के मिलावटी और महँगे युग में घी का दीपक जलाना सामान्य नागरिक के लिए असम्भव जैसा है। ऐसी स्थिति में यदि घी का प्रबन्ध नहीं हो सकता, तो मीठे तेल (तिल या गरी का तेल) का दीपक जलाया जा सकता है। सरसों का तेल भी दीपक में प्रयुक्त होता है। नियमानुसार घी (गौ-घृत की बात तो असम्भव है) का

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दीप जलायें। नहीं मिल रहा, या सामर्थ्य के बाहर है, तो अपने इष्ट-देवता से अपनी आर्थिक स्थिति और विवशता का निवेदन करते हुए क्षमा माँग लें और मीठे तेल का (या फिर सरसों के तेल का ही) जलायें। ध्यान रखने की बात यह है कि साधनाकाल में दीपक बुझना नहीं चाहिए, वह निरन्तर जलता रहे। विद्युत साधन घरेलू प्रकाश के लिए भले ही उपयोगी हैं, परन्तु पूजा-पाठ में इन्हें न लेकर, तेल या घी का दीपक ही जलाना चाहिए। अतः मुख्य पूजास्थल पर यथाशक्ति घी या तेल का ही दीपक जलना चाहिए।

अन्धकार तमोगुण का प्रतीक है। अन्धेरे में आसुरी-वृत्तियाँ प्रबल हो उठती हैं। वायव्य-दोष भी उत्पन्न होकर अनेक प्रकार के विघ्न उत्पन्न करते हैं। प्रकाश को ज्ञान का प्रतीक कहा गया है। प्रकाश अर्थात् ज्ञान के रहते भय-भ्रम की आशंका नहीं रहती। अतः दीपक जलाकर प्रकाश फैलाये रखने को शास्त्रीय मान्यता दी गई है। चाहे दिन का समय हो या रात का, पूजा साधना के स्थान पर मध्यम ज्योति का दीपक अवश्य जलाये रखना चाहिए। यहाँ एक वैज्ञानिक तथ्य भी द्योतक है—घी अथवा तेल का दीपक की रोशनी अपनी सौम्य-ज्योति से मस्तिष्क और हृदय को अद्भुत शान्ति और शुचिता प्रदान करती है, जबकि गैस-बत्ती, लालटेन, मशाल और चिमनी का प्रकाश आँखों को, साथ ही मन-मस्तिष्क को अप्रत्यक्ष-पीड़ा और अशान्ति व उत्तेजना से भर देता है।

नैवेद्य

किसी भी देवता की पूजा में धूप दीप के पश्चात् नैवेद्य—समर्पण का विधान, साधना का अनिवार्य अंग है। नैवेद्य को प्रचलित भाषा में 'भोग लगाना' अथवा 'प्रसाद अर्पित करना' कहते हैं। वैसे

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवतागण वस्तु को नहीं, भावना को देखते हैं, अतः भक्त द्वारा चाहे जो कुछ भी, श्रद्धा-भक्ति से, प्रेम-समादर से अर्पित किया जाये— वे स्वीकार कर लेते हैं। जहाँ तक देवी-साधना का सम्बन्ध है, देवी के सौम्य रूपों—दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, अन्नपूर्णा आदि की पूजा में पञ्चमेवा का नैवेद्य अर्पित करना चाहिए। यह भी न हो सके तो केवल गरी, मिश्री के टुकड़े अथवा बताशे ही रखे जा सकते हैं।

काली की पूजा में अनेक शाक्त-ग्रन्थ बलिदान का समर्थन करते हैं। किन्तु यह सर्वमान्य नियम नहीं है। मैं स्वयं भी उसे ग्रहणीय नहीं मानता। कालीजी चाहे जितनी भयानक रूप-रेखा वाली, उग्र और क्रुद्ध मुद्रा में हों, भक्त के लिए माता ही हैं।

मेरी धारणा है कि माँसाहारियों ने, स्वयं ही लालसा-पूर्ति (माँस-भक्षण के लिए) बलि-विधान बना दिया है, यह शास्त्रीय तथ्य नहीं है। काली जी रक्त-पान अथवा माँस-भक्षण से ही तृप्त-प्रसन्न हों, ऐसी बात नहीं है। सौम्य-देवी-स्वरूपों वाला नैवेद्य उन्हें भी अर्पित किया जा सकता है। अनेक प्राचीन साधकों ने इस विषय में मध्य-मार्ग की खोज की है। ये बलि तो सम्पादित करते हैं, परन्तु उसमें जीव-हत्या नहीं होती। बकरे की बलि न देकर, वे नारियल को काटते (फाड़ते) हुए काल्पनिक बलि-क्रिया सम्पन्न करते हैं। नारियल को मानवाकार मानकर वे उसकी बलि देते हैं, ताकि देवी प्रसन्न हो। मैं तो इस भावना का भी विरोधी हूँ। मेरा अपना मत है—नारियल को एक समूचे फल के रूप में देवी को अर्पित किया जाये, फिर उसे फोड़कर प्रसाद रूप में स्वयं को और परिवारी-जनों को दिया जाये। किन्तु यह भी अकाट्य नियम नहीं है। समस्त साधना एवं उपासना का बिन्दु है—श्रद्धा। श्रद्धा सहित, सर्वथा निर्दम्भ भाव से, स्वयं को देवी के चरणों में पूर्णतया समर्पित करके, भक्त चाहे जिस प्रकार से

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

उनकी पूजा करे, वे दया, ममता पूर्वक उसकी रक्षा करते हुए, वाञ्छित लक्ष्य तक पहुँचा देती हैं।

हवन

पूजा में धूप देना, देवता के प्रति एक प्रमुख उपचार क्रिया है। इसका मूल उद्देश्य होता है, देवता की प्रसन्नता हेतु एक उपादान प्रस्तुत करना—चन्दन, अक्षत, पुष्प की भाँति सुगन्धित वातावरण की सृष्टि के लिए धूप और प्रकाश उत्पन्न करने के लिए दीप का प्रयोग किया जाता है। कुछ विद्वान धूप को ही हवन का विकल्प माल लेते हैं। परन्तु वास्तव में धूप और हवन में मौलिक अन्तर है। धूप में देवता का स्मरण करते हुए सुगन्धित धूम्र की उत्पत्ति की जाती है, धूपबत्ती, अगरबत्ती अथवा अंगारों पर कोई सुगन्धित द्रव्य छिड़ककर धुआँ उत्पन्न किया जाता है और तदुपरान्त धूपदान उठाकर आरती की भाँति देवार्चन किया जाता है। हवन क्रिया नितान्त इसके भिन्न होती है। उसमें विधिवत् वेदी-निर्माण करके आम अथवा काष्ठ-विशेष की अग्नि में निर्धारित मन्त्रोच्चार करते हुए 'स्वाहा' शब्द के साथ हवन-सामग्री हव्य के रूप में डाली जाती है।

हवन-सामग्री का निर्माण उस देवता तथा उपासना से सम्बन्धित नियमों के अनुसार किया जाता है। प्रत्येक देवता के लिए हवन का मन्त्र भिन्न होता है। साथ ही, आहुतियों की संख्या भी अलग-अलग होती है। यों, बहुत से गृहस्थजन दैनिक पूजा में भी पूर्व व्यवस्था के अनुसार ११-२१-५१ आहुतियाँ देकर हवन करते रहते हैं। अतः जैसी सुविधा हो, जैसी व्यवस्था सम्भव हो, उसी के अनुसार उपासना-क्रिया में हवन का विधान करना चाहिए। किसी-किसी देवता के लिए हवन-सामग्री में दुर्लभ अथवा अति सामान्य वस्तुओं की

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

संयोजना का निर्देश रहता है। अतः इस विषय में अपने उपास्यदेव से सम्बन्धित पूजन-क्रिया को लेकर किसी स्थानीय पण्डित-पुरोहित अथवा अनुभवी गृहस्थ से समझ लेना चाहिए।

समिधा

प्रत्येक उपासना में हवन के लिए काष्ठ-विशेष का विधान होता है। यही नहीं कि लकड़ी के नाम पर कोई भी लकड़ी प्रयुक्त कर ली जाए। आम, गूलर (उदुम्बर), वट (बरगद), पलाश इत्यादि। (वृक्षों में लकड़ी प्रसंग भेद से भिन्न-भिन्न देवताओं के लिए किये जाने वाले हवन में प्रयुक्त होती है)। कब कहाँ क्या आवश्यक है और क्या निषिद्ध है, यह सब बातें किसी से समझ लेना चाहिए। दैनिक-पूजा में सामान्य अंगारों पर किये जाने वाले संक्षिप्त हवन (धूप-क्रिया) में भी यह बात ध्यान में रखने की है कि वे अंगारे कण्डा या बाँस, बबूल, पत्थर के कोयले, रासायनिक पदार्थ, कूड़ा-करकट, रबर, कागज, घास-फूँस या चमड़े को जलाकर न बनाये गये हों। यथासम्भव किसी फल वाले वृक्ष या आम आदि की लकड़ी का अँगार लेना चाहिए। घरों में प्रायः आम, नीम, महुआ, पलाश, बरगद की लकड़ी जलायी जाती है, इनके अँगारे लिये जायें। आम की सबसे उत्तम व्यवस्था तो यह है कि थोड़ी आम की लकड़ी लेकर रख ली जाये और [illegible] से आवश्यकतानुसार अँगारे बना लिये जायें। आम की लकड़ी का कोयला भी प्रयुक्त हो सकता है। पूजा के समय उसे घी या किसी भी साधन से जलाकर (मिट्टी के तेल से नहीं) अंगार बनाया जा सकता है। इस प्रकार हवन क्रिया के लिए समिधा रूप में प्रयुक्त की जाने वाली लकड़ी और हवन-सामग्री की समुचित व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दान दक्षिणा

भोजन-दान के लिए कोई विशेष प्रतिबन्ध नहीं है। तो भी इतना अवश्य ध्यान में रखें कि जो भी खाद्य पदार्थ दिया जाय वह स्वच्छ और शुद्ध होने के साथ सुस्वादु भी हो। पूड़ी, मिठाई, खीर जैसा कुछ भी भोजन दिया जा सकता है।

व्यवस्था कुछ ऐसी हो कि जिस समय आपकी हवन-क्रिया समाप्त प्रायः हो, रसोई में भोजन भी बन रहा हो, ताकि आप हवनोपरान्त ब्राह्मण को भोजन करा सकें।

भोजन कराते समय वाणी, व्यवहार पर सन्तुलन रखें। कटुता या क्रोध-शोक का आभास न होना चाहिए। भोजन करने वाले से विनम्रतापूर्वक, स्नेह-सम्मान के स्वर में पूछ लेना चाहिए कि उसे और क्या चाहिए। इस तरह प्रेम-श्रद्धापूर्वक उसे भोजन-तृप्ति देकर, पान इलायची जैसा कुछ दें फिर चलते समय उसे सामर्थ्य के अनुसार एक रुपये से लेकर ५१ या १०१ तक जो भी सम्भव हो, दक्षिणा दें और अपनी भूल-चूक के लिए क्षमा-याचना करते हुए कृपा कीं लालसा प्रकट करें। स्मरण रखने योग्य तथ्य है कि कोई उच्चरित्र और सौम्य ब्राह्मण भोजनोपरान्त सहज प्रसन्न मन से, प्रस्थान के समय कोई आशीर्वाद दे तो वह लगभग प्रत्यक्ष घटित हो जाता है। हालाँकि आज के युग में ऐसा धीरज-संयम सम्भव नहीं रहा, फिर भी साधकजन करते ही रहते हैं। मानसिक चिन्ता और चञ्चलता पर अंकुश हो जाये तो बस, सारी व्याधि दूर हो जाती है। पूजा पाठ, जप-तप, साधना तभी सार्थक होते हैं, जब साधक परम तन्मय भाव से उसमें लीन हो।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री गणेशाय नमः

पूजन विधि

आचमन, संकल्प, स्वस्तिवाचन का उच्चारण। कलश स्थापना, गणेश पूजन, नवग्रह पूजन, पंचलोकपाल पूजन, दश दिक्पाल पूजन षोडश मातृका पूजन, दुर्गा पूजन, षोडशोपचार विधि अनुसार देवी स्तुति, तंत्रोक्त देवी सूक्तम्, श्री दुर्गा अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्, देवी कवचम्, देवी अर्गला, देवी कीलकम्। यथाशक्ति नवार्ण मन्त्र का जाप। देवी मध्यम चरित्र प्रथम। देवी मध्यम चरित्र द्वितीय। देवी मध्यम चरित्र तृतीय। सिद्धकुंजिकास्तोत्रम्। यथाशक्ति नवार्ण मन्त्र का जाप, क्षमा प्रार्थना, देवी की आरती।

पूजन समाग्री—

रोली, कपूर, धूप बत्ती, ज्योति, लौंग, जौ, अक्षत, कलावा, इलायची, मिश्री, आम के पत्ते, पान के पत्ते, सुपारी, गंगाजल, पुष्प, पूजा की थाली, पूजा का नारियल, नवग्रह की थाली, रुई, घी, फल (नैवेद्य) भोग।

श्रृंगार—

यथाशक्ति वस्त्र (न हो सके तो वस्त्र के स्थान पर कलावा अर्पित किया जा सकता है) काजल, मेंहदी, चूड़ी, शीशा, कंघा, सुगन्धित तेल, सिन्दूर, मुद्रिका, यथासम्भव व शक्ति अनुसार आभूषण।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

शतचण्डी-पूजन-हवन-सामग्री

रोली, फूलमाला, मौली, कुशा, गंगाजल, धूपबत्ती, तुलसी, दूर्वा, केशर, बिल्वपत्र,कपूर, इलायची छोटी, रूई, लवंग, अबीर (गुलाल), जावित्री, बुक्का (अभ्रक), जायफल चार दाने, सिन्दूर, आठ नारियल, पाँच किलो चावल, पाँच गिरिगोला, २५ पान, ३ किलो सुपारी (बड़ी), लाल रंग, पीला रंग, हरा रंग, काला रंग, पेड़ा, सवा किलो बताशा, ऋतुफल, गोबर, गोमूत्र, पञ्च पल्लव (आम, गूलर, पाकर, वट, पीपल), सवा किलो दूध, पञ्चरत्न की पाँच पुड़िया,(सोना, हीरा, मोती, पुखराज, नीलम) २५० ग्राम दही, २५० ग्राम घृत, सवा किलो चीनी, सर्वौषधि, १२५ ग्राम शहद, मुरा, यज्ञोपवीत, जटामांसी, इतर, सवा किलो पञ्चमेवा, सवा किलो मिश्री, शिलाजीत, पुष्प छुट्टा , आमा हल्दी, दारु हल्दी, सटी (कचूर),चम्पा, नागर मोथा, मेहंदी पीसी, हल्दी पीसी, सुरुआरी का बीया, काली मिर्च, गुरुच, पीली सरसों, लाल चन्दन, अनार २, खोआ सवा किलो, तेल सुगन्धित सवा किलो, काला उड़द सवा किलो, पापड़ २५, काठ की चौकी ५, काठ का पाटा ३, लोहे की कँटिया ४, केले के खम्भे ८, कम्बल १, सूत की डोरी १० मीटर और

सप्तमृत्तिका—

(हाथी के स्थान की या घोड़े के स्थान की), वल्मीक (दीमक) की मिट्टी, नदी संगम की, तालाब की, गोशाला की, राजद्वार (चौराहा) की मिट्टी और

नवग्रह की लकड़ी—

मदार की १०८, पलाश की १०८, खैर की १०८, अपामार्ग की

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१०८, पीपल की १०८, गूलर की १०८, शमी की लकड़ी १०८, दूर्वा १०८, कुशा १०८, कलश ताँबे या पीतल का ५, चाँदी या ताँबे का कलश १,कमण्डलु १, थाली पीतल की १,थाली काँसे की १, कटोरा काँसे का बड़ा १, तश्तरी ५, काँसे की कटोरी २ (छायापात्र के लिए), पूर्णपात्र (भगोना) १, भगोना खीर पकाने का १, कलछुल पीतल का १, आरती दानी १, धूपदानी १, घंटा १, घड़ौल १, शंख १ , रेशमी साड़ी १ (दुर्गाजी के लिए), कब्जा १, चुनरी १, धोती ७, अँगोछा ७, सफेद कपड़ा ३ मीटर, लाल कपड़ा सवा मीटर, बन्दनवार १, पञ्चरंगा ध्वजा १, पञ्चरंगा चँदवा बड़ा १, सौभाग्य पिटारी १, शीशा १, कंघी १, दुर्गा की फोटो बड़ी १, दुर्गा की स्वर्ण की मूर्ति १,सोने की नथिया १, चाँदी का सिंहासन १, चाँदी की छतरी १, चाँदी का चँवर १, चाँदी की धूपदानी १, चाँदी की आरतीदानी १, चाँदी की तश्तरी १, चाँदी की कटोरी १, चाँदी का पञ्चपात्र १, चाँदी की आचमनी १, चाँदी का अर्घा १, चाँदी का तष्टा १, चाँदी का चौकोर पत्र (१६ अंगुल लम्बा-चौड़ा) और

वरण सामग्री—

धोती ११, दुपट्टा ११, अँगोछा ११, लोटा ११, गिलास ११, पञ्चपात्र ११,आचमनी ११, गोमुखी माला ११, यज्ञोपवीत ११, खड़ाऊँ ११, दुर्गा की पुस्तक ११, आसन ११ और

हवन सामग्री—

तिल २५ किलो, चावल १०-१२ किलो, यव ५ किलो, चीनी ३ किलो, घृत ५ किलो, पञ्चमेवा सवा किलो, कमलगट्टा सवा किलो, गुग्गुल एक किलो, भोजपत्र २५० ग्राम, चन्दन का चूरा २५० ग्राम, आम की लकड़ी ७०-८० किलो।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री दुर्गा हवन विधि

ततः पाठसमाप्तौ कृतायां पाठदशांशं हवनं तद्दशांश - तर्पणं तद्दशांश-मार्जनं मार्जनदशांश-ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्।

यजमानः आचम्य, प्राणानायम्य। 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा' इति आत्मानं हवनं-पूजन-सामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य। हस्ते अक्षत-पुष्पाणिगृहीत्वा, 'आ नो भद्रा०' 'समुखश्चै-कदन्तश्च०' इत्यादि-मङ्गलमन्त्रान् पठेत्।

ततो हस्ते जला-ऽक्षत-पुष्प-द्रव्याण्यादाय, संकल्पं कुर्यात्। तद्यथा देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्मा सपत्नीकोऽहं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्या - ऽऽयुरारोग्य - विपुल - पुत्र - पौत्रा - द्यनवच्छिन्न -सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मी-कीर्तिलाभ-शत्रुपराजय सदभीष्टसिद्धयर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताप्रीत्यर्थं कृतस्य शतचण्डी-(नवचण्डी-सहस्त्रचण्डी-लक्षचण्डी वा) पाठसांग तासिद्धयर्थं तद्दशांशहवनतद्दशांशतपर्ण-तद्दशांशमार्जन तद्दशांशब्राह्मणभोजनं च करिष्ये। तदङ्गत्वेन स्वस्ति-पुण्यहवाचनं-मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनमायुष्य-मन्त्रजपमाचार्यादि-वरणानि च करिष्ये। तत्राऽऽदौ निर्विघ्नता-सिद्धयर्थंगणेशाऽम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये।

तदनन्तरं गणेशपूजनादारम्भ पूर्णाहुतिपर्यन्तं सर्वं कार्यं पौराणिक-पद्धत्यनुसारेण कुर्यात्। प्रधानहवने तु सप्तशती-

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

प्रतिश्लोके स्वाहान्तहोमः चर्वाज्य द्रव्येण कुर्यादिति विशेषः। तर्पणे-'दुर्गां समर्पयामि। मार्जने-दुर्गां मार्जयामि'।

अत्र नवचण्ड्यां नवब्राह्मणाः। शतचण्ड्यां दश। सहस्रचण्ड्यां शतम्। लक्षचण्डयां सहस्रम्। केचिदत्र ग्रहज-पार्थमस्त्र-मृत्विजं वरयन्ति।

॥ इति नवचण्डी-शतचण्डी-सहस्रचण्डी-लक्षचण्डी-हवनप्रयोगः समाप्त॥

श्री दुर्गा हवन विधि

(हिन्दी अनुवाद)

दुर्गा हवन प्रयोग—दुर्गा पाठ की समाप्ति पर पाठ का दशांश हवन,उसका दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन करना चाहिए। जो इस प्रकार है—सर्वप्रथम यजमान को चाहिए कि वह स्नानादि से निवृत हो, पूर्वाभिमुख कुशासन पर बैठ आचमन, प्राणायाम कर '**ॐ पवित्रः पवित्रो वा०**' इस मन्त्र से अपने शरीर पर एवं हवन-सामग्री पर जल छिड़के तथा हाथ में अक्षत, पुष्प लेकर '**आ नो भद्राः०**' आदिमंगल मन्त्र एवं '**सुमुखश्चैकदन्तश्च०**' आदि मांगलिक श्लोकों का उच्चारण करें।

संकल्प—दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प और द्रव्य लेकर 'देशकालौ संकीर्त्य०' से 'गणेशाम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये' पर्यन्त संकल्प वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दें।

तत्पश्चात् गणपति पूजन से आरम्भ कर पूर्णाहुति पर्यन्त सभी कार्य पौराणिक पद्धति के अनुसार करे। दुर्गा का प्रधान हवन में चरु मिश्रित आज्य (घृत) द्वारा दुर्गासप्तशती के प्रत्येक श्लोकों द्वारा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

स्वाहान्त हवन करना चाहिए। इसी प्रकार प्रतिश्लोक के अन्त में दुग्ध-मिश्रित जल के कुशा द्वारा '**दुर्गा मार्जयामि**' कहकर तर्पण करे एवं अपने मस्तक पर '**दुर्गा मार्जयमि**' उच्चारण कर मार्जन करे।

ब्राह्मण संख्या—नवचण्डी में नव, शतचण्डी में दश, सहस्रचण्डी में शत (सौ) लक्षचण्डी में सहस्र (हजार) ब्राह्मणों का वरण करे। किन्हीं आचार्यों के मत में तो ग्रहों के जप के लिए एक ब्राह्मण का पृथक् वरण करने का विधान है।

श्री दुर्गा नवार्ण यन्त्र व मन्त्र
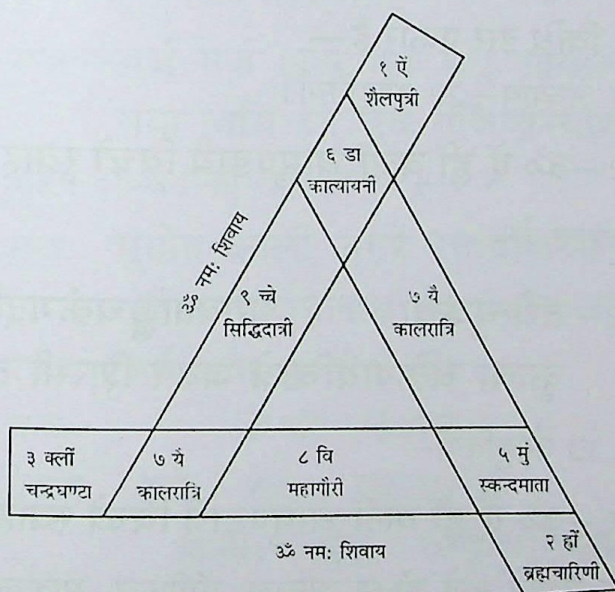
"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चेः"

(इस मन्त्र का पाँच लाख जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है।)

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री दुर्गासप्तशती हवन विधि

दुर्गा पाठ के अन्तिम दिन सप्तमी–अष्टमी को हवन करें। प्रत्येक अध्याय के लिए 31 आहुतियाँ 'ॐऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा' से देनी है।

छह विशेष आहुतियाँ देनी हैं।

प्रथम अध्याय के अन्त में जायफल से, तीसरे अध्याय की शहद से, आठवें अध्याय की लाल चन्दन से, ग्यारहवें अध्याय के प्रारम्भ में खीर से, अन्त में काली मिर्च से, बारहवें अध्याय की नारियल अर्थात् कटे गोले से।

हवन विधि इस प्रकार है—

प्रथम अध्याय—20 आहुतियाँ।

मन्त्रः—**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा।**

जायफल से—

मन्त्रः—**तथेत्युक्त्वा भगवताङ्खचक्रंगदांभृता।**
कृत्वा चक्रेणवैच्छिन्ने जघने शिरसी तयोः॥

पुनः 10 आहुतियाँ—

मन्त्रः—**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा।**

इसके पश्चात खड़े होकर ताम्बूल, पूँगीफल, साकल्य आदि लेकर आहुति दें।

मन्त्रः—**ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽबालिके नमान्नयति कश्चेन।**
ससस्त्यश्वक सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अब बैठकर पाँच आहुतियाँ घी से दें।

1. ॐ प्राणाय स्वाहा। 2. ॐ अपानाय स्वाहा।

3. ॐ समानाय स्वाहा। 4. ॐ उदानाय स्वाहा।

5. ॐ व्यानाय स्वाहा।

इसके पश्चात् अग्नि का सिंचन जल से अवश्य करें।

मन्त्रः—**आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः।**
शान्ततमास्तास्ते कृष्णवन्तु भेषजम्॥

इस प्रकार तेरह अध्यायों की आहुतियाँ देनी हैं। विशेष आहुतियाँ मन्त्रों द्वारा इस प्रकार देनी हैं।

तृतीय अध्याय की शहद से—

मन्त्रः—**गर्ज-गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिवाम्यहम्।**
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः॥

अष्टम अध्याय की लाल चन्दन से—

मन्त्रः—**मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।**
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्॥

एकादश अध्याय के आरम्भ में खीर से—

मन्त्रः— **ॐ ऋषि उवाच॥ १॥**

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्ट लाभाद्
विकाशिवक्त्राब्ज विकाशिताशाः॥ २॥
देवि! प्रपन्नर्तिहरे! प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री दुर्गासप्तशती हवन विधि

दुर्गा पाठ के अन्तिम दिन सप्तमी-अष्टमी को हवन करें। प्रत्येक अध्याय के लिए 31 आहुतियाँ 'ॐऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा' से देनी है।

छह विशेष आहुतियाँ देनी हैं।

प्रथम अध्याय के अन्त में जायफल से, तीसरे अध्याय की शहद से, आठवें अध्याय की लाल चन्दन से, ग्यारहवें अध्याय के प्रारम्भ में खीर से, अन्त में काली मिर्च से, बारहवें अध्याय की नारियल अर्थात् कटे गोले से।

हवन विधि इस प्रकार है—

प्रथम अध्याय—20 आहुतियाँ।

मन्त्रः—**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा।**

जायफल से—

मन्त्रः—**तथेत्युक्त्वा भगवताङ्खचक्रंगदांभृता।**
कृत्वा चक्रेणवैच्छिन्ने जघने शिरसी तयोः॥

पुनः 10 आहुतियाँ—

मन्त्रः—**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा।**

इसके पश्चात खड़े होकर ताम्बूल, पूँगीफल, साकल्य आदि लेकर आहुति दें।

मन्त्रः—**ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽबालिके नमान्नयति कश्चेन।**
ससस्त्यश्वक सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अब बैठकर पाँच आहुतियाँ घी से दें।

1. ॐ प्राणाय स्वाहा। 2. ॐ अपानाय स्वाहा।

3. ॐ समानाय स्वाहा। 4. ॐ उदानाय स्वाहा।

5. ॐ व्यानाय स्वाहा।

इसके पश्चात् अग्नि का सिंचन जल से अवश्य करें।

मन्त्रः—**आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः।**
शान्ततमास्तास्ते कृष्णवन्तु भेषजम्॥

इस प्रकार तेरह अध्यायों की आहुतियाँ देनी हैं। विशेष आहुतियाँ मन्त्रों द्वारा इस प्रकार देनी हैं।

तृतीय अध्याय की शहद से—

मन्त्रः—**गर्ज-गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिवाम्यहम्।**
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः॥

अष्टम अध्याय की लाल चन्दन से—

मन्त्रः—**मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।**
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्॥

एकादश अध्याय के आरम्भ में खीर से—

मन्त्रः— **ॐ ऋषि उवाच॥ १॥**

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्ट लाभाद्
विकाशिवक्त्राब्ज विकाशिताशाः॥ २॥
देवि! प्रपन्नर्तिहरे! प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥३॥
आधारभूता जगतस्त्वमेका
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये ॥४॥
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विशवस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवी समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥५॥

एकादश अध्याय के अन्त में काली मिर्च से—

मन्त्रः—**सर्वबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥**

द्वादश अध्याय की गोले से—

मन्त्रः—**बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे।
सर्व ममैतच्चरितमुच्चार्य श्राव्यमेव च ॥**

हवन के पश्चात् दशांश तर्पण-मार्जन करे।

एक बड़े पात्र में दूध, पुष्प, गंगाजल, दूर्वा और जल भरकर नीचे लिखे मन्त्र से ऊपर मार्जन-तर्पण पात्र में ही करें।

ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्री दुर्गा देवीं तर्पयामि।

दूर्वा से अपने सिर पर आगे लिखे मन्त्र से उसी पात्र का जल छिड़के।

ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्री दुर्गा देवीं मार्जयामि।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पूर्ण आहुति

नारियल में छिद्र कर घी भरकर लाल वस्त्र लपेटकर उस पर पान, सुपारी आदि रखकर (**ॐ पूर्णाहुत्ये नमः**) इस मन्त्र से पूजन कर खड़े होकर आगे लिखे मन्त्र से अग्नि में छोड़ें।

ॐ मूर्द्धानं दिवाऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम्। कपिश्ठं सम्राजमति थिंजनानामासन्नापात्रंजनयन्त देवा स्वाहा॥

ॐ पूर्णादर्व्विपरापतसुपूर्णा पुनरापत। व्वस्ने वव्वि कीणावहाइष मूर्ज्जश्ठंशतक्रतो स्वाहा॥

वसोर्धारा

पूर्णाहुति के पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र से वसोर्धारा करे। घृत की धारा छोड़े।

ॐ व्वसो पवित्रमसिशतधारम् व्वसो पवित्रेमसिसहस्त्र-धारम् देवस्त्या सविता पुनातुव्वसो पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।

पूर्णपात्र दान

एक पात्र में चावल भरकर संकल्प करें। अधेत्यादि देश काल का उच्चारण कर ब्रह्मा को दान दे।

अस्मिन श्री दुर्गा हवन कर्मणि श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती दुर्गा देवी प्रीत्यर्थमिदं पूर्णपात्रं अमुकगोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पुष्पांजलि मन्त्र

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्या सन्ति देवा।

प्रदक्षिणा

पुष्पांजलि के पश्चात् मन्त्र द्वारा परिक्रमा करना।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे॥

तिलक विधि

स्रुवे से हवन की भस्म लेकर अनामिका व अँगूठे से यजमान के अथवा (अपने अंगों में निम्नलिखित मन्त्र द्वारा लगाना।)

मस्तक में ॐ त्र्यायुष जमदग्नेः।
कंठ में ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
दाहिने कंधे में ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्।
हृदय में ॐ तन्नोअस्तु त्र्यायुषम्।

अभिषेक

कलश से जल निकाल आम्रपल्लव से सकुटुम्ब यजमान के ऊपर निम्नलिखित मन्त्र से अभिषेक करे।

ॐ द्यौःशान्ति रन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवीशान्ति राप शान्तिरोषधय शान्ति-व्वनस्पतेय शान्ति विश्वेदेवा शान्ति-र्ब्रह्मशांति सर्वःशान्ति शातिरेव शान्ति सामाशान्तिरेधि। शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

आचार्य दक्षिणा संकल्प

देशकाल का उच्चारण करके—

कृते हवन कर्मणि सांगता सिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।

विसर्जन

हाथ में अक्षत लेकर ग्रह वेदी पर निम्न मन्त्र से चढ़ाना—

ॐ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे,
उपप्प्रयन्तु मरुतः सु दानवऽइन्द्रंप्राशूर्भ वा स चा।
ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्,
इष्टकामसमिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।
आवाहितदेवताः स्वस्थानेगच्छत।

प्रार्थना

फिर यजमान हाथ जोड़कर प्रार्थना करें—

ॐ रूपं देहि धनं देहि यशो देहि द्विषो जहि।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे।।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।

ॐ प्रमादात्कुर्वता कर्म प्रच्यवेतांध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

आशीर्वाद मन्त्र

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्ति नः पूषाविश्ववेदा।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यौंऽअरिष्ट नेमि स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

यजमान के मस्तक पर (**ॐ स्वस्ति न**) पूर्व लिखित मन्त्र से तिलक करे और हाथ में अक्षत और पुष्कल लेकर आशीर्वाद दे।

ॐश्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पव मानं महीयते।
धान्यंधनंपशुं बहुपुत्रलाभंशतसम्वत्सरं दीर्घमायुः ॥

विशेष आहुतियों की सामग्री

प्रथम अध्याय—छुट्टापान, घी सहित शाकल्य, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 2 छोटी इलायची, गूगल, शहद।

द्वितीय अध्याय—छुट्टापान, शाकल्य, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 2 इलायची, गूगल विशेष।

तृतीय अध्याय—छुट्टापान, शाकल्य, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 2 इलायची, गूगल, शहद।

चतुर्थ अध्याय—छुट्टापान, शाकल्य, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 2 इलायची, गूगल, मिश्री या खीर विशेष।

पंचम अध्याय—छुट्टापान, शाकल्य, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 2 इलायची, गूगल कपूर व ऋतुफल आवश्यक।

षष्ठम अध्याय—छुट्टापान, शाकल्य, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 2 इलायची, गूगल, भोजपत्र इसमें विशेष है।

सप्तम अध्याय—छुट्टापान, शाकल्य,1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 2 इलायची, 2 जायफल विशेष।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अष्टम अध्याय—छुट्टापान, शाकल्य, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 2 इलायची, गूगल लाल चन्दन विशेष।

नवम अध्याय—छुट्टापान, शाकल्य, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 2 छोटी इलायची, गूगल, (विशेष बेलफल)।

दशम अध्याय—छुट्टापान, शाकल्य, 1कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 2 छोटी इलायची, गूगल (विशेष बेलफल)।

एकादश अध्याय—छुट्टापान, शाकल्य, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 2 छोटी इलायची, गूगल (विशेष पुष्प, पायस)।

द्वादश अध्याय—छुट्टापान, शाकल्य, 1 कमलगट्टा, सुपारी, 2 लौंग, 2 छोटी इलायची, गूगल (ऋतुफल केला विशेष)।

त्रयोदश अध्याय—छुट्टापान, शाकल्य, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 2 छोटी इलायची, गूगल (विशेष फल-फूल) है।

विशेष—शहद, गिलोय, काली मिर्च, पीली सरसों।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

तान्त्रिक मन्त्रों सहित

श्री दुर्गासप्तशती हवन विधान

नवरात्रों में अष्टमी की रात्रि को दुर्गा सप्तशती द्वारा हवन किया जाता है। गणेश स्मरण, संकल्प, गणपति पूजन, मातृका पूजन, नवग्रह पूजन, रुद्र पूजन, कलश-पूजन विधिपूर्वक सम्पन्न करने के पश्चात् भगवती की पूजा करके देवी कवच, अर्गला, कीलक तथा देवी सूक्त का पाठ करें।

अध्याय के अन्त में

इति शब्दो हरेल्लक्ष्मीवध कुलविनाशकः। अध्यायो हरेत् प्राणान मार्कण्डेयादिकं वदेत्॥

अध्याय के अन्त में इति बोलने से लक्ष्मी का नाश, वध बोलने से कुल का नाश और अध्याय बोलने से प्राणों का नाश होता है। इसलिए आचमनी में जल लेकर इस प्रकार बोलकर जल छोड़ दें।

ॐ जय जय मार्कण्डेयपुराण सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सत्याः सन्तु मम (यजमानस्य वा) कामाः श्री।

पहले अध्याय के अन्त में

उल्टे साबुत पान को शाकल्य में भिगोर 1 कमल गट्टा, 1 सुपारी, 2. लौंग, 1 छोटी इलायची, शहद ये सब चीजें श्रुचि में रखकर खड़े होकर बोलें—

***वैदिक तान्त्रिक आहुति*—ॐ प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन रसम्यत्यश्वकः शुभद्रिका कांपीलवासिनी ॐस्वाहा।**

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

इस निम्न मन्त्र द्वारा अग्नि में शाकल्य छोड़ें—

तान्त्रिक मन्त्र—ॐसांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै ऐं बीजाअधिष्टात्र्यै महाकालिकायै नमः अहमाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।

बाद में निम्न मन्त्र से पाँच बार घी छोड़ें—

ॐ घृत घृतापावनः पिवतवसा वसापावान, पिवता-निरक्षय हविरसिंह स्वाहा। दिशः प्रदिशाऽआदिशोत्विद्दिशो दिगभ्यां: स्वाहा।

दूसरे अध्याय के अन्त में

सामग्री तथा प्रथम अध्याययुक्त वैदिक आहुति पूर्ववत्।

तान्त्रिक आहुति मन्त्र—ह्रीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै श्री महालक्ष्मयै अष्टाविंशतिवपी-र्त्मिकायै लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै नमः अहमाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।

तीसरे अध्याय के अन्त में

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ़—मन्त्र 38 में शहद की आहुति दें अध्यायान्त में सामग्री पूर्ववत् ही श्रुचि में रखकर निम्न मन्त्रों से आहुति दें, वैदिक मन्त्र पूर्ववत् हैं।

तान्त्रिक मन्त्र—ॐ जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्ति-कायै सपरिवारायै लक्ष्मीबीजधिष्ठात्र्यै नमः अहमाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।

चौथे अध्याय के अन्त में

मन्त्र 24 ''**शलेन पाहिनी देवि**'' से मन्त्र 27 तक की आहुति नहीं देनी चाहिए। अतः मन्त्र बोलकर आधे मिनट ठहरकर ''**ॐ**

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

नमश्चण्डिकायै स्वाहा'' से आहुति देनी चाहिये। अन्त में प्रथम अध्यायवत् सामग्रीविशेष पायस व मिश्री से आहुति देनी चाहिए।

***तान्त्रिक आहुति मन्त्र*—ह्रीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्री महालक्ष्म्यै अष्टाविंशतिवर्णात्मिकायै लक्ष्मीबीजाधिष्ठायत्र्यै नमः अहमाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।**

वैदिक मन्त्र—ॐप्राणाय स्वाहा... इत्यादि पूर्ववत् अर्थात् प्रथम अध्याय के मन्त्र बोलकर आहुति दें और घी की पाँच आहुति दें।

पाँचवे अध्याय के अन्त में

आहुति सामग्री—1 पान, 1 शाकल्य, 1 कमल गट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 1 इलायची, गूगल, कपूर, पुष्प तथा ऋतुफल।

***तान्त्रिक आहुति मन्त्र*—क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनाये धूम्रक्ष्यै विष्णुमायादि चतुर्विंद्देवताभ्यो नमः अहमाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।** (वैदिक मन्त्र पूर्ववत्)

छठे अध्याय के अन्त में

शेष सामग्री पूर्ववत्। विशेष भोजपत्र।

***तान्त्रिक आहुति मन्त्र*—ॐ जयंती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहानायै धूम्रक्ष्यैनमः अहमाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।** (वैदिक मन्त्र पूर्ववत्)

सातवें अध्याय के अन्त में

शेष सामग्री पूर्ववत्। विशेष दो जायफल

***तान्त्रिक आहुति मन्त्र*—ॐ जयंती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै कालीचामुंडा देव्यै**

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै नमः अहमाहुतिं समर्पयामि स्वाहा। (वैदिक मन्त्र पूर्ववत्)

आठवें अध्याय के अन्त में

शेष सामग्री पूर्ववत्। विशेष लाल चन्दन

***तान्त्रिक आहुति मन्त्र*—ॐ जयंती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै रक्ताक्ष्यै अष्टामातृका-सहितायै नमः अहमाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।** (वैदिक मन्त्र पूर्ववत्)

नौवें अध्याय के अन्त में

सामग्री पूर्ववर्त्। विशेष विल्वफल व मैनफल।

***तान्त्रिक आहुति मन्त्र*—क्लीं जयंती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै भैरवायै तारादेव्यै नमः अहमाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।** (वैदिक मन्त्र पूर्ववत्)

दसवें अध्याय के अन्त में

सामग्री पूर्ववत्। विशेष विल्वफल व मैनफल। तान्त्रिक तथा वेदमन्त्र आहुति के लिए नवम् अध्याय के समान ही है।

ग्यारहवें अध्याय के अन्त में

यहाँ खीर का हवन होता है।

1. **रोगान शेषानपहसि.**—मन्त्र 29 से गिलोय की आहुति दे दें।
2. **सर्वबाधाप्रशमनम्**—मन्त्र 39 से सफेद सरसों या काली मिर्च की आहुति दें।
3. **भक्षयान्त्याश्च**—मन्त्र 44 से अनार की कली की आहुति दें।
4. **ततो माँ देवता**—मन्त्र 44 से अनार की कली की आहुति दें।
5. **शाकाम्भरीति**—मन्त्र 49 से बथुवा या पालक के शाक की आहुति दें।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अध्याय के अन्त में सामग्री पूर्ववत्। विशेष पायस (खीर) व पुष्प।

***तान्त्रिक आहुति मन्त्र*—क्लीं जयंती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी-बीजाधिष्ठात्र्यै गरुड़वाहिनी नारायणी देव्यै नमः अहमाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।** (वैदिक मन्त्र पूर्ववत्)

बारहवें अध्याय के अन्त में

"बलिप्रदायने पूज्या" मन्त्र 10 से कूष्मांड की अथवा नारियल को बाँधकर उसकी बलि रखें।

अध्यायान्त में—सामग्री पूर्ववत्, विशेष ऋतुफल केला।

***तान्त्रिक आहुति मन्त्र*—क्लीं जयंती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्री विद्यायै नमः अहमाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।** (वैदिक मन्त्र पूर्ववत्)

तेरहवें अध्याय के अन्त में

सामग्री प्रथम अध्यायवत्। **विशेष**—एक फल व फूल।

***तान्त्रिक आहुति मन्त्र*—क्लीं जयंती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्री विद्यायै नमः अहमाहुतिं समर्पयामि स्वाहा।**

***वैदिक मन्त्र*—ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन ससस्त्यश्वकःशुभद्रिकां कांपीलवासिनी ॐ स्वाहा।**

ॐ घृतापावन पिवतवसां वसांपावानः पिवतान्तरिक्षस्य हविरसिंह स्वाहा। दिशः प्रदिशःऽआदिशोत्विद्दिशो दिगभ्यः स्वाहा।

पश्चात् श्रीसूक्त हवन, स्विष्टिकृत होम, दिक्पाल पूजा, भैरव

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पूजा बलिदान कराने के पश्चात्, ज्वारों की पूजा करके छेदन ले आवे। पीछे पूर्णाहुति करके यज्ञ विभूति ले और देवी जी के सामने आरती करें। पुष्पांजलि में पुष्प अक्षत ज्वारे भी रखें। बाद में यजमान का अभिषेक तिलक, रक्षा आदि कार्य करें। तत्पश्चात् आरती करके बटुक और कन्याओं के तिलकादि करके उन्हें भोजन करा दें।

नवरात्रों में कन्या-पूजन

श्री दुर्गाजी के भक्त को देवी जी की अतिशय प्रसन्नता के लिये नवरात्रि में अष्टमी अथवा नवमी को कुमारी कन्याओं को अवश्य खिलाना चाहिये। इन कुमारियों की संख्या ९ हो तो अत्युत्तम, लेकिन शक्ति न होने पर दो ही सही। किन्तु भोजन करने वाली कन्यायें २ वर्ष से कम तथा १० वर्ष से अधिक आयु की नहीं होनी चाहिये। दो वर्ष की कन्या कुमारी, तीन वर्ष की कन्या त्रिमूर्ति, चार वर्ष की कल्याणी, पाँच वर्ष की रोहिणी, छः वर्ष की कालिका, सात वर्ष की चण्डिका, आठ वर्ष की शाम्भवी, नौ वर्ष की दुर्गा तथा दस वर्ष की कन्या सुभद्रा के समान मानी जाती है।

क्रमशः इन सब कुमारियों के नमस्कार मंत्र ये हैं—

१. कुमार्य्यै नमः २. त्रिमूर्त्यै नमः ३. कल्याण्यै नमः ४. रोहिण्यै नमः ५. कालिकायै नमः ६. चण्डिकायै नमः ७. शाम्भव्यै नमः ८. दुर्गायै नमः ९. सुभद्रायै नमः। कुमारियों में हीनांगी, अधिकांगी, कुरूपा न होनी चाहिये। पूजन करने के बाद जब कुमारी देवी भोजन कर लें तो उनसे अपने सिर पर अक्षत छुड़वायें और उन्हें दक्षिणा दें। इस तरह करने पर महामाया भगवती अत्यन्त प्रसन्न होकर मनोरथ पूर्ण कर देती हैं।

॥ जय माता की॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

नवचण्डी के नौ स्वरूपों का वर्णन

१. शैलपुत्री—शैल अर्थात् पर्वत। पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के रूप में शैलपुत्री मानी जाती है। शिला अथवा पर्वतखण्ड दृढ़ता का प्रतीक है। शैलपुत्री गौरी के अर्थ में भी '**बरौं त शम्भु नतो रहौं कुवारी**' के संकल्प बल की ही विशेषता है। दृढ़ संकल्पशक्ति, लेकिन जड़वत शिला नहीं। मूढ़ हठ या दुराग्रह नहीं। ब्रह्म-जिज्ञासु, सत्यान्वेषी संकल्पक बल। यही बल अथवा शक्ति जीवन में पूर्ण सफलता की कुंजी है।

२. ब्रह्मचारिणी—ब्रह्माजी द्वारा उत्पन्न सृष्टि का संचालन करने वाली माता। इसलिए ब्रह्मा को प्रिय, ज्ञान का भण्डार। इनका पूजन व जप इत्यादि ब्रह्म-मंत्र द्वारा ही किया जाता है। प्रिय आभूषण रूद्राक्ष है। दूसरे अर्थों में—"**ब्रह्मचारयितुं शीलं यस्याः सा ब्रह्मचारिणीः**" सच्चिदानन्दमय ब्रह्मस्वरूप की प्राप्ति करना जिनका स्वभाव है, वह ब्रह्मचारिणी है।

३. चन्द्रघण्टा—चंद्र-घंटेति अर्थात् शीतल ज्ञान प्रकाश। ज्ञान विनयशील है, अतः इनका प्रभाव चद्रमा की किरणों के समान शीतल व सौम्य है। सुन्दर, मनभावन मीठे बोल। क्रोध को शान्त करने वाली, हर संकट के बचाने वाली माता चन्द्रघण्टा का स्थान कांचीपुरम् (कर्नाटक) राज्य में है।

४. कूष्माण्डा—'कूष्माण्डा' चौथा नाम 'कुंभमाण्ड' अर्थात् पिण्ड में ब्रह्माण्ड के त्रिविध ताप का अनुभव। संसार की समस्याओं का ज्ञान। पिण्ड में ब्रह्माण्ड का जागतिक दर्शन।

वास्तव में प्राचीन ऋषि-मुनियों व पौराणिक-ग्रन्थों का विश्लेषण "कूष्माण्डा" के ही तथ्यों पर आधारित है। श्री योगवाशिष्ठ में स्पष्ट लिखा है कि जो कुछ शरीर (पिण्ड) में है, वही प्रक्रिया पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। इनकी पूजा-अर्चना त्रिविध-ताप का निवारण करने में समर्थ हो जाती है। भीमा-पर्वत पर इनका डेरा बताया गया है।

५. स्कन्दमाता—इनकी कृपा से मूढ़ भी ज्ञानी हो जाता है। "कालीदास" द्वारा रचित रघुवंशमहाकाव्य तथा मेघदूत रचनाएँ स्कन्दमाता की कृपा से सम्भव हुई। कई पहाड़ों पर विराजमान होकर सांसारिक

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जीवों में नवचेतना उत्पन्न करने वाली पाँचवी मूर्ति है स्कन्द मातेति (सनतकुमार की माता) विद्वानों तथा सेवकों को पैदा करने वाली। चेतना निर्माण करने वाली।

६. कात्यायिनी—कात्यायन ऋषि के आश्रम में रहकर साधन व प्रयोग करने के कारण इन्हें यह नाम दिया गया। इनका गुण शोधकार्य है। इस वैज्ञानिक युग में कात्यायिनी शक्ति का महत्त्व सर्वाधिक हो जाता है। शिक्षण व शोध में इनकी कृपा के बिना, सब कार्य अधूरे हैं। यह वैद्यनाथ नामक स्थान पर प्रकट होकर विख्यात हुईं।

७. कालरात्रि—अन्धकारमय स्थितियों का विनाश करने वाली दुर्गाजी की सातवीं मूर्ति का नाम कालरात्रि है अर्थात् रात्रि का काल! अंधकार की दुश्मन कौन? स्वयं प्रकाश या रौशनी! प्रकाश अपने को प्रचारित नहीं करता, उसका तेज स्वत: ही संसार में दीप्तिमान होता है। भय का नाश करने वाली, काल से रक्षा करने वाला कालरात्रि का सिद्धपीठ कलकत्ता में है।

८. महागौरी—गौरी के तीन रूप हैं—पहला महागौरी-शैली पुत्री, माता बनकर महागौरी बनी। दूसरा राज्य-कन्या होकर पर्णकुटी का वरण कर अपने को सर्वहित के लिए भस्मीभूत कर शिव की अर्धांगिनी बनी, फिर कार्तिक और गणपति के रूप में समाज के समायोजक और नायक को जन्म दिया। इन सब गुणों से सम्पन्न लोकशक्ति और नारी शक्ति 'सर्वरक्षा करण' होगी। जो सबकी रक्षा करने वाला माता है। वह कुपुत्र का भी वध करेगी क्या? श्री दुर्गाजी की आठवीं मूर्ति "महागौरी" का प्रसिद्ध पीठ हरिद्वार के समीप कनखल नामक स्थान पर है। तपस्या द्वारा महान् गौरवर्ण प्राप्त करने से 'महागौरी' कहलाई।

९. सिद्धिदात्री—श्री दुर्गाजी की नौंवी मूर्ति सर्व सिद्धियों को प्रदान करने में सक्षम है। इसीलिए "सिद्धिदात्री" नाम से जानी गई। सेवक पर इनकी कृपा होते ही उसके कठिनतम कार्य भी चुटकी बजाते सिद्ध हो जाते हैं। हिमाचल के नन्दापर्वत पर इनका प्रसिद्ध तीर्थ विराजमान है।

देवी कवच में वर्णन किए हुए यह नौ रूप नवदुर्गा कहे गए हैं। इनकी उपासना अभीष्ट फल देने वाली है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

शक्ति पूजा के विविध प्रकार

दुर्गा सप्तशती पाठ और शतचण्डी-विधान

'फलौ चण्डीविनायकौ' इस शास्त्र वचनानुसार कलियुग में भगवती चण्डी का दुर्गादेवी की आराधना सद्यः सिद्धिकरी बतायी गई है। भगवती की यह उपासना उसके मूल मन्त्र (नवार्ण मन्त्र) के जप तथा देवी की वांगमयी मूर्ति 'सप्तशती' या देवी महात्म्य, पाठ, हवनादि द्वारा करने पर शीघ्र और निश्चित रूप में सिद्धिप्रद होती है। यह देवी-महात्म्य मार्कण्डेय पुराण का वह अंश है, जिसे सुमेधा नामक मुनि ने दया परवश होकर राजा सुरथ और समाधि वैश्य को सुनाया था।

वस्तुत: ७०० श्लोकों का यह देवी महात्म्य अत्यन्त सिद्धिमय है। ये साधारण श्लोक नहीं, अपितु मन्त्र हैं, जिनकी विधिपूर्वक साधना करने पर भगवती साधक के सभी ऐहलौकिक और पारलौकिक अभीष्ट पूर्ण कर देती है।

जिज्ञासा होगी कि यह साधना कैसे की जाए ? उत्तर यही है कि प्रस्तुत साधना का प्रकार जानिये, जो छोटे से छोटा भी है और बड़े से बड़ा भी। जिसकी जैसी शक्ति हो, वह किसी प्रकार की कृपणता न करते हुए कोई भी प्रकार अपनाकर साधना करें तो निश्चय ही सिद्धि प्राप्ति होती है।

लघुसप्तशती पाठ

यदि पूरे ७०० श्लोकों का पाठ करने की शक्ति या समय न हो तो इसी देवी महात्म्य के मात्र एक चरित्र का पाठ करने पर भी वही

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

फल मिलता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में तीन चरित्र हैं—प्रथम, मध्यम और उत्तर। प्रथम अध्याय को 'प्रथम चरित्र', द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ अध्याय को 'मध्यम चरित्र' तथा पंचम से त्रयोदश तक के अध्यायों को 'उत्तर चरित्र' कहा गया है। साधक की अशक्त दशा में तीनों में से मध्यम चरित्र के ही पाठ का विधान है।

इस मध्यम चरित्र (२, ३, ४ अध्यायों) में कुल १५५ मन्त्र हैं, जिनमें पूरे अनुष्टुप् आदि छन्दों के १४४ श्लोक हैं, २ आधे (अनुष्टुप) श्लोक और ९ मात्र 'उवाच' (इतना मात्र) हैं। इस लघु पाठ विधि में भी सम्प्रदायानुसार आदि-अन्त में यथाशक्ति १०, २८ या १०८ बार मूलमन्त्र (नवार्ण मन्त्र) का जप अवश्य करणीय है।

यहाँ यह भी ध्यान रखने की बात है कि यह सप्तशती अनुष्ठान सकाम भी होता है और निष्काम भी। देवी महात्म्य के ही उपासक राजा सुरथ ने राज्य प्राप्ति के लिए इसका अनुष्ठान किया, जबकि दूसरे उपासक समाधि वैश्य ने ज्ञान प्राप्ति के लिए किया। भगवती ने भी अन्त में राजा को राज्य प्राप्ति का वर दिया ही है। फिर भी निष्काम भाव से 'भगवती प्रीत्यर्थ' संकल्प के साथ किया गया यह अनुष्ठान सर्वोत्कृष्ट है, किन्तु जो सकाम भाव से इसका अनुष्ठान करते हैं, उनका यह अनुष्ठान भी 'अप्रशस्त' नहीं कहा जा सकता। कारण, इस प्रकार सकाम अनुष्ठान करते-करते एक समय ऐसा आयेगा जब साधक को भी ये सारी कामनाएँ तुच्छ लगने लगेंगी और फिर वह निष्काम अनुष्ठान कर आत्मज्ञान प्राप्त कर सकेगा। अन्ततः शास्त्रकारों ने सकाम अनुष्ठान का विधान 'सितावेष्टित कटुकौषधवत्' (चीनी में लिपटी कड़वी औषधि की तरह) ही माना है। यथासम्भव साधक के लिए भगवत-प्राप्ति भगवद्दर्शन और भगवत-प्रीति जैसी ऊँची कामनाओं से ही अनुष्ठानों का सम्पादन करना श्रेयष्कर होता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सम्पुटरहित मूलपाठ

सप्तशती का केवल नित्य का मूल पाठ करना हो तो प्रथमत: आचमन–प्राणायाम करके संकल्पपूर्वक भगवती के श्रीविग्रह (उनकी मूर्ति) का यथालब्ध उपचारों से पूजन करना चाहिए। तदन्तर निम्नलिखित संकल्प करके पाठ प्रारम्भ करना चाहिए।

संकल्प

ओं विष्णुर्विष्णुर्विष्णु श्रीमद्‌भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्रीब्रह्मणोऽहनि द्वितीयेऽपरार्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवारा राहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमें युगे कलि प्रथमचरणे भूलोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भारतखण्डे आर्यावर्तैक देशे...... क्षेत्रे...... विक्रमशके बौद्धावतारे संवत्सरे श्री सूर्ये...... अयने...... ऋतौमहामांगल्यप्रदे मासोत्तमे...... मासे...... पक्षे...... तिथौ...... वासरे...... नक्षत्रे...... राशिस्थिते चन्द्र...... राशिस्थिते श्रीसूर्य...... राशिस्थिते देवगुरौ, शेषषु ग्रहेषु यथा यथाराशिस्थानास्थतेषु सत्सु एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायाँ शुभपुण्यतिथौ...... गोत्रा...... शर्मा (वर्मा, गुप्ता) अहं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती– त्रिगुणात्मिका पराम्बा श्री दुर्गा देवी प्रीत्यर्थम् (यदि सकाम अनुष्ठान करना हो तो) मम इह जन्मनि जन्मान्तरे च श्रीदुर्गादेवीप्रीतिद्वारा सर्वपापक्षयपूर्वकदीर्घायु विपुलधनधान्य पुत्रपौत्राद्य – नवच्छिन्नसंततिवृद्धि स्थिर– लक्ष्मी कीर्तिलाभशत्रुपराजयाद्यभीष्ट सिद्धयर्थ 'मार्कण्डेय

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

उवाच' इत्यारम्भ 'सावर्णिर्भविता मनुः इत्यन्तं दुर्गा-सप्तशतीपाठम्' (सम्पुट पाठ करना हो तो) (अमुक··· मंत्रेण प्रतिमन्त्र सम्पुटितम), तत्रादौ कवचार्गलाकीलकम्, आद्यन्तयोर्नवार्णमन्त्रजपपुरस्परं क्रमेण रात्रिसूक्त देवीसूक्त पठनम्' अन्ते च रहस्यत्रयपठन करिष्ये।

अर्थात् प्रथम जहाँ अनुष्ठान करना हो, उस क्षेत्र का नाम, फिर संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार और नक्षत्र के नाम तथा चन्द्र, सूर्य और गुरु की वर्तमान राशि के उच्चारण के साथ साधक, श्रीमहाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती स्वरूपिणी दुर्गा देवी के प्रीत्यर्थ सप्तशती का पाठ का संकल्प करे। (यदि सकाम अनुष्ठान करना हो तो संकल्प के 'मम······से सिद्ध्यर्थम्' तक का अंश संकल्प में जोड़ दें। स्वयं न करके ब्राह्मण द्वारा कराना हो तो 'करिष्ये' की जगह 'कारयिष्यामि' कहना चाहिये।)

इस सप्तशती पाठ का आरम्भ '**मार्कण्डेय उवाच**' इस मन्त्र से और अन्त '**सावर्णिर्भविता मनुः**' इस मन्त्र से होता है। साथ ही पाठ के पूर्व इस ग्रन्थ के साथ जुड़े कवच, अर्गला और कीलक, इन स्तोत्रों का पाठ फिर पाठ के आदि और अंत में भगवती के 'नवार्ण' नामक मूल मन्त्र का (न्यूनतम १०८ बार) जप, फिर पाठ के प्रारम्भ में 'देवीमहात्म्यागत रात्रिसूक्त' का पाठ दूसरी बार के जप के बाद 'देवीसूक्त' का पाठ करके इसी मन्त्र के साथ जुड़े 'रहस्यमय' नामक तीन स्तोत्रों का पाठ करना चाहिए। संकल्प में इसका भी उल्लेख किया जाता है।

ज्ञातव्य है कि उपर्युक्त 'रात्रिसूक्त' और 'देवीसूक्त' नामक दो सूक्त वेदों में भी पठित हैं और त्रैवर्णिक (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) इन वैदिक ग्रन्थोक्त सूक्तों का पाठ कर सकते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

इस प्रकार पाठ समाप्त होने पर पाठ में न्यूनाधिक्य दोष के परिहारार्थ भगवती से निम्नलिखित श्लोक से क्षमा प्रार्थना करनी चाहिए—

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्रहीनं च भद्भवेत।
तत्सर्वे क्षम्यतां देवि! प्रसीद परमेश्वरि!!॥

इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से जल छोड़ते हुए भगवती को पाठ समपर्ण करना चाहिए—

कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥

यह सप्तशती साधारण दैनिक पाठ का विधान हैं, जिसे प्रत्येक सप्तशती पाठकर्त्ता के लिए अनिवार्यतः करणीय होता है। पाठकर्त्ता ब्राह्मण हो या स्वयं यजमान, उपर्युक्त इतनी विधि करने पर ही उसका खण्ड सप्तशती पाठ सम्पूर्ण माना जाता है। पाठ के समय अखण्ड दीप रखना प्रशस्त है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

शतचण्डी विधान

सप्तशती पाठ के नवचण्डी, शतचण्डी सहस्रचण्डी आदि अनेक विधान हैं। इन सभी में पाठ की सांगता के लिए पाठ का दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण उसका दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण भोजन अत्यावश्यक होता है। नवरात्र आदि में जो नौ दिनों तक नवचण्डी-पाठ किये जाते हैं, उनमें प्रायः पाठ के दशांश हवन, तर्पण और मार्जन आदि के लिए एक पाठ अधिक करके सांगता कर ली जाती है, जो साम्प्रदायिक मान्यता है, किन्तु कामनाविशेष से पृथक नवचण्डी, शतचण्डी सहस्रचण्डी आदि अनुष्ठान करने हों तो इन हवनादि अंगों का विकल्प न होकर मूलरूप में उन्हें करने पर ही सांगता होती है। अतएव पाठकों की सुविधा के लिए यहाँ संक्षेप में शतचण्डी-विधान दिया जा रहा है, जो तन्त्रशास्त्र के सर्वमान्य ग्रन्थ 'मन्त्र महोदधि' से संकलित है।

किसी शिवालय या दुर्गा मन्दिर के निकट एक सुन्दर मण्डप बनाया जाये, जिसमें दरवाजा और वेदी भी बनी हो। उसके चारों ओर तोरण (बंदनवारे) लगायें और ध्वजारोपण भी करें। मण्डप के बीच पश्चिम की ओर या मध्य में हवन कुण्ड का निर्माण करे।

योनिकुण्डस्वरूपम्

चतुरस्त्रकुण्डस्वरूपम्

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri
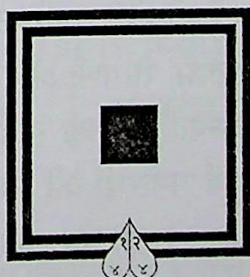
तदनन्तर यजमान स्नान नित्यक्रियादि से निवृत्त होकर पाठ एवं हवन के लिए दस ब्राह्मणों का वरण करे। ये ब्राह्मण जितेन्द्रिय, सदाचारी, कुलीन, सत्यवादी, शास्त्रवित्, नम्रता और दया से सम्पन्न तथा दुर्गा सप्तशती का पाठ करने में सक्षम होने चाहियें। उन्हें विधिपूर्वक पाद्य, अर्घ्य, आचमन देकर मधुपर्क निवेदन करना चाहिए और सुवर्ण, वस्त्रादि का दान करते हुए जप के लिए माला और आसन देने तथा हविष्यान्न अर्पण करने का विधान है। इन विचारशील ब्राह्मणों को हविष्यान्न भोजन और भूमि पर शयन करना मन्त्रार्थ-चिन्तन में ध्यान लगाते हुए मार्कण्डेय पुराणोक्त चण्डिका स्तवन का ब्राह्मण को नवार्ण मन्त्र का दस हजार जप जपार्थ नियुक्त जाप के लिए विहित बताते हैं तो कुछ लोग प्रत्येक ब्राह्मण के लिए एक-एक हजार ही नवार्ण मन्त्र जप का विधान करते हैं, जो सम्प्रदायानुसार ग्राह्य है।

यह जप सम्पुट-पाठ से पृथक् करना उचित है। प्रत्येक मन्त्र के आदि-अन्त में किसी बीज या अन्य मन्त्र का उच्चारण करके किया जाने वाला जप 'सम्पुट पाठ' कहलाता है। शक्ति साम्प्रदायिकों का मत है कि शतचण्डी का प्रारम्भ ऐसे समय करना चाहिए जो कुल एक सौ पाठ अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी या पूर्णिमा तिथियों में पूरा हो जाए।

इस अनुष्ठान में यजमान को चाहिए कि वह नौ कुमारियों का पूजन करे, जो दो वर्ष से लेकर दस वर्ष की आयु को हों। ये कुमारिकाएँ हीनांगी, अधिकांगी, कुष्ठी, और फोड़ों वाली, अन्धी, दासी से उत्पन्न, रोगिणी और दुष्टा नहीं होनी चाहिए। कुमारिका पूजन में ऐसी कन्याएँ अग्राह्य मानी गयी हैं।

सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि के लिए ब्राह्मण कन्या का, यश के लिए क्षत्रिय-कन्या का, धन के लिए वैश्य कन्या का और पुत्र के लिए शूद्र कन्या का पूजन करने का विधान है। शास्त्रों में इन नौ

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कुमारिकाओं के पृथक-पृथक नाम भी दिये गये हैं, जो इस प्रकार हैं—दो वर्ष की कन्या 'कुमारी', तीन वर्ष की 'त्रिमूर्ति', चार वर्ष की 'कल्याणी', पाँच वर्ष की 'रोहिणी', छः वर्ष की 'कालिका', सात वर्ष की 'चण्डिका', आठ वर्ष की 'शाम्भवी', नौ वर्ष की 'सुभद्रा' कहलाती है।

भगवान शंकर द्वारा कथित निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर इन नौ कुमारिकाओं का आवाहन करना चाहिए—

मन्त्राक्षरमयी लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम्।
नवदुर्गात्मिका साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्॥

तदनन्तर शंकर प्रोक्त निम्नलिखित एक-एक मन्त्र बोलकर एक-एक कुमारिका का गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, भक्ष्य-भोज्य एवं वस्त्रालंकारादि से पूजन करना चाहिए।

१. कुमारी मन्त्र—

जगत्पूज्यते जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥

२. त्रिमूर्ति मन्त्र—

त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्गज्ञानरूपिणीम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्॥

३. कल्याण मन्त्र—

कालात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदया शिवाम्।
कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४. रोहिणी मन्त्र—

अणिमादिगुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम्।
अनन्तशक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजायाम्यहम्॥

५. कालिका मन्त्र—

कामाचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम्॥

६. चण्डिका मन्त्र—

चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभंजिनीम्।
पूजयामि सदा देवीं चण्डिका चण्डविक्रमाम्॥

७. शाम्भवी मन्त्र—

सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेव नमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्॥

८. दुर्गा मन्त्र—

दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःख विनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गा दुर्गतिनाशिनीम्॥

९. सुभद्रा मन्त्र—

सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभ्यां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रा जननीं देवीं सुभद्रा पूजयाम्यहम्॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri
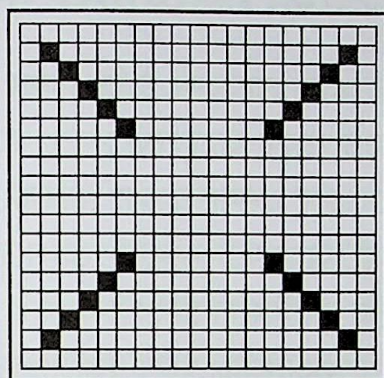
॥सर्वतोभद्रमण्डलमिदम्॥

कुमारी पूजन के पश्चात् वेदी पर सुन्दर सर्वतोभद्रमण्डल बनाकर उस पर विधिपूर्वक कलशस्थापन करना चाहिए तथा उस पर भगवती, पार्वती, दुर्गा की प्रतिमा रखकर उसका आवाहन करना चाहिए। उनके समक्ष नाना उपचारों द्वारा कन्याओं, ब्राह्मणों तथा नवार्ण मन्त्र द्वारा आवरण देवताओं का पूजन करने का विधान है। तत्पश्चात् सप्तशती मन्त्र की स्थापना करके मन्त्रस्य देवताओं का, पीठ तथा पीठस्थ देवताओं का पूजन करना चाहिए। तदनन्तर प्रधान देवता भगवती श्री दुर्गा का षोडशोपचार पूजन विहित है।

इसी प्रकार चार दिनों तक पूजनादि क्रम चलाते रहना चाहिए। इसमें भी प्रत्येक ब्राह्मण प्रथम दिन सप्तशती स्तोत्र का एक पाठ, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन, चौथे दिन चार पाठ करे। इस प्रकार पाठ वृद्धि क्रम से चार दिनों में पाठों की शत संख्या पूर्ण हो जाती है। यथा—दस ब्राह्मणों द्वारा प्रथम दिन एक-एंक पाठ = १० + द्वितीय दिन दो-दो पाठ = २० + तृतीय दिन तीन-तीन पाठ = ३० + चतुर्थ दिन चार-चार पाठ = ४० = १०० पाठ। पाँचवें दिन पाठ का दशांश हवन करना चाहिए जैसा कि कहा गया है—

'एवं चतुर्दिनं कृत्वा पंचमे होममाचरेत्।'

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पाठांग-दशांश हवनादि का विधान

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि नियत संख्या के पाठ पूरे हो जाने के पश्चात् पाठ संख्या का दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन और उसका दशांश ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए, जो नवचण्डी, शतचण्डी सहस्त्रचण्डी में समान है।

ग्रन्थों में हवनादि का विस्तृत प्रयोग मिलता है। जिसमें आचमन, प्राणायाम, संकल्प, गणेशअम्बिका पूजन, स्वस्तिपुण्याहवाचन, मातृका पूजन, वसोर्धारा पूजन, आयुष्यमन्त्रजप, आचार्य वरणादि, पूर्वांग, कर्म, तदनन्तर दशांश प्रधान हवन और नाम मन्त्रों से आवरण देवताओं के लिए हवन तथा पूर्णाहुति; ब्राह्मणों द्वारा यजमान का कलशाभिषेक. एवं सुवर्ण दक्षिणा आदि कृत्य बताये गये हैं। ये सारे क्रिया कलाप वेदज्ञ याज्ञिकों के माध्यम से यथासांग सम्पन्न हो सकते हैं और होने चाहिए।

यह भी ज्ञातव्य है कि हवन के समय सप्तशती के प्रत्येक मन्त्र के साथ 'स्वाहा' कहकर हवन कराना चाहिए, किन्तु तर्पण-मार्जन के समय मन्त्र के साथ **'दुर्गां तर्पयामि' 'दुर्गां मार्जयामि'** कहना चाहिए।

इस प्रकार शतचण्डी विधान का संक्षिप्त प्रकार बताया गया है। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य के अनुसार किसी प्रकार का वित्तशाठ्य (कृपणता) न करते हुए अनुष्ठान सम्पन्न कराना चाहिए। जो निष्काम भाव से माता जगदम्बा के प्रीत्यर्थ शतचण्डी पाठ करना चाहे अथवा वास्तव में जिनमें इतना विपुल धन व्यय करने की शक्ति ही न हो, वे भावुक सज्जन सौ पाठ करके दशांश हवनादि के लिए (१० बार हवन, १ बार तर्पण, १ बार मार्जन और १ ब्राह्मण संतर्पण के लिए), १३ पाठ करे तो और भी भगवती उनसे सन्तुष्ट होती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मानस पूजा

शास्त्रों में मानस–पूजा और ध्यान का बड़ा ही महत्व वर्णित है। भगवान की पूजा की पूर्णता मानस–पूजा से होती है। बाह्य पूजा में प्राणी अपनी सामर्थ्य और क्षमता के अनुसार जो सामग्री और उपचार अर्पण करता है, वह लौकिक होने के साथ भगवत् सेवा के लिए तुच्छ और अत्यल्प भी है। अतः भक्तगण भगवान की पूजा के लिए ऊँची से ऊँची दिव्य और अलौकिक सामग्रियों का चयन करते हैं और मानसिक रूप से भगवान की सेवा में उसे अर्पण करते हैं। यह सब मानस–पूजा और ध्यान से ही सम्भव है। अतएव अपनी शक्ति के अनुसार बाह्यपूजन तो करना ही चाहिए, साथ ही पूजा की पूर्णता के लिए मानस–पूजन और मानस ध्यान भी अवश्य करणीय है। यहाँ भगवती पराम्बा की षोडशोपचार मानस–पूजा प्रस्तुत की जा रही है।

भगवती पराम्बा की षोडशोपचार
मानस—पूजा

उद्यच्चन्दन कुकुंमारुणपयोधाराभिराप्लावितां।
नानानर्ध्यमणिप्रवालघटिता दत्तां गृहाणाम्बिके॥
आमृष्टां सुरसुन्दरीभिरभितो हस्ताम्बुजैर्भक्तितो।
मातःसुन्दरि भक्तकल्पलतिके श्रीपादुकामादरात्॥ १॥

माता त्रिपुरसुन्दरि! तुम भक्तजनों की मनोवाञ्छा पूर्ण करने वाली कल्पलता हो। माँ यह पादुका आदरपूर्वक तुम्हारे श्रीचरणों में समर्पित है, इसे ग्रहण करो। यह उत्तम चन्दन और कुंकुम से मिली हुई लाल जल की धारा से धोयी गयी है। भाँति–भाँति की बहुमूल्य

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मणियों तथा मूँगों से इसका निर्माण हुआ है और बहुत सी देवांगनाओं ने अपने करकमलों द्वारा भक्तिपूर्वक इसे सब ओर से धो पोंछकर स्वच्छ बना दिया है॥ १॥

देवन्द्रादिभिरर्चितं सुरगणैरादाय सिंहासनं
चंचत्कांचनसंचयाभिरचितं चारुप्रभाभास्वरम्॥
एतच्चम्पककेतकीपरिमलं तैलं महानिर्मलं
गन्धोद्वर्तनमादरेण तरुणीदत्तं गृहाणाम्बिके॥ २॥

माँ! देवताओं ने तुम्हारे बैठने के लिए यह दिव्य सिंहासन लाकर रख दिया है, इस पर विराजो! यह वह सिंहासन है, जिसकी देवराज इन्द्र आदि भी पूजा करते हैं। अपनी कान्ति में दमकते हुए राशि-राशि सुवर्ण से इसका निर्माण किया गया है यह अपनी मोहक प्रभा से सदा प्रकाशमान रहता है। इसके सिवा, यह चम्पा और केतकी की सुगन्ध से पूर्ण अत्यन्त निर्मल तेल और सुगन्ध युक्त उबटन है, जिसे दिव्य युवतियाँ आदरपूर्वक तुम्हारी सेवा में प्रस्तुत कर रही हैं, कृपया इसे स्वीकार करो॥ २॥

पश्चाद्देवि गृहाण शम्भुगृहिणि श्रीसुन्दरि प्रायशो।
गन्धद्रव्यसमूहनिर्भरतरं धात्रीफलं निर्मलम्॥
तत्केशान् परिशोध्य कंकतियामन्दाकिनीस्त्रोतसि।
स्नात्वा प्रोज्जवलगन्धकं भवतु हे श्रीसुन्दरि त्वन्मुदे॥ ३॥

देवि! इसके पश्चात् यह विशुद्ध आँवले का फल ग्रहण करो। शिवप्रिये! त्रिपुर सुन्दरि! इस आँवले में प्रायः जितने भी सुगन्धित पदार्थ हैं, वे सभी डाले गये हैं, इससे यह परम सुगन्धित हो गया है। अतः इसको लगा कर बालों को कंघी से झाड़ लो और और गंगाजी

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

की पवित्र धारा में नहाओ। तदनन्तर यह दिव्य गन्ध सेवा में प्रस्तुत है, यह तुम्हारे आनन्द की वृद्धि करने वाला हो॥ ३॥

सुराधिपतिकामिनीकरसरोजनालीधृतां ।
सचन्दनसकुकुंमागुरुभरेण विभ्राजिताम्॥
महापरिमलोज्ज्वलां सरसशुद्धकस्तूरिकां।
गृहाण वरदायिनि त्रिपुरसुन्दरि श्रीप्रदे॥४॥

सम्पत्ति प्रदान करने वाली परदायिनी त्रिपुरसुन्दरि! यह सरस शुद्ध कस्तूरी ग्रहण करो। इसे स्वयं देवराज इन्द्र की पत्नी महारानी शची अपने कर-कमलों को लेकर सेवा में खड़ी हैं। इसमें चन्दन, कुंकुम तथा अगुरु के मेल से और भी इसकी शोभा बढ़ गयी है। इससे बहुत अधिक गन्ध निकलने के कारण यह बड़ी मनोहर प्रतीत होती है॥ ४॥

गन्धर्वामरकिन्नरप्रियतमासंतानहस्ताम्बुज ।
प्रस्तारैर्ध्रियमाणमुत्तमतरं काश्मीरजापिंजरम्॥
मातर्भास्वरभानुमण्डललसत्कान्तिप्रदानोज्ज्वलं।
चैतन्निर्मलमातनोतु वसनं श्रीसुन्दरि त्वन्मुदम्॥५॥

माँ! सुन्दरि, यह परम उत्तम निर्मल वस्त्र सेवा में समर्पित है, यह तुम्हारे हर्ष को बढ़ावें। माता! इसे गन्धर्व, देवता तथा किन्नरों की प्रेयसी सुन्दरियाँ अपने हाथ फैलाये हुए कर-कमलों में धारण किये खड़ी है। यह केसर में रंगा हुआ पीताम्बर है। इससे परम प्रकाशमान सूर्य मण्डल की शोभामयी दिव्य कान्ति निकल रही है, जिसके कारण यह बहुत ही सुशोभित हो रहा है॥ ५॥

स्वर्णाकल्पितकुण्डले श्रुतियुगे हस्ताम्बुजे मुद्रिका।
मध्ये सारसना नितम्बफलके मंजीरमङ्घ्रिद्वये॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

हारो वक्षसि कंकणौ क्वणरणत्कारौ करद्वन्द्वके।
विन्यस्तं मुकुटं शिरस्यनुदिनं दत्तोमदंस्तूयताम्॥६॥

तुम्हारे दोनों कानों में सोने के बने हुए कुण्डल झिलमिलाते रहें, कर–कमल की अंगुली में अंगूठी शोभा पावे, कटिभाग में नितम्बरों पर करधनी सुहाये, दोनों चरणों में मञ्जीर मुखरित होता रहे, वक्ष स्थल में हार सुशोभित हो और दोनों कलाइयों में कंकण खनखनाने रहें। तुम्हारे मस्तक पर रखा हुआ दिव्य मुकुट प्रतिदिन आनन्द प्रदान करें। ये सब आभूषण प्रशंसा के योग्य हैं॥ ६॥

ग्रीवायां धृतकान्तिकान्तपटलं ग्रैवेयकं सुन्दरं।
सिन्दूरं विलसल्ललाटफलके सौन्दर्यमुद्राधरम्॥
राजत्कज्जलमुज्ज्वलोत्पलदल श्रीमोचने लोचने।
तद्दिव्यौषधिनिर्मितं रचयतु श्रीशाम्भवि श्रीप्रदे॥ ७॥

धन देने वाली शिवप्रिया पार्वती! तुम गले में बहुत ही चमकीली सुन्दर हँसली पहन लो, ललाट के मध्य भाग में सौन्दर्य की मुद्रा (चिन्ह) धारण करने वाले सिन्दूर की बेंदी लगाओ तथा अत्यन्त सुन्दर पद्मपत्र की शोभा को तिरस्कृत करने वाले नेत्रों में यह काजल भी लगा लो, यह काजल दिव्य औषधियों से तैयार किया गया है॥७॥

अमन्दतरमन्दरोन्मथितदुग्धसिन्धूद्भवं।
निशाकरकरोपमं त्रिपुरसुन्दरि श्रीप्रदे॥
गृहाण मुखमीक्षितुं मुकुरबिम्बमाविद्रुमै।
र्विनिर्मितमघच्छिदे रतिकराम्बुजस्थायिनम्॥८॥

पापों का नाश करने वाली सम्पत्तिदायिनी त्रिपुरसुन्दरि! अपने

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मुख की शोभा निहारने के लिए यह दर्पण ग्रहण करो। इसे साक्षात रति रानी अपने कर-कमलों में लेकर सेवा में उपस्थित हैं। इस दर्पण के चारों और ओर मूँगे जड़े हैं। प्रचण्ड वेग से घूमने वाले मन्दराचल की मथानी से जब क्षीर समुद्र मथा गया, उस समय यह दर्पण उसी से प्रकट हुआ था। यह चन्द्रमा की किरणों के समान उज्ज्वल है॥ ८॥

कस्तूरीद्रवचन्दनागुरुसुधाधाराभिराप्लावितं ।
चंचच्चम्पकटलादिसुरभिद्रव्यैः सुगन्धीकृतम्॥
देवस्त्रीगणमस्तकस्थितमहारत्नादिकुम्भव्रजै ।
रम्भःशाम्भवि संभ्रमेण विमलं दत्तं गृहाणाम्बिके॥ ९॥

भगवान् शंकर की धर्म पत्नी पार्वती देवी! देवांगनाओं के मस्तक पर रखे हुए बहुमूल्य रत्नमय कलशों द्वारा शीघ्रतापूर्वक दिया जाने वाला यह निर्मल जल ग्रहण करो। इसे चम्पा और गुलाल आदि सुगन्धित द्रव्यों से सुवासित किया गया है तथा यह कस्तूरीरस, चन्दन, अगरु और सुधा की धारा से आप्लावित है॥ ९॥

कह्लारोत्पलनागकेसरसरोजाख्यावलीमालती।
मल्लीकैरवकेतकादिकुसुमै रक्ता श्वमारादिभिः॥
पुष्पैर्माल्यभरेण वै सुरभिणा नानारसस्त्रोतसा।
ताम्राम्भोजनिवासिनीं भगवतीं श्रीचण्डिकां पूजये॥ १०॥

मैं कह्लार, उत्पल, नागकेसर, कमल, मालती, मल्लिका, कुमुद, केतकी और लाल कनेर आदि फूलों से, सुगन्धित पुष्पलताओं से तथा नाना प्रकार के रसों की धारा से लाल कमल के भीतर निवास करने वाली श्री चण्डिका देवी की पूजा करता हूँ॥ १०॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मांसीगुग्गुलचन्दनागुरुरजः कर्पूरशैलेयजै।
र्माध्वीकैःसह कुंकुमैःसुरचितैः सर्पिभिराममिश्रितैः॥
सौरभ्यस्थितिमन्दिरे मणिमये पात्रे भवत्प्रीतये।
धूपोऽयं सुरकामिनीविरचितः श्रीचण्डिके त्वन्मुदे॥ ११॥

श्रीचण्डिका देवि! देवबंधुओं द्वारा तैयार किया हुआ यह दिव्य धूप तुम्हारी प्रसन्नता बढ़ाने वाला हो। यह धूप रत्नमय पात्र से,जो सुगन्ध का निवास स्थान है, रखा हुआ है, यह तुम्हें सन्तोष प्रदान करे। इसे जटामासी, गुग्गुल, चन्दन, अगरुचूर्ण, कर्पूर, शिलाजीत, मधु,कुमकुम तथा घी मिलाकर उत्तम रीति से बनाया गया है॥ ११॥

घृतद्रवपरिस्फुरद्रुचिररत्नयष्ट्यान्वितो।
महातिमिरनाशनः सुरनितम्बिनीर्मितः॥
सुवर्णचषकस्थितः सघनसारवर्त्यान्वित।
स्तव त्रिपुरसुन्दरि स्फुरति देवि दीपोमुदे॥ १२॥

देवी त्रिपुरसुन्दरि! तुम्हारी प्रसन्नता के लिए यहाँ यह दीप प्रकाशित हो रहा है। वह घी से जलता है, इसकी दीवट में सुन्दर रत्न का डंडा लगा है, इसे देवांगनाओं ने बनाया है। यह दीपक सुवर्ण के चषक (पात्र) में जलाया गया है। इसमें कपूर के साथ बत्ती रखी है। यह भारी से भारी अन्धकार का भी नाश करने वाला है॥ १२॥

जातीसौरभनिर्भरं रुचिकरं शाल्योदनं निर्मलं।
युक्तं हिगुंमरीचजीरसुरभिद्रव्यान्वितैर्व्यजनैः॥
पक्कान्नेन सपायसेन मधुना दध्याज्यसम्मिश्रितं।
नैवेद्यं सुरकामिनीविरचितं श्रीचण्डिके त्वन्मुदे॥ १३॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीचण्डिका देवि! देवबंधुओं ने तुम्हारे प्रसन्नता के लिए यह दिव्य नैवेद्य तैयार किया है, इसमें अगहनी के चावल का स्वच्छ भात है, जो बहुत ही रुचिकर और चमेली की सुगन्ध से वासित है। साथ ही हींग, मिर्च और जीरा आदि सुगन्धित द्रव्यों से छौंक—बघारकर बनाये हुए नाना प्रकार के व्यंजन भी हैं, इसमें भाँति-भाँति के पकवान, खीर, मधु, दही और घी का भी मेल है॥ १३॥

लवंगकलिकोज्ज्वलं बहुलनागवल्लीदलं।
सजातिफलकोमलं सघनसारपूगीफलम्॥
सुधामधुरिमाकुलं रुचिररत्नपात्रस्थितं।
गृहाण मुखपंकजे स्फुरितमम्ब ताम्बूलकम्॥ १४॥

माँ! सुन्दर रत्नमय पात्र में सजाकर रखा हुआ यह दिव्य ताम्बूल अपने मुख में धारण करो। लवंग की कली चुभोकर इसके बीड़े लगाये गये हैं, अतः बहुत सुन्दर जान पड़ते हैं, इसमें बहुत से पान के पत्तों का उपयोग किया गया है। इन सब बीड़ों में कोमल जावित्री, कपूर और सुपारी पड़े हैं। ताम्बूल सुधा के माधुर्य से परिपूर्ण है॥ १४॥

शरत्प्रभवचन्द्रमा स्फुरितचन्द्रिकासुन्दरं।
गलत्सुरतरगिंणीललितमौक्तिकाडम्बरम्॥
गृहाण नवकांचनप्रभवदण्डखण्डोज्ज्वलं।
महात्रिपुरसुन्दरि! प्रकटमातपत्रं महत्॥ १५॥

महात्रिपुरसुन्दरि माता पार्वती! तुम्हारे सामने यह विशाल एवं दिव्य छत्र प्रकट हुआ है, इसे ग्रहण करो। यह शरत्-काल के चन्द्रमा की चटकीली चाँदनी के समान सुन्दर है, इसमें लगे हुए सुन्दर मोतियों की झालर ऐसी जान पड़ती है, मानो देवनदी गंगा का स्रोत

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

ऊपर से नीचे गिर रहा है। यह छत्र सुवर्णमय दण्ड के कारण बहुत शोभा पा रहा है॥ १५॥

मातास्त्वमुदमातनोतु सुभगस्त्रीभिः सदाऽऽन्दोलितं।
शुभ्रं चामरमिन्दुकुन्दसदृशं प्रस्वेददुःखापहम्॥
सद्योऽगस्त्यवसिष्ठनारदशुकव्यासादिवाल्मीकिभिः।
स्वे चित्ते क्रियमाण एवं कुरुतां शर्माणि वेदध्वनिः॥१६॥

माँ! सुन्दरी स्त्रियों के हाथों से निरन्तर डुलाया जाने वाला यह श्वेत चँवर, जो चन्द्रमा और कुन्द के समान उज्ज्वल तथा पसीने के कष्ट को दूर करने वाला है, तुम्हारे हर्ष को बढ़ावे। इसके सिवा महर्षि अगस्त्य, वशिष्ठ, नारद, शुक, व्यास आदि तथा वाल्मीकि मुनि अपने-अपने चित्त में जो वेदमन्त्रों के उच्चारण विचार करते हैं, उनकी वह मनः संकल्पित वेदध्वनि तुम्हारे आनन्द की वृद्धि करे॥ १६॥

स्वर्गांगणे वेणुमृदंगशंखभेरीनिनादैरूपगीयमान।
कोलाहलैराकलिता तवास्तु विद्याधरीनृत्यकला सुखाय॥१७॥

स्वर्ग के आँगन में वेणु, मृदंग, शंख तथा भेरी की ध्वनि के साथ जो संगीत होता है तथा जिसमें अनेक प्रकार के कोलाहल का शब्द व्याप्त रहता है, वह विद्याधरी द्वारा प्रदर्शित नृत्यकला तुम्हारे सुख की वृद्धि करें॥ १७॥

देवि भक्तिरसभावितवृत्ते प्रीयतां यदि कुतोऽपि लभ्यते।
तत्र लौल्यमपि सत्फलमेकं जन्मकोटिभिरपीह न लभ्यम्॥१८॥

देवि! तुम्हारे भक्ति रस से भावित इस पद्यमय स्तोत्र में यदि कहीं से भी कुछ भक्ति का लेश मिले तो उसी से प्रसन्न हो जाओ। माँ! तुम्हारी भक्ति के लिए चित्त में जो आकुलता होती है, वही एक मात्र

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जीवन का फल है, वह कोटि-कोटि जन्म धारण करने पर भी इस संसार में तुम्हारी कृपा के बिना सुलभ नहीं होती॥ १८॥

एतैः षोडशभिः पद्यैरुपचारोपकल्पितैः।
यः परां देवतां स्तौति स तेषां फलमाप्नुयात्॥१९॥

यह उपचार कल्पित सोलह पद्यों जो देवता भगवती त्रिपुर सुन्दरी का स्तवन करता है, वह उन उपचारों के समर्पण का फल प्राप्त करता है॥ १९॥

श्री महाकाली स्तुति

काली काली महाकाली, कालिके परमेश्वरी।
सर्वानन्द करे देवी, नारायणी नमोऽस्तु ते॥

श्री शीतला माता स्तुति

शीतले त्वं जगन्माता, शीतले त्वं जगतपिता।
शीतले त्वं जगद्धात्री, शीतलायै नमो नमः॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री ललिताचतुष्षष्ट्युपचार

चौंसठ उपचार मानस पूजा

राजराजेश्वरी पराम्बा भगवती ललिता महात्रिपुर सुन्दरी का चौंसठ उपचारों से युक्त मानस–पूजन यहाँ संक्षेप में संगृहीत है। यह देवी उपासकों तथा साधकों के लाभार्थ स्तुतिपूरक मानस पूजा है। इसमें देवी को ६४ मानस भावोपचार समर्पित किये हैं।

ओं हृन्मध्यनिलये देवि ललिते परदेवते।
चतुष्षष्ट्युपचारांस्ते भक्त्या मातः समर्पये॥ १ ॥
कामेशोत्संगनिलये पाद्यं गृह्णीष्व सादरम्।
भूषणानि समुत्तार्य गन्धतैलं च तेऽर्पये॥ २ ॥
स्नानशालां प्रविश्याध तत्रत्यमणिपीठके।
उपविश्य सुखेन त्वं देहोद्वर्तनमाचरः॥ ३ ॥
उष्णोदकेन ललिते स्नापयाम्यथ भक्तितः।
अभिषिंचामि पश्चात्वां सौवर्णकलशोदकैः॥ ४ ॥
धौतवस्त्राप्रोञ्छनं चारक्तक्षौमाम्बरं तथा।
कुचोत्तरीयमरुणसमर्पयामि महेश्वरि॥ ५ ॥
ततः प्रविश्य चालोपमण्डपं श्रीमहेश्वरि।
उपविश्य च सौवर्णपीठे गन्धान् विलेपय॥ ६ ॥
कालागरुज धूपैश्च धूपये केशपाशकम्।
अर्पयामि च मल्लायादिसर्वर्तुकुसुमस्त्रजः॥ ७ ॥
भूषामण्डपमाविश्य स्थित्वा सौवर्णपीठके।
माणिक्यमुकुटं मूर्ध्नि दययास्थापयाम्बिके॥ ८ ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

शरत्पार्वणचन्द्रस्य शकलं तत्र शोभताम्।
सिन्दूरेण च सीमन्तमलंकुरु दयानिधे॥ ९ ॥
भाले च तिलकं न्यस्य नेत्रयोरञ्जनं शिवे।
वालीयुगलमप्यन भक्त्या ते विम्बिवेदये॥ १०॥
मणिकुण्डलमप्म्ब नासाभरणमेव च।
ताटंकयुगलं देवि यावकञ्चाधरेऽर्पये॥ ११॥
आद्यभूषणसौवर्णचिन्ताकपर्दकानि च।
महापदमुक्तावल्येकावल्यादिभूषणम् ॥ १२॥
छन्नवीरं गृहाणाम्ब केयूरयुगलं तथा।
वलयावलिमंगुल्याभरणं ललिताम्बिके॥ १३॥
ओड्याणमथ कटयन्ते कटिसूत्रं च सुन्दरि।
सौभाग्याभरणं पादकटकं नूपुरद्वयम्॥ १४॥
अर्पयामि जगन्मातः पादयोश्चंगुलीयकम्।
पाशं वामोर्ध्वहस्ते च दक्षहस्ते तथांकुशम्॥ १५॥
अन्यस्मिन् वामहस्ते च तथा पुण्ड्रेक्षुचापकम्।
पुष्पबाणांश्च दक्षाधः पाणौ धारय सुन्दरि॥ १६॥
अर्पयामि च माणिक्यपादुके पादयोः शिवे।
आरोहावृतिदेवीभिश्चक्रं परशिवे मुदा॥ १७॥
समानवेशभूषाभिः साकं त्रिपुरसुन्दरि।
तत्र कामेशवामांकपर्यंकोपनिवेशिनीम्॥ १८॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अमृतासवपानेन मुदितां त्वां सदा भजे।
शुद्धेन गांगतोयेन पुनराचमनं कुरु॥१९॥
कर्पूरवीटिकामास्ये ततोऽम्ब विनिवेशय।
आनन्दोल्लासहासेन विलसन्मुखपंकजाम्।
भक्तिमत्कल्पलतिकां कृती स्यां त्वां स्मरन् कदा॥२०॥
मंगलारार्तिकं छत्रं चामरं दर्पणं तथा।
तालवृन्तं गन्धपुष्पधूपदीपांश्च तेऽर्पये॥२१॥
श्रीकामेश्वरि तप्तहाटककृतैः स्थालीसहस्त्रैर्भृतं
दिव्यान्नं घृतसूपशाकभरितं चित्रान्नभेदैर्युतम्।
दुग्धान्नंमधुशर्करादधियुतं माणिक्यपात्रर्पितं,
माषापूपकपूरिकादिसहितं नैवेद्यमम्बार्पये॥२२॥
साम्रविंशतिपाद्योक्तचतुष्षष्ट्युपचारतः ।
हृन्मध्यनिलया माता ललिता परितुष्यतु॥२३॥

श्री ललिताचतुष्षष्ट्युपचार

(हिन्दी अनुवाद)

हे देवी ललिते! आप मेरे हृदय में निवास करने वाली हैं। मैं आपको भक्तिपूर्वक चौंसठ उपचार समर्पण कर रहा हूँ। कामेश्वर के अंग में विराजमान हे भगवती! आप सादर पाद्य ग्रहण करें और सब आभूषणों को उतार कर सुगन्धित तैल स्वीकार करें। अब आप मेरे द्वारा अर्पित स्नानशाला में प्रवेश करें एवं वहाँ मणिपीठ पर विराजमान होकर देह में उबटन स्वीकार करें। मैं शक्तिपूर्वक आपको स्नान कराकर स्वर्ण के कलशों से आपका अभिषेक करता हूँ एवं धौत वस्त्र से आपके देह को पोंछकर लाल कौशेय (रेशमी) वस्त्र एवं

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

उत्तरीय वस्त्र अर्पण करता हूँ। अब आप आलेप मण्डल में प्रवेश करके वहाँ पर स्थित सुवर्णपीठ पर बैठकर अनेक प्रकार के इत्र-गन्धों का विलेपन करें। कालागुरुधूप से आपके केशों को धूपित करके मैं नाना प्रकार के सब ऋतुओं में होने वाले सुगन्धित फलों की माला अर्पण करता हूँ। हे माता! अब आप भूषण मण्डप में प्रवेश करें। वहाँ सुवर्ण पीठ पर विराजमान होकर मणिमय मुकुट, अर्धचन्द्र, सीमन्त-सिन्दूर, ललाट पर बेंदी, नेत्रों में अञ्जन, कानों में मणिकुण्डल एवं नासाभरण, अधर पर आलक्तक, गले में मंगलसूत्र, सुवर्णहार एवं पदक, महापदक, मुक्तावली, एकावली, छन्नवीर, बाहुओं में केयूर, वलयावली (चूड़ियाँ), अंगूठी, कटि में कटिसूत्र (मेखला सौभाग्याभरण), चरण कमल में पादकटक नूपुर और पैर की अंगुलियों में अंगुलीयक आदि आभूषण धारण करके बाएँ ऊपर के हाथ में पाश, दाहिने में अंकुश, नीचे के बाँए हाथ में इक्षु धनु और दाहिने में पुष्प बाण धारण कीजिए।

अब आप अपनी आवरण देवियों के साथ श्रीयन्त्र पर विराजमान हों। वहाँ बिन्दु में विराजमान महाकामेश्वर के अंग में सुशोभित होकर अमृतासव चषक का पान करके, आचमन करके, ताम्बूल वीटिका मुख में सुशोभित करके आनन्द-उल्लास, हास-विलास से परम प्रसन्न हुई आपका स्मरण करता हुआ मैं कब इस पुण्य का भागी बनूँगा। हे माता! अब आपकी मंगल आरती का नीराजन करके छत्र चामरयुक्त, दर्पण, तालवृन्त, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप अर्पण कर दाल, शाक, घी एवं दूध, दिव्यान्न, मधु, शर्करा से युक्त माष, पूरी, मालपुआ अनेक प्रकार के षट्रस व्यंजन से भरी हुई सहस्त्रों थालियाँ समर्पण करता हूँ। इन चौंसठ उपचारों से मेरे हृदय में निवास करने वाली भगवती राजराजेश्वरी ललिता महात्रिपुरसुन्दरी प्रसन्न हों।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

शक्ति के विभिन्न स्वरूपों का ध्यान

१. सर्वमंगला का ध्यान—

हेमाभां करुणाभिपूर्णनयनां माणिक्यभूषोज्ज्वलां
द्वात्रिंशद्दलषोडशाष्टदलयुत्पद्मस्थितां सुस्मिताम्।
भक्तानां धनदां वरं च दधतीं वामेन हस्तेन तद्
दक्षेणाभायमातुलुंगसुफलं श्री मंगला भाषयै॥

जिसकी कान्ति स्वर्ण-सदृश है, जिनके नेत्र करुणा से परिपूर्ण रहते हैं, जो माणिक्य के आभूषणों से विभूषित, बत्तीस दल, षोडशदल, अष्टदल कमल पर स्थित, सुन्दर मुस्कान से सुशोभित, भक्तों को धन देने वाली, बायें हाथ में वरद मुद्रा तथा दायें हाथ में अभय मुद्रा एवं बिजौरा नींबू का सुन्दर फल धारण करने वाली है, उन श्रीमंगला देवी की मैं भावना करता हूँ।

२. चण्डिका का ध्यान—

चण्डिका श्वेतवर्णा सा शिवरूपा च सिंहगा।
जटिला वर्तुलां त्र्यक्षा वरदा शूलधारिणी॥
कर्त्रिकां विभ्रती दक्षे पाशपात्राभ्यान्विता।

कल्याणरूपिणी चण्डिका का वर्ण श्वेत है। वे जटा धारण करती हैं। उनके गोलाकार तीन नेत्र हैं और वे सिंह पर आरूढ़ होती हैं। वे अपने दाहिने हाथों में वरदा मुद्रा, शूल और कर्त्रिका (छुरी या कैंची) तथा बाएँ हाथों में पाशपात्र और अभय मुद्रा धारण करती हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३. अष्टभुजा काली का ध्यान—

अष्टबाहुर्महाकाया कालमेघसमप्रभा।
शंखचक्रगदाकुम्भमुसलांकुशपाशयुक्त ॥
वज्रं करे विभ्रती सा महाकाली मुदेऽस्तुनः।

जिनका शरीर विशाल है, जिनकी अंग कान्ति काले मेघ के समान है, जो आठ भुजाओं से सुशोभित हैं तथा उन भुजाओं में शंख, चक्र, गदा, कुम्भ, मूसल, अंकुश, पाश और वज्र धारण करती हैं, वे महाकाली मेरे लिए आनन्ददायिनी हों।

४. प्रत्यंगिरा का ध्यान—

श्यामाभां च तिनेत्रां तां सिंहवक्त्रां चतुर्भुजाम्।
ऊर्ध्वकेशीं च सिंहस्थां चन्द्राङ्कितशिरोरुहाम्॥
कपालशूलडमरुनागपाशधरां शुभाम्।
प्रत्यंगिरां भजे नित्यं सर्वशत्रुविनाशिनीम्॥

जिनकी अंग कान्ति श्याम है, जिनके तीन नेत्र और चार भुजाएँ हैं, जिनका मुख सिंह के मुख के सदृश है, जिनके केश ऊपर उठे रहते हैं, जो सिंह पर आरूढ़ होती हैं, जिसके बालों में चन्द्रमा शोभित होते हैं, जो कपाल, शूल, डमरू और नागपाश धारण करती हैं तथा समस्त शत्रुओं का विनाश करने वाली हैं उन मंगलकारिणी प्रत्यंगिरा का मैं नित्य भजन करता हूँ।

५. अपराजिता का ध्यान—

नीलोत्पलनिभां देवीं निद्रामुद्रितलोचनाम्।
नीलकुंचितकेशाग्रयां निम्ननाभीवलित्रयाम्॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

वराभयकराम्भोजा प्रणतार्तिविनाशिनीम्।
पीताम्बरवरोपेतां भूषणस्त्रग्विभूषिताम्॥
वरशक्त्याकृतिं सौम्यां परसेन्यप्रभाञ्जिनीम्।
शंखचक्रगदाभीतिरम्यहस्तां त्रिलोचनाम्॥
सर्वकामप्रदा देवीं ध्यायेत् तामपराजिताम्।

जिनकी कान्ति नीलकमल सरीखी है, जिनके नेत्र निद्रा से मुँदे रहते हैं, जिनके केशों के अग्रभाग नीले और घुँघराले हैं, जिनकी नाभि गहरी और त्रिवली से युक्त है। जो कर-कमलों में वरद और अभय मुद्रा धारण करती हैं, शरणागतों की पीड़ा को नष्ट करने वाली हैं, उत्तम पीताम्बर धारण करती हैं, जिनकी आकृति श्रेष्ठ शक्ति से युक्त और सौम्य है, जो शत्रुओं की सेना का संहार करने वाली हैं, जो सुन्दर हाथों में शंख, चक्र, गदा व अभय धारण किए हैं। जिनके तीन नेत्र हैं। जो समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली हैं। उन अपराजिता देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

नवार्ण मन्त्र व अर्थ

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे:

ॐ—हे ब्रह्मरूपिणी! **ऐं**—हे महाशक्ति! मुझे ब्रह्म में स्थित कर! गति, मति, निर्मलता, शान्ति और स्थिरता प्रदान कर। **ह्रीं**—हे क्षमामूर्ति मुझे मर्यादा में रख, शीलवान्, विनम्र और विजयी बना। दुःख, रोग, भय और संकटों से मेरी रक्षा कर। **क्लीं**—हे आनन्दमयी माँ! मुझे मधुरता, प्रेम, प्रसन्नता, उत्साह, भावना, सिद्धि, सम्पन्नता, तुष्टि और पूर्णता प्रदान कर। **चामुण्डायै विच्चे**—परम पराक्रम वाली, अजेय, रौद्ररूपिणी चण्डिके! प्रसन्न हो जाओ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री दुर्गा-सप्तशती की संक्षिप्त कथा

उपक्रम

दूसरे मनु के राज्याधिकार में 'सुरथ' नामक एक चैत्रवंशीय राजा हुए थे। जब शत्रुओं और दुष्ट मन्त्रियों ने उनका राज्य, खजाना और सेना सभी कुछ छीन लिया, तब वे शान्ति पाने के लिए मेधा ऋषि के आश्रम में पहुँचे। इसी बीच उस आश्रम में राजा सुरथ की समाधि नामक एक समदु:खी वैश्य से भेंट हुई। राजा और वैश्य दोनों मेधा ऋषि के निकट पहुँचे और उन्हें नमन कर पूछा—'महाराज! कृपा करके बताइये कि जिन विषयों में दोष देखकर भी ममतावश हम दोनों का मन उनमें लगा रहता है। क्या कारण है कि ज्ञान रहते हुए भी ऐसा मोह हो रहा है।'

ऋषियों ने कहा—'राजन्! ज्ञानियों के चित्तों को भी महामाया बलात् खींचकर मोहग्रस्त बना देती है।' यह सुनकर राजा ने उन महामाया देवी के विषय में प्रश्न किया। तब ऋषि ने कहा—'वे भगवती नित्य हैं और उन्होंने सारे विश्व को व्याप्त कर रखा है। जब वे देवों के कार्य के लिए आर्विभूत होती हैं, तब उन्हें 'उत्पन्न' कहा जाता है।' राजा के पूछने पर ऋषि ने उन्हें पराशक्ति के तीन चरित्र बताए, जो इस प्रकार हैं।

प्रथम चरित्र

जब प्रलय के पश्चात शेषशय्या पर योग-निद्रा में निमग्न भगवान् विष्णु के कर्ण मल से मधु और कैटभ नामक दो असुर उत्पन्न हुए और वे श्रीहरि के नाभि कमल पर स्थित ब्रह्मा को ग्रसने के लिए उद्यत हो गए, तब ब्रह्मा ने भगवती योगनिद्रा की स्तुति करते हुए उनसे तीन प्रार्थनाएँ कीं—१. भगवान विष्णु को जगा दीजिए,

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२. उन्हें दोनों असुरों के संहारार्थ उद्यत कीजिए और ३. असुरों को विमोहित कर श्रीभगवान द्वारा उनका वध करवाइये। तब भगवती ने ब्रह्मा को दर्शन दिया। भगवान योगनिद्रा से उठकर मोहित कर दिए जाने पर भगवती से वर माँगने को कहा। अन्त में उसी वरदान के अनुसार वे भगवान विष्णु द्वारा मारे गए।

मध्यम चरित्र

प्राचीन काल में महिष नामक एक महाबली असुर ने जन्म लिया। उसने अपनी शक्ति से इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, यम, वरुण, अग्नि, वायु तथा अन्य सभी देवों को पराजित कर स्वयं इन्द्र बन बैठा और सभी देवों को स्वर्ग से निकाल दिया, स्वर्गमुख से वंचित देव मर्त्यलोक में भटकने लगे। अन्त में उन लोगों ने ब्रह्मा के साथ भगवान विष्णु और शिव के निकट पहुँचकर अपनी कष्ट कथा कह सुनायी। देवों की करुण कहानी सुनकर हरिहर के मुख से एक महान तेज निकला। तत्पश्चात ब्रह्मा, इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, यमादि देवों के शरीरों से भी तेज निकला। वह तेज एकत्र होकर दिव्य देवी के रूप में परिणत हो गया।

विधि, हरि और हर त्रिदेवों तथा अन्य प्रमुख-प्रमुख देवों ने उस तेजोमूर्ति को अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र प्रदान किए। तब देवी अट्टहास करने लगी, जिससे त्रैलोक्य काँप उठा। उस अट्टाहास को सुनकर असुराज सम्पूर्ण असुरों को साथ लेकर उस शब्द की ओर दौड़ पड़ा। वहाँ पहुँचकर उसने उग्र स्वरूपा देवी को देखा। फिर तो वे सभी असुर देवी से युद्ध करने लगे। भगवती और उनके वाहन सिंह ने कई कोटि असुरों का विनाश कर दिया। भगवती के हाथों असुर के पंद्रह सेनानी—चिक्षुर, चामर, उदग्र, कराल, वाष्कल, ताम्र, अन्धक, असिलोमा, उग्रास्य, उग्रवीर्य, महाहनु, विडालास्य, महासुर, दुर्धर

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

और दुर्मुख आदि मारे गये। तब महिषासुर, महिष, हस्ती, मनुष्यादिका रूप धारण कर भगवती से युद्ध करने लगा और अन्त में मारा गया।

अपने समग्र शत्रुओं के मारे जाने पर आह्लादित हो देवों ने आद्याशक्ति की स्तुति की और वर माँगा कि 'हम लोग जब-जब दानवों द्वारा विपद्ग्रस्त हों, तब-तब आप हमें आपदाओं से विमुक्त करें तथा इस चरित्र को पढ़ने सुनने वाल प्राणी सम्पूर्ण सुख-ऐश्वर्य से सम्पन्न हो जाए।'

तब 'तथास्तु' कहकर देवी ने देवों को अभीप्सित वरदान दिया और स्वयं तत्काल अन्तर्धान हो गयी।

उत्तर चरित्र

पूर्वकाल में शुम्भ और निशुम्भ नामक दो महापराक्रमी असुर हुए। उन्होंने इन्द्र का राज्य और यज्ञों का भाग तक छीन लिया। वे दोनों सूर्य, चन्द्र, कुबेर, यम, वरुण, पवन और अग्नि के अधिकारों के अधिपति बन बैठे। तब देव शोकग्रस्त हो मर्त्यलोक में आए और हिमालय पर पहुँच कर करुणाद्र हृदय से प्रार्थना करने लगे। तब भगवती पार्वती प्रकट हुई। उन्होंने देवों से पूछा—'आप लोग किसकी स्तुति कर रहे हैं।' इसी समय देवी के शरीर से 'शिवा' निकलीं और कहने लगीं — 'शुम्भ निशुम्भ से पराजित होकर स्वर्ग से निकाले गए ये इन्द्रादि देव मेरी स्तुति कर रहे हैं।' पार्वती के शरीर से निकलने के कारण अम्बिका 'कौशिकी' कहलायीं। उनके निकल जाने से पार्वती कृष्णवर्णा हो गयीं तथा काली नाम धारण कर हिमालय पर रहने लगीं।

इधर परम सुन्दरी अम्बिका को शुम्भ-निशुम्भ के भृत्य चण्ड-मुण्ड ने देखा तो दोनों ने जाकर शुम्भ से उनके अतुल सौन्दर्य की प्रशंसा की। भृत्यों की बात सुनकर शुम्भ ने सुग्रीव नामक असुर को अम्बिका

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

को ले आने के लिए भेजा। सुग्रीव ने भगवती के पास पहुँचकर शुम्भ-निशुम्भ के ऐश्वर्य और शौर्य की प्रशंसा करते हुए उनसे विवाह की बात कही। देवी ने उत्तर दिया—'जो मुझे संग्राम में पराभूत करके मेरे बल दर्प को नष्ट करेगा, उसी को मैं पति रूप में स्वीकार करूँगी, यही मेरी अटल प्रतिज्ञा है।' सुग्रीव ने शुम्भ-निशुम्भ के निकट पहुँच कर भगवती अम्बिका की प्रतिज्ञा विस्तार पूर्वक कह सुनायी। असुरेन्द्रों ने कुपित होकर देवी के बाल पकड़कर खींच लाने के लिए धूम्रलोचन असुर को भेजा, किन्तु देवी ने तो हुँकार मात्र से ही उसे भस्म कर दिया।

पश्चात असुरराज ने भारी सेना के साथ चण्ड-मुण्ड नामक असुरों को भगवती कौशिकी को पकड़ लाने के लिए भेजा। वे वहाँ पहुँचकर भगवती को पकड़ने का प्रयत्न करने लगे। तब उनके ललाट से भयानक 'काली देवी' प्रकट हुई। उन्होंने सारी असुर सेना का विनाश कर दिया और चण्ड-चमुण्ड का सिर काटकर वे अम्बिका के पास ले आईं। इसी कारण उनका नाम 'चामुण्डा' पड़ा। चण्ड-मुण्ड का वध सुनकर असुरेश ने सात सेनानायकों को भगवती से युद्ध करने के लिए भेजा। उस समय ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, वाराह, नृसिंह, कार्तिकेय—इन सात प्रमुख देवों की शक्तियाँ असुर सेना के साथ युद्ध करने के लिए आ पहुँची। फिर अम्बिका के शरीर से भयंकर शक्ति निकली, जो लोक में शिवदूती नाम से विख्यात हुई। उसने ईशान को शुम्भ-निशुम्भ के पास भेजकर कहलवाया कि यदि तुम लोग अपना कल्याण चाहते हो तो देवताओं के लोक और यज्ञाधिकार उन्हें लौटाकर पाताल लोक में चले जाओ।

बलोन्मत्त शुम्भ-निशुम्भ देवी की बात की अवहेलना करके युद्धस्थल में सेना सहित आ डटे। भगवती ने देवशक्तियों की सहायता से असुर सैन्य का संहार प्रारम्भ कर दिया, तब असुर सेनाध्यक्ष

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

रक्तबीज उत्पन्न हो जाते थे। अन्त में देवी ने चामुण्डा को आज्ञा दी कि वह अपने मुख का विस्तार कर रक्तबीज के शरीर के रक्त को अपने मुख में ले ले और इस तरह उन नये असुरों का भक्षण कर डाले। चामुण्डा ने ऐसा ही किया और भगवती ने उस असुर का सिर काट डाला। तत्पश्चात निशुम्भ भगवती से युद्ध करने लगा और मारा गया।

अब शुम्भ ने क्रोधित होकर अम्बिका से कहा—'तू दूसरे का बल लेकर अभिमान कर रही है।' भगवती ने उत्तर दिया—'संसार में मैं एक ही हूँ। ये समस्त मेरी विभूतियाँ हैं। ये मुझसे ही उत्पन्न हुई हैं और मुझमें ही विलुप्त हो जायेंगी।' इसके बाद सातों शक्तियाँ देवी के शरीर में प्रविष्ट हो गयीं और शुम्भ भी देवी के कौशल से मारा गया। देवगणों ने हर्षित होकर अम्बिका की स्तुति की। अन्त में प्रसन्न होकर देवी बोली—'संसार का उपकार करने वाला वर माँगिये।' देवों ने कहा—'जब-जब हमारे शत्रु उत्पन्न हों, आप उनका नाश कर हमें आश्वस्त करें!'। भगवती आद्या-शक्ति ने 'एवमस्तु' कहा और भविष्य में सात बार भक्त रक्षणार्थ अवतार लेने की कथा तथा दुर्गा चरित्र के पाठ का महात्म्य वर्णन कर अन्तर्धान हो गयी।

उपसंहार

भगवती की उत्पत्ति और प्रभाव के तीन चरित्र सुनाकर मेधा ऋषि ने राजा सुरथ और समाधि वैश्य को भगवती की उपासना का आदेश दिया। दोनों ने कठोर उपासना की। अंत में देवी ने प्रकट होकर राजा को उनका राज्य पुनः प्राप्त होने तथा वैश्य को ज्ञान प्राप्ति का वरदान दिया। उस वरदान के प्रभाव से राजा सुरथ सूर्य से उत्पन्न होकर सावर्णि मनु हो गये।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥ १॥

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः॥ २॥

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥ ३॥

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥ ४॥

अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥ ५॥

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ ६॥

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ ७॥

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ ८॥

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ ९॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१०॥
या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥११॥
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१२॥
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१३॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१४॥
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१५॥
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१६॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१७॥
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१८॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१९॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२०॥

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२१॥

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२३॥

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२४॥

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥२७॥

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा
सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ २९ ॥
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव
हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ३० ॥

॥ इति तन्त्रोक्तं देवी सूक्तम् सम्पूर्णम् ॥

तन्त्रोक्त देवीसूक्त

(हिन्दी अनुवाद)

देवी को नमस्कार है, महादेवी शिवा को सदा नमस्कार है। प्रकृति एवं भद्रा को प्रणाम है। हम लोग नियमपूर्वक जगदम्बा को नमस्कार करते हैं रौद्रा को नमस्कार है। नित्या, गौरी एवं धात्री को नमस्कार है। ज्योत्स्नामयी, चन्द्ररूपिणी एव सुखस्वरूपा देवी को सतत प्रणाम है शरणागतों का कल्याण करने वाली वृद्धि एवं सिद्धिरूपा देवी को बारम्बार नमस्कार करते हैं। नैर्ऋती (राक्षसों की लक्ष्मी), राजाओं की लक्ष्मी तथा शर्वाणी (शिवपत्नी) स्वरूपा आप जगदम्बा को बारम्बार नमस्कार है दुर्गा, दुर्गपारा (दुर्गम संकट से पार उतारने वाली), सारा (सबकी आधारभूता), सर्वकारिणी, ख्याति, कृष्णा और धूम्रादेवी को सदा सर्वदा नमस्कार है। अत्यन्त सौम्य तथा अत्यन्त रौद्ररूपा देवी को हम नमस्कार करते हैं, उन्हें हमारा बारम्बार प्रणाम है। जगत् की आधारभूता कृति देवी को बारम्बार नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में विष्णुमाया के नाम से जानी जाती हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जो देवी सब प्राणियों में चेतना कहलाती हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में बुद्धिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में निद्रारूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में क्षुधारूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में छायारूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में शक्तिरूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो देवी सब प्राणियों में तृष्णारूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो देवी सब प्राणियों में क्षान्ति (क्षमा) रूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में जातिरूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो देवी सब प्राणियों में लज्जारूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो देवी सब प्राणियों में शान्तिरूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो देवी सब प्राणियों में श्रद्धारूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो देवी सब प्राणियों में कान्तिरूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो देवी सब प्राणियों में लक्ष्मीरूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जो देवी सब प्राणियों में वृत्तिरूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो देवी सब प्राणियों में स्मृतिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो देवी सब प्राणियों में दयारूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो देवी सब प्राणियों में तुष्टिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो देवी सब प्राणियों में मातारूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो देवी सब प्राणियों में भ्रान्तिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो जीवों के इन्द्रियवर्ग की अधिष्ठात्री देवी एवं सब प्राणियों में सदा व्याप्त रहने वाली हैं, उन व्याप्ति देवी को नमस्कार है।

जो देवी चैतन्यरूप से इस सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करके स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार उनको नमस्कार।

पूर्वकाल में अपने अभीष्ट की प्राप्ति होने से देवताओं ने जिनकी स्तुति की तथा देवराज इन्द्र ने बहुत दिनों तक जिनका सेवन किया, वह कल्याण की साधनाभूत ईश्वरी हमारा कल्याण और मंगल करे तथा सारी आपत्तियों का नाश कर डाले। उद्दण्ड दैत्यों से सताये हुए हम सभी देवता जिन परमेश्वरी को इस समय नमस्कार करते हैं तथा जो भक्ति से विनम्र पुरुषों द्वारा स्मरण की जाने पर तत्काल ही सम्पूर्ण विपत्तियों का नाश कर देती हैं, वे जगदम्बा हमारा संकट दूर करें॥ १–३०॥

॥ तन्त्रोक्त देवी सूक्त हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीदुर्गा अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्

ईश्वर उवाच—

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती॥ १॥

ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी॥ २॥

पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः॥ ३॥

सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्य सदागतिः॥ ४॥

शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी॥ ५॥

अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी॥ ६॥

अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता॥ ७॥

ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः॥ ८॥

विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना॥ ९॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी॥ १०॥

सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा॥ ११॥

अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः॥ १२॥

अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला॥ १३॥

अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी॥ १४॥

शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी॥ १५॥

य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम्।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति॥ १६॥

धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम्॥ १७॥

कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम्॥ १८॥

तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवैररपि।
राजानो दासनां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात्॥ १९॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

गोरोचनालक्तककुङ्कुमेन सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो
भवेत् सदा धारयते पुरारिः॥ २०॥
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम्॥ २१॥

॥ इति श्री विश्वसार तन्त्रे श्रीदुर्गा अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्॥

श्रीदुर्गा अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

शंकरजी पार्वती जी से कहते हैं— कमलानने! अब मैं अष्टोत्तरशत नाम का वर्णन करता हूँ, सुनो; जिसके पाठ के श्रवण मात्र से भगवती दुर्गा प्रसन्न हो जाती हैं॥ १॥

१. ॐ सती, २. साध्वी, ३. भवप्रीता (भगवान् शिव पर प्रीति रखने वाली), ४. भवानी, ५. भवमोचनी (संसार के बन्धन से मुक्त करने वाली), ६. आर्या, ७. दुर्गा, ८. जया, ९. आद्या, १०. त्रिनेत्रा, ११. शूलधारिणी, १२. पिनाकधारिणी, १३. चित्रा, १४. चण्डघण्टा (ऊँचे स्वर से घण्टानाद करने वाली), १५. महातपा (भारी तपस्या करने वाली), १६. मन (मनन-शक्ति), १७. बुद्धि (बोध शक्ति), १८. अहंकारा (अहंताका आश्रय), १९. चित्तरूपा, २०. चिता, २१. चिति (चेतना), २२. सर्वमन्त्रमयी, २३. सत्ता (सत्-स्वरूपा), २४. सत्यानन्दस्वरूपिणी २५. अनन्ता (जिसके स्वरूप का अन्त नहीं), २६. भाविनी (सबको उत्पन्न करने वाली), २७. भाव्या (भावना एवं ध्यान करने योग्य), २८. भव्या (कल्याणरूप), २९. अभव्या (जिससे अधिक भव्य कोई नहीं है), ३०. सदागति,

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३१. शाम्भवी (शिवप्रिया), ३२. देवमाता, ३३. चिन्ता, ३४. रत्नप्रिया, ३५. सर्वविद्या, ३६. दक्षकन्या, ३७. दक्षयज्ञविनाशिनी, ३८. अपर्णा (तपस्या के समय पत्ते को भी न खाने वाली), ३९. अनेकवर्णा (अनेक रंगों वाली), ४०. पाटला (लाल रंगवाली), ४१. पाटलावती (गुलाब के फूल या लाल फूल धारण करने वाली), ४२. पट्टाम्बर-परीधाना (रेशमी वस्त्र पहनने वाली), ४३. कलमञ्जीररञ्जिनी (मधुर ध्वनि करने वाले मञ्जीर को धारण करके प्रसन्न रहने वाली), ४४. अमेयविक्रमा (असीम पराक्रमवाली), ४५. क्रूरा (दैत्यों के प्रति कठोर), ४६. सुन्दरी, ४७. सुरसुन्दरी, ४८. वनदुर्गा, ४९. मातङ्गी, ५०. मतङ्गमुनिपूजिता, ५१. ब्राह्मी, ५२. माहेश्वरी, ५३. ऐन्द्री, ५४. कौमारी, ५५. वैष्णवी, ५६. चामुण्डा, ५७. वाराही, ५८. लक्ष्मी, ५९. पुरुषाकृति, ६०. विमला, ६१. उत्कर्षिणी, ६२. ज्ञाना, ६३. क्रिया, ६४. नित्या, ६५. बुद्धिदा, ६६. बहुला, ६७. बहुलप्रेमा, ६८. सर्ववाहनवाहना, ६९. निशुम्भशुम्भहननी, ७०. महिषासुरमर्दिनी ७१. मधुकैटभहन्त्री, ७२. चण्डमुण्डविनाशिनी, ७३. सर्वासुरविनाशा, ७४. सर्वदानवघातिनी, ७५. सर्वशास्त्रमयी, ७६. सत्या ७७. सर्वास्त्र-धारिणी ७८. अनेकशस्त्रहस्ता, ७९. अनेकास्त्रधारिणी, ८०. कुमारी, ८१. एककन्या, ८२. कैशोरी, ८३. युवती, ८४. यति, ८५. अप्रौढ़ा, ८६. प्रौढ़ा, ८७. वृद्धमाता, ८८. बलप्रदा, ८९. महोदरी, ९०. मुक्तकेशी, ९१. घोररूपा, ९२. बहाबला, ९३. अग्निज्वाला, ९४. रौद्रमुखी, ९५. कालरात्रि, ९६. तपस्विनी, ९७. नारायणी, ९८. भद्रकाली, ९९. विष्णुमाया, १००. जलोदरी, १०१. शिवदूती, १०२. कराली, १०३. अनन्ता (विनाशरहित), १०४. परमेश्वरी, १०५. कात्यायनी, १०६. सावित्री, १०७. प्रत्यक्षा, १०८. ब्रह्मवादिनी ॥ २—१५ ॥

हे देवी ! जो प्रतिदिन श्री दुर्गाजी के इस अष्टोत्तरशतनाम का पाठ

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

करता है, उसके लिये तीनों लोकों में कुछ भी असम्भव नहीं है॥ १६॥

वह धन, धान्य, पुत्र, स्त्री, घोड़ा, हाथी, धर्म आदि चारों पुरुषार्थ तथा मुक्ति भी प्राप्त कर लेता है॥ १७॥

कुमारी का पूजन और देवी सुरेश्वरी का ध्यान करके पराभक्ति के साथ उनका पूजन करे, फिर अष्टोत्तर शतनाम का पाठ आरम्भ करे॥१८॥

हे देवी! जो ऐसा करता है, उसे सब श्रेष्ठ देवताओं से भी सिद्धि प्राप्त होती है व राजा उसके दास हो जाते हैं। वह राज्य लक्ष्मी को प्राप्त कर लेता है॥ १९॥

गोरोचन, लाक्षा, कुङ्कुम, सिन्दूर, कपूर, घी, चीनी और मधु— इन वस्तुओं को एकत्र करके इनसे विधिपूर्वक यन्त्र लिखकर जो सदा उस यन्त्र को धारण करता है, वह शिव के समान हो जाता है॥ २०॥

सोमावती अमावस्या की आधी रात में, जब चन्द्रमा शतभिषा नक्षत्र पर हों, उस समय इस स्तोत्र को लिखकर जो इसका पाठ करता है, वह सम्पत्तिवान होता है॥ २१॥

॥ श्रीदुर्गा अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अथ देव्याः कवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्ध देवतास्तत्त्वम्, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशती पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः। ॐ नमश्चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच—

ॐ यद्‌गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह॥ १॥

ब्रह्मा उवाच—

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने॥ २॥
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥ ३॥
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्॥ ४॥
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना॥ ५॥
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः॥ ६॥
न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि॥ ७॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

यैस्तु भक्त्यां स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः॥ ८ ॥
प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना॥ ९ ॥
माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया॥ १० ॥
श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता॥ ११ ॥
इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः॥ १२ ॥
दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्॥ १३ ॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्॥ १४ ॥
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै॥ १५ ॥
नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि॥ १६ ॥
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता॥ १७ ॥
दक्षिणोऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी॥ १८ ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी।
उर्ध्वं ब्रह्मणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा॥ १९॥
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः॥ २०॥
अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता॥ २१॥
मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके॥ २२॥
शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी॥ २३॥
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृताकला जिह्वायां च सरस्वती॥ २४॥
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके॥ २५॥
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी॥ २६॥
नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी॥ २७॥
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेतकुलेश्वरी॥ २८॥
स्तनौ रक्षेन्महोदवी मनः शोकविनाशिनी।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी॥ २९॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी॥ ३०॥
कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी॥ ३१॥
गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी॥ ३२॥
नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा॥ ३३॥
रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वररी॥ ३४॥
पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु॥ ३५॥
शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी॥ ३६॥
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना॥ ३७॥
रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा॥ ३८॥
आयु रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनंविद्यांचचक्रिणी॥ ३९॥
गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी॥ ४०॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता॥ ४१॥

रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी॥ ४२॥

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति॥ ४३॥

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्॥ ४४॥

निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्॥ ४५॥

इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः॥ ४६॥

दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः॥ ४७॥

नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः।
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम्॥ ४८॥

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले।
भूचराः खेचराश्चैव जलाजाश्चोपदेशिकाः॥ ४९॥

सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः॥ ५०॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः॥५१॥
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्॥५२॥
यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा॥५३॥
यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी॥५४॥
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः॥५५॥
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते॥ ॐ॥५६॥

॥ इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम् ॥

देवी कवच

(हिन्दी अनुवाद)

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है।

मार्कण्डेय जी बोले— पितामह! जो इस संसार में परमगुप्त तथा मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करने वाला है और जो अब तक आपने किसी अन्य के सामने प्रकट नहीं किया हो, ऐसा कोई साधन मुझे बताइये॥ १॥

ब्रह्माजी बोले—ब्रह्मन्! ऐसा साधन तो एक देवी का कवच ही है, जो गुप्त से भी परमगुप्त, पवित्र तथा सम्पूर्ण प्राणियों का उपकार करने वाला है। महामुने! उसे सुनो॥ २॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी की नौ मूर्तियाँ हैं, जिन्हें 'नवदुर्गा' कहते हैं। उनके पृथक-पृथक नाम बतलाये जाते हैं।

प्रथम नाम शैलपुत्री है। दूसरी मूर्ति का नाम ब्रह्मचारिणी है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा के नाम से प्रसिद्ध है। चौथी मूर्ति को कूष्माण्डा कहते हैं। पाँचवीं दुर्गा का नाम स्कन्दमाता है। देवी के छठे रूप को कात्यायनी कहते है। सातवाँ कालरात्रि और आठवाँ स्वरूप महागौरी के नाम से प्रसिद्ध है। नवीं दुर्गा का नाम सिद्धिदात्री है। ये सब नाम सर्वज्ञ महात्मा वेद भगवान् के द्वारा ही प्रतिपादित हुए हैं॥ ३—५॥

जो मनुष्य अग्नि में जल रहा हो, रणभूमि में शत्रुओं से घिर गया हो, विषम संकट में फँस गया हो तथा इस प्रकार भय से आतुर होकर जो भगवती दुर्गा की शरण में प्राप्त हुए हों, उनका कभी कोई अमङ्गल नहीं होता। युद्ध के समय संकट में पड़ने पर भी उनके ऊपर कोई विपत्ति नहीं दिखायी देती। उन्हें शोक, दुःख और भय की प्राप्ति नहीं होती॥ ६—७॥

जिन्होंने भक्तिपूर्वक देवी का स्मरण किया है, वह निश्चय ही वृद्धि को प्राप्त होते हैं। देवेश्वरी! जो तुम्हारा चिन्तन करते हैं, उनकी तुम निःसंदेह रक्षा करती हो॥ ८॥

चामुण्डा देवी प्रेत पर आरूढ़ हैं। वाराही भैंसे पर सवारी करती हैं। ऐन्द्री का वाहन ऐरावत हाथी है। वैष्णवी देवी गरुड़ पर आसन जमाती हैं॥ ९॥

माहेश्वरी वृषभ पर आरूढ़ होती है। कौमारी का वाहन मयूर है। भगवान् विष्णु की प्रियतमा लक्ष्मीदेवी कमल के आसन पर विराजमान हैं और वह हाथों में कमल धारण किये हुए हैं॥ १०॥

वृषभ पर आरूढ ईश्वरी देवी ने श्वेतरूप धारण कर रखा है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

ब्राह्मी देवी हंस पर बैठी हुई हैं और सब प्रकार के आभूषणों से विभूषित हैं ॥ ११ ॥

इस प्रकार ये सभी देवियाँ सब प्रकार की योगशक्तियों से सम्पन्न हैं। इनके अतिरिक्त और भी बहुत सी देवियाँ हैं, जो अनेक प्रकार के आभूषणों की शोभा से युक्त तथा अनेकों प्रकार के रत्नों से सुशोभित हैं ॥ १२ ॥

ये सम्पूर्ण देवियाँ क्रोध से भरी हुई हैं और भक्तों की रक्षा के लिये रथ पर बैठी दिखायी देती हैं। ये शङ्ख, चक्र, गदा, शक्ति, हल और मुसल, खेटक और तोमर, परशु तथा पाश, कुन्त और त्रिशूल एवं उत्तम शार्ङ्गधनुष आदि अस्त्र-शस्त्र अपने हाथों में धारण करती हैं। ॥ १३-१४ ॥

दैत्यों के शरीर का नाश करना, भक्तों को अभय दान देना और देवताओं का कल्याण करना—यही उनके शस्त्रधारण का उद्देश्य है। महान् रौद्ररूप, अत्यन्त घोर पराक्रम, महान् बल और महान् उत्साह वाली देवी तुम महान भय का नाश करने वाली हो, तुम्हें नमस्कार है ॥ १५-१६ ॥

तुम्हारी ओर देखना भी कठिन है। शत्रुओं का भय बढ़ाने वाली जगदम्बिके! मेरी रक्षा करो। पूर्व दिशा में ऐन्द्री मेरी रक्षा करें। अग्निकोण में अग्निशक्ति, दक्षिण कोण में वाराही तथा नैऋत्यकोण में खड्गधारिणी मेरी रक्षा करे। पश्चिम दिशा में वारुणी और वायव्यकोण में मृग पर सवारी करने वाली देवी मेरी रक्षा करें। उत्तर दिशा में कौमारी और ईशान कोण में शूलधारिणी देवी रक्षा करें। हे ब्रह्माणी! तुम ऊपर की ओर से मेरी रक्षा करो और वैष्णवी देवी नीचे की ओर से मेरी रक्षा करें इसी प्रकार शव को अपना वाहन बनाने वाली चामुण्डा देवी दसों दिशाओं में मेरी रक्षा करें। जया आगे से और

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

विजया पीछे की ओर से मेरी रक्षा करें। वामभाग में अजिता और दक्षिणभाग में अपराजिता मेरी रक्षा करें। उद्योतिनी शिखा की रक्षा करें। उमा मेरे मस्तक पर विराजमान होकर रक्षा करें॥ १७-२१॥

ललाट में मालाधरी रक्षा करे और यशस्विनी देवी मेरी भौंहों की संरक्षण व्यवस्था करें। भौंहों के मध्य भाग में त्रिनेत्रा और नथुनों की यमघण्टा देवी रक्षा करे। कालिका देवी कपोलों की तथा भगवती शांकरी कानों के मूल भाग की रक्षा करें। नासिका में सुगन्धा और ऊपर के ओष्ठ में चर्चिका देवी रक्षा करें। नीचे के ओष्ठ में अमृतकला तथा जिह्वा में सरस्वती देवी रक्षा करें। कौमारी दाँतों की, चण्डिका कण्ठप्रदेश की रक्षा करें। चित्रघण्टा गले की घाँटी की और महामाया तालु में रहकर रक्षा करें। कामाक्षी चिबुक (ठोंढ़ी) की और सर्वमङ्गला मेरी वाणी की रक्षा करें। भद्रकाली ग्रीवा में और धनुर्धरी मेरुदण्ड में रहकर रक्षा करें॥ २२-२६॥

कण्ठ के बाहरी भाग में नीलग्रीवा और कण्ठ की नली में नलकूबरी रक्षा करें। दोनों कंधों में खड्गिनी और मेरी दोनों भुजाओं की वज्रधारिणी रक्षा करे। दोनों हाथों की दण्डिनी और अंगुलियों की अम्बिका रक्षा करें। शूलेश्वरी नखों की रक्षा करें। कुलेश्वरी कुक्षि (पेट) में रहकर रक्षा करें॥ २७-२८॥

महोदवी दोनों स्तनों की और शोकविनाशिनी देवी मन की रक्षा करें। ललिता देवी हृदय में और शूलधारिणी उदर में रहकर रक्षा करें। नाभि में कामिनी और गुह्यभाग की गुह्येश्वरी रक्षा करें। पूतना और कामिका लिङ्ग की और महिषवाहिनी गुदा की रक्षा करें॥ २९-३०॥

भगवती कटिभाग की और विन्ध्यवासिनी घुटनों की रक्षा करें। सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाली महाबला देवी दोनों पिण्डलियों की रक्षा करें। नारसिंही दोनों घुट्टियों की और तैजसी देवी दोनों चरणों के

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पृष्ठभाग की रक्षा करे। श्रीदेवी पैरों की अंगुलियों की और तलवासिनी देवी पैरों के तलुओं में रहकर रक्षा करें॥ ३१-३२॥

दंष्ट्राकराली देवी नखों की और ऊर्ध्वकेशिनी देवी केशों की रक्षा करें। रोमावलियों की छिद्रों में कौबेरी और त्वचा की वागीश्वरी देवी रक्षा करें। पार्वती देवी रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी और मेद की रक्षा करें। आँतों की कालरात्रि और पित्त की मुकुटेश्वरी रक्षा करें। मूलाधार आदि कमल-कोशों में पद्मावमी देवी और कफ में चूड़ामणी देवी स्थित होकर रक्षा करें। नख के तेज की ज्वालामुखी रक्षा करें। जिसका किसी भी अस्त्र से भेद नहीं हो सकता, वह अभेद्या देवी शरीर की समस्त संधियों में रहकर रक्षा करें। ब्रह्माणी! आप मेरे वीर्य की रक्षा करें। छत्रेश्वरी छाया की तथा धर्मधारिणी देवी मेरे अहंकार मन और बुद्धि की रक्षा करें। वज्रहस्ता देवी मेरे प्राण, अपान, व्यान, उदान और समाऩ वायु की रक्षा करे। भगवती कल्याणशोभना मेरे प्राण की रक्षा करे। रस, रूप, गन्ध, शब्द और स्पर्श—इन विषयों का अनुभव करते समय योगिनी देवी रक्षा करे तथा सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण की रक्षा सदा नारायणी देवी करे॥ ३३-३८॥

वाराही आयु की रक्षा करे। वैष्णवी धर्म की रक्षा करे तथा चक्रिणी देवी यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्या की रक्षा करे। इन्द्राणी! आप मेरे गोत्र की रक्षा करें। चण्डिके! तुम मेरे पशुओं की रक्षा करो। महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करे और भैरवी पत्नी की रक्षा करे। मेरे पथ की सुपथा तथा मार्ग की क्षेमंकरी रक्षा करे। राजा के दरबार में महालक्ष्मी रक्षा करे तथा सब ओर व्याप्त रहने वाली विजया देवी सम्पूर्ण भयतापों से मेरी रक्षा करे।

देवी! जो स्थान कवच में नहीं कहा गया है अथवा रक्षा से रहित रह गया है, वह सब तुम्हारे द्वारा सुरक्षित हों; क्योंकि आप

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

विजयशालिनी और पापनाशिनी हो॥ ३९-४२॥

कवच के द्वारा सब ओर से सुरक्षित मनुष्य जहाँ-जहाँ भी जाता है, वहाँ-वहाँ उसे धन लाभ होता है तथा सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि करने वाली विजय की प्राप्ति होती है। वह जिस-जिस अभीष्ट वस्तु का चिन्तन करता है वह उसको निश्चय ही प्राप्त कर लेता है। वह पुरुष इस पृथ्वी पर महान् ऐश्वर्य का भागी होता है। कवच से सुरक्षित मनुष्य निर्भय हो जाता है, युद्ध में उसकी पराजय नहीं होती तथा वह तीनों लोकों में पूजनीय होता है। देवी का यह कवच देवताओं के लिये भी दुर्लभ है॥ ४३-४६॥

जो प्रतिदिन नियमपूर्वक तीनों संध्याओं के समय श्रद्धा के साथ इसका पाठ करता है, उसे दैवी कला प्राप्त होती है तथा वह तीनों लोकों में कहीं भी पराजित नहीं होता। इतना ही नहीं, वह अपमृत्यु से रहित हो १०० से भी अधिक वर्षों तक जीवित रहता है। उसकी मकरी, चेचक और कोढ़ आदि सम्पूर्ण व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं। कनेर, भाँग, अफीम, धतूरे आदि का स्थावर विष, साँप और बिच्छू आदि के काटने से चढ़ा हुआ जङ्गम विष तथा अहिफेन और तेल के संयोग आदि से बनने वाला कृत्रिम विष—ये सभी प्रकार के विष दूर हो जाते हैं, उस पर उनका कोई असर नहीं होता। इस पृथ्वी पर मारण मोहन आदि जितने आभिचारक (तान्त्रिक) प्रयोग होते हैं तथा इस प्रकार के जितने मन्त्र, यन्त्र होते हैं, वे सब इस कवच को हृदय में धारण कर लेने पर उस मनुष्य को देखते ही नष्ट हो जाते हैं। ये ही नहीं, पृथ्वी पर विचरने वाले ग्रामदेवता, आकाशचारी देवविशेष, जल के सम्बन्ध से प्रकट होने वाले गण, उपदेश मात्र से सिद्ध होने वाले देवता, अपने जन्म के साथ प्रकट होने वाले देवता, कुलदेवता, माला (कण्ठमाला आदि), डाकिनी, शाकिनी, अन्तरिक्ष में विचरने

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

वाली अत्यन्त बलवती भयानक डाकिनियाँ, ग्रह, भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्माण्ड और भैरव आदि अनिष्टकारक देवता भी; हृदय में कवच धारण किये रहने पर उस मनुष्य को देखते ही भाग जाते हैं। कवचधारी पुरुष को राजा से सम्मान-वृद्धि प्राप्त होती है। यह कवच मनुष्य के तेज की वृद्धि करने वाला और उत्तम है॥ ४९-५२॥

कवच का पाठ करने वाला पुरुष अपनी कीर्ति से विभूषित भूतल पर अपने सुयश के साथ-साथ वृद्धि को प्राप्त होता है। जो पहले कवच का पाठ करके उसके बाद सप्तशती चण्डी का पाठ करता है उसकी जब तक वन, पर्वत और वन-काननों सहित यह पृथ्वी टिकी रहती है, तब तक यहाँ पुत्र-पौत्र आदि कुल की परम्परा बनी रहती है। फिर देह का अन्त होने पर वह पुरुष भगवती महामाया के प्रसाद से उस नित्य परमपद को प्राप्त करता है, जो देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। वह सुन्दर दिव्य रूप धारण करता है और शिव के साथ आनन्द का भागी होता है॥ ५५-५६॥

॥ देवी कवच हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अथ अर्गला स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

जय त्वं देवी चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

मधुकैटभविद्रविविधातृवरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विशो जहि ॥ ३ ॥

महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विशो जहि ॥ ४ ॥

रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विशो जहि ॥ ५ ॥

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विशो जहि ॥ ६ ॥

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ७ ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ८ ॥
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ९ ॥
स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वांचण्डिके व्याधिनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १०॥
चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ११॥
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जय देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १२॥
विधेहि द्विषतां नाशं विधेह बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १३॥
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १४॥
सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १५॥
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १६॥
प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १७॥
चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १८॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १९॥
हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २०॥
इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ २१॥
देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ २२॥
देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ २३॥
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्॥ २४॥
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम्॥ ॐ॥ २५॥

॥ इति देव्या अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

अर्गला स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

ॐ चण्डिका देवी का नमस्कार है।

मार्कण्डेयजी बोले— १. जयन्ती, २. मङ्गला, ३. काली, ४. भद्रकाली ५. कपालिनी, ६. दुर्गा, ७. क्षमा, ८. शिवा, ९. धात्री, १०. स्वाहा और ११. स्वधा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

इन नामों से प्रसिद्ध जगदम्बिके! तुम्हें मेरा नमस्कार हो। देवी चामुण्डे! तुम्हारी जय हो। सम्पूर्ण प्राणियों का कष्ट हरने वाली देवी! तुम्हारी जय हो। सबमें व्याप्त रहने वाली देवी! तुम्हारी जय हो। कालरात्रि! तुम्हें नमस्कार हो॥ १-२॥

मधु और कैटभ को मारने वाली तथा ब्रह्माजी को वरदान देने वाली देवी! तुम्हें नमस्कार है। तुम मुझे रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो, जय (मोह पर विजय) दो, यश (मोह-विजय तथा ज्ञान-प्राप्तिरूप यश) दो और काम क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥ ३॥

महिषासुर का नाश करने वाली तथा भक्तों को सुख देने वाली देवी! तुम्हें नमस्कार है। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो, रक्तबीज का वध और चण्ड-मुण्ड का विनाश करने वाली देवी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो, और काम क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो शुम्भ और निशुम्भ तथा धूम्रलोचन का मर्दन करने वाली देवी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो सबके द्वारा वन्दित युगलचरणों वाली तथा सम्पूर्ण सौभाग्य प्रदान करने वाली देवी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो तुम्हारे रूप और चरित्र अचिन्त्य हैं। तुम समस्त शत्रुओं का नाश करने वाली हो। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो पापों को दूर करने वाली चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक तुम्हारे चरणों में सर्वदा मस्तक झुकाते हैं, उन्हें तुम रूप दो, जय दो, यश दो और क़ाम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥ ४-९॥

रोगों का नाश करने वाली चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक तुम्हारी स्तुति करते हैं, उन्हें तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। चण्डिके! इस संसार में जो भक्तिपूर्वक

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

तुम्हारी पूजा करते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। मुझे सौभाग्य और आरोग्य दो, परम सुख दो, रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥ १०-१२॥

जो मुझसे द्वेष रखते हों, उनका नाश करो और मेरे बल की वृद्धि करो। रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥ १३॥

देवी! मेरा कल्याण करो। मुझे उत्तम सम्पत्ति प्रदान करो। रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। अम्बिके! देवता और असुर—दोनों ही अपने माथे के मुकुट की मणियों को तुम्हारे चरणों पर घिसते हैं। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। तुम अपने भक्तजनों को विद्वान, यशस्वी और लक्ष्मीवान बनाओ और तथा रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥ १४-१६॥

प्रचण्ड दैत्यों के दर्प का दलन करने वाली चण्डिके! मुझ शरणागत को रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।

चतुर्मुख ब्रह्माजी के द्वारा प्रशंसित चार भुजाधारिणी परमेश्वरी! रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो देवी अम्बिके! भगवान् विष्णु नित्य-निरन्तर भक्तिपूर्वक तुम्हारी स्तुति करते रहते हैं। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। हिमाचल की कन्या पार्वती के पति महादेवजी के द्वारा प्रशंसित होने वाली परमेश्वरी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। शचीपति इन्द्र के द्वारा सद्भाव से पूजित होने वाली परमेश्वरी! तुम रूप दो, जय

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥ १७-२१ ॥

प्रचण्ड भुजदण्डों वाले दैत्यों का घमण्ड चूर करने वाली देवी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। देवी अम्बिके! तुम अपने भक्तजनों को सदा असीम आनन्द प्रदान करती रहती हो। मुझे रूप दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। मन की इच्छा के अनुसार चलने वाली मनोहर पत्नी प्रदान करो, जो मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करके सप्तशती रूपी महास्तोत्र का पाठ करता है, वह सप्तशती की जपसंख्या से मिलने वाले श्रेष्ठ फल को प्राप्त करता है। साथ ही वह प्रचुर सम्पत्ति भी प्राप्त कर लेता है ॥ २२-२५ ॥

॥ अर्गला स्तोत्र हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अथ कीलक स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहासरस्वती देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे।
श्रेयः प्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे॥ १॥

सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम्।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः॥ २॥

सिद्ध्यन्तयुच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्ध्यति॥ ३॥

न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते।
विना जाप्येन सिद्ध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम्॥ ४॥

समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम्॥ ५॥

स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम्॥ ६॥

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेवं न संशयः।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः॥ ७॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति।
इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्॥ ८ ॥
यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः॥ ९ ॥
न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते।
नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात्॥ १० ॥
ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः॥ ११ ॥
सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने।
तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम्॥ १२ ॥
शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत्॥ १३ ॥
ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः।
शत्रुहानिः परो मोक्षःस्तूयते सा न किं जनैः॥ ॐ॥ १४ ॥

॥ इति देव्याः कीलकस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

कीलक स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है।

मार्कण्डेयजी बोले—विशुद्ध ज्ञान ही जिनका शरीर है, तीनों वेद ही जिनके तीन दिव्य नेत्र हैं, जो कल्याणप्राप्ति के हेतु हैं तथा अपने मस्तक पर अर्धचन्द्र का मुकुट धारण करते हैं, उन भगवान शिव को

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

नमस्कार है ॥ १ ॥ मन्त्रों का जो अभिकीलक है अर्थात् मन्त्रों की सिद्धि में विघ्न उपस्थित करने वाले शापरूपी कीलक का जो निवारण करने वाला है, उस सप्तशतीस्तोत्र को सम्पूर्ण रूप से जानना चाहिए। यद्यपि सप्तशती के अतिरिक्त अन्य मन्त्रों के जप में भी जो निरन्तर लगा रहता है, वह भी कल्याण का भागी होता है उसके भी उच्चाटन आदि कर्म सिद्ध होते हैं तथा उसे भी समस्त दुर्लभ वस्तुओं की प्राप्ति हो जाती है, तथापि जो अन्य मन्त्रों का जप न करके केवल इस सप्तशती नामक स्तोत्र से ही देवी की स्तुति करते हैं, उन्हें स्तुति मात्र से ही देवी सिद्ध हो जाती है ॥२-३ ॥ उन्हें अपने कार्य की सिद्धि के लिये मन्त्र, औषधि तथा अन्य किसी साधन के उपयोग की आवश्यकता नहीं रहती। बिना जप के ही उसके उच्चाटन आदि समस्त आभिचारिक कर्म सिद्ध हो जाते हैं इतना ही नहीं उनकी सम्पूर्ण अभीष्ट वस्तुएँ भी सिद्ध होती हैं। लोगों के मन में यह शंका थी कि 'जब केवल सप्तशती की उपासना से अथवा सप्तशती को छोड़कर अन्य मन्त्रों की उपासना से भी समान रूप से सब कार्य सिद्ध होते हैं, तब उनमें श्रेष्ठ कौन सा साधन है?' इस पर भगवान् शिव ने अपने पास आये हुए जिज्ञासुओं को बताया कि यह सप्तशती नामक सम्पूर्ण स्तोत्र ही सर्वश्रेष्ठ एवं शुभदायी है तब भगवती चण्डिका के सप्तशती नामक स्तोत्र को महादेवजी ने गुप्त कर दिया। सप्तशती के पाठ से जो पुण्य प्राप्त होता है, उसकी कभी समाप्ति नहीं होती, किंतु अन्य मन्त्रों के जपजन्य पुण्य की समाप्ति हो जाती है। अतः भगवान शिव ने अन्य मन्त्रों की अपेक्षा जो सप्तशती की ही श्रेष्ठता का निर्णय किया ॥ ४-६ ॥ अन्य मन्त्रों का जप करने वाला पुरुष भी यदि सप्तशती के स्तोत्र और जप का अनुष्ठान कर ले तो वह भी पूर्णरूप से ही कल्याण का भागी होता है, इसमें तनिक भी सन्देह

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

नहीं है। जो साधक कृष्णपक्ष की चतुर्दशी अथवा अष्टमी को एकाग्रचित्त होकर भगवती की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है और फिर उसे प्रसाद रूप में ग्रहण करता है, उसी पर भगवती प्रसन्न होती हैं, अन्यथा उनकी प्रसन्नता नहीं प्राप्त होती। इस पर सिद्धि के प्रतिबन्धक रूप कीलन के द्वारा महादेवी जी ने इस स्तोत्र को कीलित कर रखा है॥ ७-८॥ जो ऊपर बताई गई विधि से निष्कीलन करके इस सप्तशती-स्तोत्र का प्रतिदिन स्पष्ट उच्चारणपूर्वक पाठ करता है, वह मनुष्य सिद्ध हो जाता है, वही देवी का पार्षद होता है और वही गन्धर्व भी होता है। सर्वत्र विचरते रहने पर भी इस संसार में उसे कहीं भी भय नहीं होता। वह अकाल मृत्यु के वश में नहीं पड़ता तथा देह त्यागने के बाद मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ ९-१०॥ अतः कीलन को जानकर उसका परिहार करके ही सप्तशती पाठ आरम्भ करे। जो ऐसा नहीं करता, उसका नाश हो जाता है। इसलिये कीलक और निष्कीलन का ज्ञान प्राप्त करने पर ही यह स्तोत्र निर्दोष होता है और विद्वान पुरुष का इस निर्दोष स्तोत्र का ही पाठ आरम्भ करते हैं। स्त्रियों में जो कुछ भी सौभाग्य आदि दृष्टिगोचर होता है, वह सब देवी के प्रसाद का ही फल है। अतः इस कल्याणदायक स्तोत्र का सदा जप करना चाहिये॥११-१२॥ इस स्तोत्र का मन्द स्वर में पाठ करने पर कम फल की प्राप्ति होती है और उच्च स्वर से पाठ करने पर पूर्ण फल की सिद्धि होती है। अतः उच्च स्वर से ही उसका पाठ आरम्भ करना चाहिए ॥ १३॥ जिनके प्रसाद से ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, सम्पत्ति, शत्रु का नाश तथा मोक्ष की भी सिद्धि होती है, उन कल्याणदायी जगदम्बा की स्तुति मनुष्य क्यों नहीं करते!॥ १४॥

॥ कीलक स्तोत्र हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी मध्यम चरित्र (प्रथम)

श्री दुर्गासप्तशती द्वितीयोऽध्यायः

विनियोगः

ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः, महालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक् छन्दः, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्त्वम्, यजुर्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥

'ॐ ह्रीं' ऋषि उवाच॥ १॥

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे॥ २॥

तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम्।
जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः॥ ३॥

ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम्।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ॥ ४॥

यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम्॥ ५॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति॥ ६ ॥
स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना॥ ७ ॥
एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम्॥ ८ ॥
इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ॥ ९ ॥
ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च॥ १०॥
अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत॥ ११॥
अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम्॥ १२॥
अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा॥ १३॥
यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्।
याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा॥ १४॥
सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः॥ १५॥
ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका॥ १६॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा॥ १७॥
भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च।
अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा॥ १८॥
ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः॥ १९॥
शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः॥ २०॥
शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी॥ २१॥
वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात्॥ २२॥
कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ।
प्रजापतिश्चाक्षमालं ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम्॥ २३॥
समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम्॥ २४॥
क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च॥ २५॥
अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम्॥ २६॥
अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम्॥ २७॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम्।
अम्लानमङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम्॥ २८॥
अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्।
हिमवान् वाहनं सिंह रत्नानि विविधानि च॥ २९॥
ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम्॥ ३०॥
नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा॥ ३१॥
सम्मानिता ननोदाच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः॥ ३२॥
अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे॥ ३३॥
चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम्॥ ३४॥
तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलौक्यममरारयः॥ ३५॥
सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः॥ ३६॥
अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा॥ ३७॥
पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम्॥ ३८॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्त संस्थिताम्।
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम्॥ ३९॥
शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम्।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः॥ ४०॥
युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः॥ ४१॥
अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः॥ ४२॥
अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे।
गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः॥ ४३॥
वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत।
बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः॥ ४४॥
युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः॥ ४५॥
युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः।
कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा॥ ४६॥
हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा॥ ४७॥
युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे॥ ४८॥
देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः।
सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका॥ ४९॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी।
अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः ॥५०॥
मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी।
सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी ॥५१॥
चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः।
निःश्वासान् ममुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ॥५२॥
त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्त्रशः।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ॥५३॥
नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः।
अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथापरे ॥५४॥
मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ॥५५॥
खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्।
पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान् ॥५६॥
असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्।
केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ॥५७॥
विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते।
वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥५८॥
केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥५९॥
श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः।
केषांचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥६०॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः।
विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः॥६१॥
एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः॥६२॥
कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः॥६३॥
कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः।
तिष्ठ तिष्ठति भाषान्तो देवीमन्ये महासुराः॥६४॥
पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा।
अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः॥६५॥
शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम्॥६६॥
क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम्॥६७॥
स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिवा विचिन्वति॥६८॥
देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः।
यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि॥ ॐ॥६९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी मध्यम चरित्र (प्रथम)

(हिन्दी अनुवाद)

ॐ मध्यम चरित्र के विष्णु ऋषि, महालक्ष्मी देवता, उष्णिक् छन्द, शाकम्भरी शक्ति, दुर्गा बीज, वायु तत्व और यजुर्वेद स्वरूप है। श्रीमहालक्ष्मी की प्रसन्नता के लिये मध्यम चरित्र के पाठ में इसका विनियोग है।

मै कमल के आसन पर बैठी हुई प्रसन्न मुख वाली महिषासुर-मर्दिनी भगवती महालक्ष्मी का भजन करता हूँ, जो अपने हाथों में अक्षमाला, फरसा, गदा, बाण, वज्र, पद्म, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, खड्ग, ढाल, शङ्ख, घण्टा, मधुपात्र, शूल, पाश और चक्र धारण करती हैं।

ऋषि बोले—पूर्वकाल में देवताओं और असुरों में पूरे सौ वर्षों तक घोर संग्राम हुआ था। उसमें असुरों का स्वामी महिषासुर था और देवताओं के नायक इन्द्र थे। उस युद्ध में देवताओं की सेना महाबली असुरों से परास्त हो गयी। सम्पूर्ण देवताओं को जीतकर महिषासुर इन्द्र बन बैठा॥ १-३ ॥

तब पराजित देवता प्रजापति ब्रह्माजी को आगे करके उस स्थान पर गये, जहाँ भगवान् शंकर और विष्णु विराजमान थे॥ ४॥

देवताओं ने महिषासुर के पराक्रम तथा अपनी पराजय का यथावत् वृत्तान्त उन दोनों देवेश्वरों से विस्तारपूर्वक कह सुनाया॥ ५॥

वे बोले—'भगवन ! महिषासुर सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु चन्द्रमा, यम, वरुण तथा अन्य देवताओं के भी अधिकार छीनकर स्वयं ही सबका अधिष्ठाता बन बैठा है॥ ६॥

उस दुरात्मा महिष ने समस्त देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

है। अब वे मनुष्यों की भाँति पृथ्वी पर विचरते हैं। दैत्यों की यह सारी बातें हमने आप लोगों से कह सुनायी। अब हम आपकी ही शरण में आये हैं। उसके वध का कोई उपाय सोचिये'॥ ७-८॥

इस प्रकार देवताओं के वचन सुनकर भगवान विष्णु और शिव ने दैत्यों पर बड़ा क्रोध किया। उनकी भौंहे तन गयीं और मुँह टेढ़ा हो गया॥ ९॥

तब अत्यन्त कोप से भरे हुए चक्रपाणि श्रीविष्णु के मुख से एक महान तेज प्रकट हुआ। इसी प्रकार ब्रह्मा, शंकर तथा इन्द्र आदि अन्य देवताओं के शरीर से भी बड़ा भरी तेज निकला। वह मिलकर एक हो गया।

महान् तेज का वह पुञ्ज जलते हुए पर्वत सा जान पड़ा। देवताओं ने देखा, वहाँ उनकी ज्वालाएँ सम्पूर्ण दिशाओं में व्याप्त हो रही थीं॥ १०-१२॥

सम्पूर्ण देवताओं के शरीर से प्रकट हुए उस तेज की कहीं तुलना नहीं थी। एकत्रित होने पर वह एक नारी के रूप में परिणत हो गया और वह अपने प्रकाश से तीनों लाकों में व्याप्त जान पड़ा॥ १३॥

भगवान् शंकर का जो तेज था, उससे उस देवी का मुख प्रकट हुआ। यमराज के तेज से उसके सिर में बाल उत्पन्न हुए। श्रीविष्णु भगवान् के तेज से उसकी भुजाएँ उत्पन्न हुई॥ १४॥

चन्द्रमा के तेज से दोनों स्तनों का और इन्द्र के तेज से कटिप्रदेश का प्रादुर्भाव हुआ। वरुण के तेज से जङ्घा और पिंडली तथा पृथ्वी के तेज से नितम्ब भाग प्रकट हुआ॥ १५॥

ब्रह्मा के तेज से दोनों चरण और सूर्य के तेज से उनकी अँगुलियाँ उत्पन्न हुईं। वसुओं के तेज से हाथों की अँगुलियाँ और कुबेर के तेज से नासिका प्रकट हुईं॥ १६॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

उस देवी के दाँत प्रजापति के तेज से और तीनों नेत्र अग्नि के तेज से प्रकट हुए थे॥ १७॥

उसकी भौंहे संध्या के और कान वायु के तेज से उत्पन्न हुए थे। इसी प्रकार अन्यान्य देवताओं के तेज से भी उस कल्याणमयी देवी का आविर्भाव हुआ। तदनन्तर समस्त देवताओं के तेजपुञ्ज से प्रकट हुई देवी को देखकर महिषासुर के सताये हुए देवता बहुत प्रसन्न हुए॥ १८-१९॥

पिनाकधारी भगवान् शंकर ने अपने शूल से एक शूल निकालकर उन्हें दिया, फिर भगवान् विष्णु ने भी अपने चक्र से चक्र उत्पन्न करके भगवती को अर्पण किया॥ २०॥

वरुण ने भी शङ्ख भेंट किया, अग्नि ने उन्हें शक्ति दी और वायु ने धनुष तथा बाण से भरे हुए दो तरकस प्रदान किये॥ २१॥ सहस्त्र नेत्रों वाले देवराज इन्द्र ने अपने वज्र से वज्र उत्पन्न करके दिया और ऐरावत हाथी से उतारकर एक घण्टा भी प्रदान किया॥ २२॥

यमराज ने कालदण्ड से दण्ड, वरुण ने पाश, प्रजापति ने स्फटिक की माला तथा ब्रह्माजी ने कमण्डलु भेंट किया॥ २३॥

सूर्य ने देवी के समस्त रोम-कूपों में अपनी किरणों का तेज भर दिया। काल ने उन्हें चमकती हुई ढाल और तलवार दी॥ २४॥

क्षीर सागर ने उज्जवल हार तथा कभी जीर्ण न होने वाले दो दिव्य वस्त्र भेंट किये। साथ ही उन्होंने दिव्य चूड़ामणि, दो कुण्डल, कड़े, उज्जवल अर्धचंद्र, सब बाहुओं के लिये केयूर, दोनों चरणों के लिये निर्मल नूपुर, गले की सुन्दर हँसली और सब अँगुलियों में पहनने के लिये रत्नों की बनी अँगूठियाँ भी दीं। विश्वकर्मा ने उन्हें अत्यन्त निर्मल फरसा भेंट किया॥ २५-२७॥

साथ ही अनेक प्रकार के अस्त्र और अभेद्य कवच दिये, इनके

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सिवाय मस्तक और वक्षस्थल पर धारण करने के लिये कभी न मुरझाने वाले कमलों की मालाएँ दीं। जलधि ने उन्हें सुन्दर कमल का फूल भेंट किया। हिमालय ने सवारी के लिये सिंह तथा भाँति-भाँति के रत्न समर्पित किये। धनाध्यक्ष कुबेर ने मधु से भरा पान पात्र दिया तथा सम्पूर्ण नागों के राजा शेष ने, जो इस पृथ्वी को धारण करते हैं, उन्हें बहुमुल्य मणियों से विभूषित नागहार भेंट दिया।

इसी प्रकार अन्य देवताओं ने भी आभूषण और अस्त्र-शस्त्र देकर देवी का सम्मान किया। तत्पश्चात् उन्होंने बारम्बार अट्टहासपूर्वक उच्चस्वर से गर्जना की। उनके भयंकर नाद से सम्पूर्ण आकाश गूँज उठा॥ २८-३२॥

देवी का वह अत्यन्त उच्चस्वर से किया हुआ सिंहनाद कहीं समा न सका, आकाश उसके सामने छोटा प्रतीत होने लगा। उससे बड़ी भयानक प्रतिध्वनि हुई, जिससे सम्पूर्ण विश्व में हलचल मच गई और समुद्र काँप उठे॥ ३३॥

पृथ्वी डोलने लगी और समस्त पर्वत हिलने लगे। उस समय देवताओं ने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सिंहवाहिनी भवानी से कहा— 'देवी! तुम्हारी जय हो'॥ ३४॥

साथ ही महर्षियों ने भक्तिभाव से विनम्र होकर उनकी स्तुति की। सम्पूर्ण त्रिलोकी को क्षोभग्रस्त देख दैत्यगण अपनी समस्त सेना को कवच आदि से सुसज्जित कर, हाथों में हथियार लेकर सहसा उठकर खड़े हो गये। उस समय महिषासुर ने बड़े क्रोध में आकर कहा—'ओह! यह क्या हो रहा है?' फिर वह सम्पूर्ण असुरों से घिरकर उस सिंहनाद की ओर लक्ष्य करके दौड़ा और आगे पहुँचकर उसने देवी को देखा, जो अपने प्रभाव से तीनों लोकों को प्रकाशित कर रही थीं॥ ३५-३७॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

उनके चरणों के भार से पृथ्वी दबी जा रही थी। माथे के मुकुट से आकाश में रेखा-सी खिंच रही थी तथा वे अपने धनुष की टङ्कार से सातों पातालों को क्षुब्ध कर देती थीं॥ ३८॥ देवी अपनी हजारों भुजाओं से सम्पूर्ण दिशाओं को आच्छादित करके खड़ी थीं। तदनन्तर उनके साथ दैत्यों का युद्ध छिड़ गया॥ ३९॥ नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार से सम्पूर्ण दिशाएँ चमकने लगीं। चिक्षुर नामक महान असुर जो महिषासुर का सेनानायक था॥ ४०॥

वह देवी के साथ युद्ध करने लगा। अन्य दैत्यों की चतुरङ्गिणी सेना साथ लेकर चामर भी लड़ने लगा। साठ हजार रथियों के साथ आकर उदग्र नामक महादैत्य ने लोहा लिया॥ ४१॥ एक करोड़ रथियों को साथ लेकर महाहनु नामक दैत्य युद्ध करने लगा। जिसके रोएँ तलवार के समान तीखे थे, वह असिलोमा नाम का महादैत्य पाँच करोड़ रथी सैनिकों सहित युद्ध में आ डटा॥ ४२॥

साठ लाख रथियों से घिरा हुआ वाष्कल नामक दैत्य भी उस युद्धभूमि में लड़नेलगा। परिवारित नामक राक्षस हाथीसवार और घुड़सवारों के अनेक दलों तथा एक करोड़ रथियों की सेना लेकर युद्ध करने लगा।

बिडाल नामक दैत्य पाँच अरब रथियों से घिरकर लोहा लेने लगा। इनके अतिरिक्त और भी हजारों महादैत्य रथ, हाथी और घोड़ों की सेना साथ लेकर वहाँ देवी के साथ युद्ध करने लगे। स्वयं महिषासुर उस रणभूमि में कोटि-कोटि सहस्त्र रथ, हाथी और घोड़ों की सेना से घिरा खड़ा था।

वे दैत्य देवी के साथ तोमर, भिन्दिपाल, शक्ति, मूसल, खड्ग, परशु और पट्टिश आदि अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार करते हुए युद्ध कर रहे थे। कुछ दैत्यों ने उन पर शक्ति का प्रहार किया, कुछ लोगों ने पाश

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

फेंके ॥ ४३-४८ ॥ तथा कुछ दूसरे दैत्यों ने खड्गप्रहार करके देवी को मार डालने का प्रयत्न किया। देवी ने भी क्रोध में भरकर खेल-खेल में ही अपने अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा करके दैत्यों के वे समस्त अस्त्र-शस्त्र काट डाले। उनके मुख पर परिश्रम या थकावट का भी चिह्न नहीं था, देवता और ऋषि उनकी स्तुति करते थे और वे भगवती परमेश्वरी दैत्यों के शरीरों पर अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा करती रहीं। देवी का वाहन सिंह भी क्रोध से भरकर गर्दन के बालों को हिलाता हुआ असुरों की सेना में इस प्रकार विचरने लगा, मानों वनों में दावानल फैल रहा हो। रणभूमि में दैत्यों के साथ युद्ध करती हुई अम्बिका देवी ने जितने निःश्वास छोड़े, वे सभी तत्काल सैकड़ों-हजारों गणों के रूप में प्रकट हो गये और परशु, भिन्दिपाल, खड्ग तथा पट्टिश आदि अस्त्रों द्वारा असुरों का सामना करने लगे। देवी की शक्ति से बढ़ते हुए वे गण असुरों का नाश करते हुए नगाड़ा और शङ्ख आदि बाजे बजाने लगे ॥ ४९-५४ ॥

उस संग्राम-महोत्सव में कितने ही गण मृदङ्ग बजा रहे थे। तदन्तर देवी ने त्रिशूल से, गदा से, शक्ति की वर्षा से और खड्ग आदि से सैकड़ों महादैत्यों का संहार कर डाला। कितनों को घण्टे के भयंकर नाद से मूर्च्छित करके मार गिराया ॥ ५५-५६ ॥

बहुत से दैत्यों को पाश से बाँधकर धरती पर घसीटा। कितने ही दैत्य उनकी तीखी तलवार की मार से दो-दो टुकड़े हो गये। कितने ही मूसल की मार से अत्यन्त आहत होकर रक्त वमन करने लगे।कुछ दैत्य शूल से छाती फट जाने के कारण पृथ्वी पर ढेर हो गये। उस रणाङ्गण में बाण समूहों की वृष्टि से कितने ही असुरों की कमर टूट गयी ॥ ५७-५९ ॥ बाज की तरह झपटने वाले देवी पीड़क दैत्यगण अपने प्राणों के हाथ धोने लगे। कइयों की बाँहें छिन्न-भिन्न हो गयीं। कितनों की गर्दने

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कट गयीं। कितने ही दैत्यों के मस्तक कट-कटकर गिरने लगे। कुछ दैत्यों के शरीर मध्यभाग में ही विदीर्ण हो गये। कितने ही महादैत्य जाँघें कट जाने से पृथ्वी पर गिर पड़े। कितनों को ही देवी ने बाँह, एक पैर और एक नेत्रवाले करके दो टुकड़ों में चीर डाला। कितने ही दैत्य मस्तक कट जाने पर भी गिरकर फिर उठ जाते और केवल धड़ के ही रूप में हथियार हाथ में ले देवी के साथ युद्ध करने लगते थे। दूसरे कबन्ध युद्ध के बाजों की लय पर नाचते थे॥ ६०-६३ ॥

कितने ही बिना सिर के धड़ हाथों में खड्ग, शक्ति और ऋष्टि लिये दौड़ते थे तथा दूसरे-दूसरे राक्षस 'ठहरो! ठहरो!!' यह कहते हुए देवी को युद्ध के लिये ललकारते थे। जहाँ वह घोर संग्राम हुआ था, वहाँ भी देवी के गिराये हुए रथ, हाथी, घोड़े और असुरों की लाशों से धरती ऐसी पट गयी गई थीं कि वहाँ चलना असम्भव हो गया था॥ ६४-६५ ॥ दैत्यों की सेना में हाथी, घोड़े और असुरों के शरीरों से इतनी अधिक मात्रा में रक्तपात हुआ था कि थोड़ी ही देर में वहाँ खून की बड़ी-बड़ी नदियाँ बहने लगीं॥ ६६ ॥ जगदम्बा ने दैत्यों की विशाल सेना को क्षण भर में नष्ट कर दिया—ठीक उसी तरह जैसे तृण और काठ के भारी ढेर को आग कुछ ही क्षणों में भस्म कर देती है॥ ६७॥

देवी का सिंह भी गर्दन के बालों को हिला-हिलाकर जोर-जोर से गर्ज़ना करता हुआ असुरों के शरीरों से मानों प्राण खींच लेता था। वहाँ देवी के गणों ने भी उन महादैत्यों के साथ ऐसा युद्ध किया, जिससे आकाश में खड़े हुए देवता गण उन पर प्रसन्न हुए और फूलों की वर्षा करने लगे॥ ६८- ६९ ॥

॥ देवी मध्यम चरित्र (प्रथम) हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी मध्यम चरित्र (द्वितीय)

श्री दुर्गासप्तशती तृतीयोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ उद्यद्भानुसहस्त्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम्॥

'ॐ' ऋषि उवाच॥ १॥

निहन्मानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्॥ २॥
स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः।
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः॥ ३॥
तस्यच्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्।
जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम्॥ ४॥
चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम्।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः॥ ५॥
सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः॥ ६॥
सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान्॥ ७॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः॥ ८ ॥
चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात्॥ ९ ॥
दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः॥ १०॥
हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः॥ ११॥
सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।
हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम्॥ १२॥
भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत्॥ १३॥
ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा॥ १४॥
युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः॥ १५॥
ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम्॥ १६॥
उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः॥ १७॥
देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।
वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम्॥ १८॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी॥ १९॥
बिडालास्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम्॥ २०॥
एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः।
माहिषण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान्॥ २१॥
कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्।
लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान्॥ २२॥
वेगेन कांश्चिदमरान्नदेन भ्रमणेन च।
निःश्वासपवनेनान्यान् पातायामास भूतले॥ २३॥
निपात्य प्रमथानीकिमभ्यधावत सोऽसुरः।
सिंह हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका॥ २४॥
सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः।
शृङ्गाभ्यां पर्वतातुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च॥ २५॥
वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः॥ २६॥
धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घना।
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः॥ २७॥
इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत्॥ २८॥
सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे॥ २९॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत॥ ३०॥
तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः॥ ३१॥
करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत॥ ३२॥
ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम्॥ ३३॥
ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना॥ ३४॥
ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेपचण्डिकां प्रति भूधरान्॥ ३५॥
सा च तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करै।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम्॥ ३६॥

देवी उवाच ॥ ३७॥

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः॥ ३८॥

ऋषि उवाच॥ ३९॥

एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम्।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत्॥ ४०॥
ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः॥ ४१॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥ ४२ ॥
ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ॥ ४३ ॥
तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ॐ ॥ ४४ ॥

॥ देवी मध्यम चरित्र (द्वितीय) सम्पूर्ण ॥

देवी मध्यम चरित्र (द्वितीय)

(हिन्दी अनुवाद)

जगदम्बा के श्री अङ्गों की कान्ति प्रातःकाल के सहस्त्रों सूर्यों के समान है। वे लाल रंग की रेशमी साड़ी धारण किए हुए हैं। उनके गले में मुण्डमाला शोभा पा रही है। दोनों स्तनों पर रक्त चन्दन का लेप लगा है। वे अपने कर-कमलों में जपमालिका, विद्या और अभय तथा वर नामक मुद्राएँ धारण किये हुए हैं। तीन नेत्रों से सुशोभित उनके मुखारविन्द की बड़ी शोभा हो रही है। उनके मस्तक पर चन्द्रमा के साथ ही रत्नमय मुकुट बँधा है तथा वे कमल के आसन पर विराजमान हैं। ऐसी देवी की मैं श्रद्धापूर्वक वन्दना करता हूँ।

ऋषि बोले—दैत्यों की सेना को इस प्रकार तहस-नहस होते देख महादैत्य सेनापति चिक्षुर क्रोध में भरकर अम्बिका देवी से युद्ध करने के लिय आगे बढ़ा॥ १-२॥ वह असुर रणभूमि में देवी के ऊपर इस प्रकार बाणों की वर्षा करने लगा, जैसे बादल मेरुगिरि के शिखर पर पानी की धारा बरसा रहा हो ॥ ३ ॥ तब देवी ने अपने बाणों

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

से उसके बाणसमूह को अनायास ही काटकर उसके घोड़ों और सारथि को भी मार डाला ॥ ४ ॥ साथ ही उसके धनुष तथा अत्यन्त ऊँची ध्वजा को भी तत्काल काट गिराया। धनुष कट जाने पर उसके अंगों को अपने बाणों से बींध डाला। धनुष, रथ, घोड़े और सारथि के नष्ट हो जाने पर वह असुर ढाल और तलवार लेकर देवी की ओर दौड़ा। उसने तीखी धार वाली तलवार से सिंह के मस्तक पर चोटकरके देवी की भी बायीं भुजा में बड़े वेग से प्रहार किया ॥ ५-७ ॥

राजन्! देवी की भुजा पर पहुँचते ही वह तलवार टूट गई, फिर तो क्रोध से लाल आँखें करके उस राक्षस ने शूल हाथों में लिया और उसे उस महादैत्य ने भगवती भद्रकाली के ऊपर चलाया। वह शूल आकाश से गिरते हुए सूर्यमण्डल की भाँति अपने तेज से प्रज्ज्वलित हो उठा ॥ ८-९ ॥ उस शूल को अपनी ओर आते देख देवी ने भी शूल से प्रहार किया। उससे राक्षस के शूल के सैकड़ों टुकड़े हो गये, साथ ही महादैत्य चिक्षुर की भी धज्जियाँ उड़ गयीं। वह प्राणों से हाथ धो बैठा ॥ १० ॥ महिषासुर के सेनापति उस महापराक्रमी चिक्षुर के मारे जाने पर देवताओं को पीड़ा देने वाला राक्षस चामर हाथी पर चढ़कर आया। उसने भी देवी के ऊपर शक्ति का प्रहार किया, किंतु जगदम्बा ने उसे अपने हुंकार से ही आहत एवं निष्प्रभ करके तत्काल पृथ्वी पर डाल दिया ॥ ११-१२ ॥ शक्ति को टूटकर गिरी हुई देख चामर को बड़ा क्रोध हुआ। अब उसने शूल चलाया, किंतु देवी ने उसे भी बाणों द्वारा काट डाला ॥ १३ ॥ इतने में ही देवी का सिंह उछलकर हाथी के मस्तक पर चढ़ बैठा और उस दैत्य के साथ बाहुयुद्ध करने लगा ॥ १४ ॥ वे दोनों लड़ते-लड़ते हाथी से उतरकर पृथ्वीपर आ गये और अत्यन्त क्रोध से भरकर एक दूसरे पर बड़े भयंकर प्रहार करते हुए लड़ने लगे ॥ १५ ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

तदनन्तर सिंह बड़े वेग से आकाश की ओर उछला और उधर से गिरते समय उसने पंजों की मार से चामर का सिर धड़ से अलग कर दिया। इसी प्रकार राक्षस उदग्र भी शिला और वृक्ष आदि की मार खाकर रणभूमि में देवी के हाथ से मारा गया तथा दैत्य कराल भी दाँतों, मुक्कों और थप्पड़ों की चोट से धराशायी हो गया॥ १६-१७॥ क्रोध से भरी हुई देवी ने गदा की चोट से उद्धत दैत्य का कचूमर निकाल डाला। इसी तरह भिन्दिपाल से वाष्कल को तथा बाणों से ताम्र और अन्धक को मौत के घाट उतार दियातीन नेत्रों वाली परमेश्वरी ने त्रिशूल से उग्रास्य, उग्रवीर्य तथा महाहनु नामक दैत्यों को मार डाला। तलवार की चोट से विडाल के मस्तक को धड़ से काट गिराया। दुर्धर और दुर्मुख—इन दोनों दैत्यों को भी अपने बाणों से यमलोक भेज दिया॥ १८-२०॥

इस प्रकार अपनी सेना का संहार होते देख महिषासुर ने भैंसे का रूप धारण करके देवी के गणों को त्रास देना आरम्भ किया॥ २१॥ किन्हीं को थूथुन से मारकर, किन्हीं के ऊपर खुरों का प्रहार करके, किन्हीं-किन्हीं को पूँछ से चोट पहुँचाकर, कुछ को सींगों से विदीर्ण करके, कुछ गणों को वेग से, किन्हीं को सिंहनाद से, कुछ को चक्कर देकर और कितनों को निःश्वास-वायु के झोकों से धराशायी कर दिया इस प्रकार गणों की सेना को गिराकर वह असुर महादेवी के सिंह को मारने के लिये झपटा। इससे जगदम्बा को बड़ा क्रोध आया उधर पराक्रमी महिषासुर भी क्रोध से भरकर धरती को खुरों से खोदने लगा तथा अपने सींगों से ऊँचे-ऊँचे पर्वतों को उठाकर फेंकने और गर्जने लगा। उसके वेग से चक्कर देने के कारण पृथ्वी क्षुब्ध होकर फटने लगी। उसकी पूँछ से समुद्र चारों ओर से धरती को डुबाने लगा॥ २२-२६॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

उसके हिलते हुए सीगों के आघात के कारण बादलों के खण्ड-खण्ड हो गये॥ २७॥ इस प्रकार क्रोध से भरे हुए उस महादैत्य को अपनी ओर आते देख चण्डिका ने उसका वध करने के लिये महान क्रोध किया॥ २८॥ देवी ने पाश फेंककर उस महान् असुर को बांध लिया। उस महासंग्राम में बंध जाने पर उसने भैंसे का रूप त्याग दिया और तत्काल सिंह के रूप में वह प्रकट हो गया। उस अवस्था में जगदम्बा ज्यों ही उसका मस्तक काटने को तत्पर हुईं, त्यों ही वह खड्गधारी पुरुष के रूप में दिखायी देने लगा॥ २९-३०॥ तब देवी ने तुरंत ही बाणों की वर्षा करके ढाल और तलवार के साथ उस पुरुष को भी मर्माहत कर दिया। इतने में ही वह महान गजराज के रूप में बदल गया तब वह अपनी सूँड़ से देवी के विशाल सिंह को खींचने और गर्जने लगा। खींचते समय देवी ने तलवार से उसकी सूँड़ काट डाली॥ ३२॥ अब उस महादैत्य ने पुनः भैसे का शरीर धारण कर लिया और पहले की भाँति चराचर प्राणियों सहित तीनों लोकों को व्याकुल करने लगा।

तब क्रोध से भरी हुई चण्डिका बारम्बार उत्तम मधु का पान करने लगी और लाल आँखें करके हँसने लगीं। उधर वह बल और पराक्रम के मद से उत्मत्त हुआ राक्षस गर्जने लगा और अपने सींगों से चण्डी के ऊपर पर्वतों को फेंकने लगा॥ ३३-३५॥ उसी समय देवी अपने बाणों के समूहों से उसके फेंके हुए पर्वतों को चूर्ण करती हुई बोलीं। बोलते समय उनका मुख मधु के मद से लाल हो रहा था और वाणी लड़खड़ा रही थी॥ ३६॥ देवी ने कहा—अरे मूढ़! मैं जब तक मधु पीती हूँ, तब तक तू क्षण भर के लिये खूब गर्ज ले। मेरे हाथ से यहीं तेरी मृत्यु हो जाने पर अब शीघ्र देवता भी गर्जना (जयघोष) करेंगे॥ ३७-३८॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

ऋषि बोले—ऐसा कहकर देवी उछलीं और उस महादैत्य के ऊपर चढ़ गयीं। फिर अपने पैर से उसे दबाकर उन्होंने शूल से उसके कण्ठ में आघात किया॥ ३९-४०॥ उनके पैर से दबा होने पर भी महिषासुर अपने मुख से दूसरे रूप में बाहर होने लगा अभी आधे शरीर से ही वह बाहर निकलने पाया था कि देवी ने अपने प्रभाव से उसे रोक दिया। आधा निकला होने पर भी वह महादैत्य देवी से युद्ध करने लगा। तब देवी ने बहुत बड़ी तलवार से उसका मस्तक काट गिराया॥ फिर तो हाहाकार करती हुई दैत्यों की सारी सेना भाग गयी तथा सम्पूर्ण देवता प्रसन्न हो गये॥ ४३॥ देवताओं ने दिव्य महर्षियों के साथ दुर्गा देवी का स्तवन किया। गन्धर्वराज गाने लगे तथा अप्सराएँ नृत्य करने लगीं॥ ४१-४४॥

॥ देवी मध्यम चरित्र (द्वितीय) हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी मध्यम चरित्र (तृतीय)

श्री दुर्गासप्तशती चतुर्थोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दु रेखांशङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्। सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं ध्यायेद्दुर्गांजयाख्यांत्रिदशपरिवृतांसेवितां सिद्धिकामैः॥

'ॐ' ऋषि उवाच॥ १॥

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः॥२॥

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः॥३॥

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु॥४॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥५॥

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु॥६॥

हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषैर्न—
ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या॥७॥

यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयात्ति सकलेषु मखेषु देवि।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च॥८॥

या मुक्तिहेतुविचिन्त्यतमहाव्रता
त्व मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि॥९॥

शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी त्रयी भगवती भवभावनाय
वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥१०॥
मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥११॥
ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥१२॥
दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥१३॥
देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवतरी कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं
बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥१४॥
ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥१५॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव
कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन॥१६॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता॥१७॥

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि॥१८॥

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकारोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी॥१९॥

खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शुलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्॥२०॥

दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्॥ २१॥

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि॥ २२॥

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते॥ २३॥

शूलेन पाहि नो देवि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥ २४॥

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥ २५॥

सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ २६॥

खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥ २७॥

ऋषि उवाच॥ २८॥

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः॥ २९॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान्॥ ३०॥

देवी उवाच॥ ३१॥

व्रियतां त्रिदशां सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम्॥ ३२॥

देवता उवाच ॥ ३३॥

भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते॥ ३४॥
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।
यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि॥ ३५॥
संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने॥ ३६॥
तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथा सर्वदाम्बिके॥ ३७॥

ऋषि उवाच॥ ३८॥

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप॥ ३९॥
इत्येतकथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी॥ ४०॥
पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत्।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः॥ ४१॥
रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते।।ह्रीं ॐ॥ ४२॥

॥ देवी मध्यम चरित्र (तृतीय) सम्पूर्णम्॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी मध्यम चरित्र (तृतीय)

(हिन्दी अनुवाद)

सिद्धि की इच्छा रखने वाले पुरुष जिनकी सेवा करते हैं तथा देवता जिन्हें सब ओर से घेरे रहते हैं, उन 'जया' नाम वाली दुर्गा देवी का ध्यान करें। उनके श्री अङ्गों की आभा काले मेघ के समान श्याम है। वे अपने कटाक्षों से शत्रुसमूह को भय प्रदान करती हैं। उनके मस्तक पर चन्द्रमा की रेखा शोभा पाती है। वे अपने हाथों में शंख, चक्र, कृपाण और त्रिशूल धारण करती हैं। उनके तीन नेत्र हैं। वे सिंह के कंधे पर चढ़ी हुई हैं और अपने तेज से तीनों लोकों को परिपूर्ण कर रही हैं।

ऋषि बोले—अत्यन्त पराक्रमी दुरात्मा महिषासुर तथा उसकी दैत्य-सेना के देवी के हाथ से मारे जाने पर इन्द्र आदि देवता प्रणाम के लिये गर्दन तथा कंधे झुकाकर उन भगवती दुर्गा का उत्तम वचनों द्वारा स्तवन करने लगे। उस समय उनके सुन्दरी अंगों में अत्यन्त हर्ष के कारण रोमाञ्च हो आया था॥ १-२ ॥ देवता बोले—'सम्पूर्ण देवताओं की शक्ति का समुदाय ही जिनका स्वरूप है तथा जिन देवी ने अपनी शक्ति से सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त कर रखा है, समस्त देवताओं और महर्षियों की पूजनीया उन जगदम्बा को हम भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं। वे हम लोगों का कल्याण करें॥ ३ ॥ जिनके अनुपम प्रभाव और बल का वर्णन करने में भगवान शेषनाग, ब्रह्माजी तथा महादेवजी भी समर्थ नहीं हैं, वे भगवती चण्डिका जगत का पालन एवं अशुभ भय का नाश करने का विचार करें। जो पुण्यात्माओं के घरों में स्वयं ही लक्ष्मीरूप से, पापियों के यहाँ दरिद्रतारूप से, शुद्ध अन्तःकरण वाले पुरुषों के हृदय में बुद्धि रूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से तथा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कुलीन मनुष्य में लज्जारूष से निवास करती हैं, उन भगवती दुर्गा को हम नमस्कार करते हैं। देवी! आप सम्पूर्ण विश्व का पालन कीजिये। देवी! आपके इस अचिन्त्य रूप का, असुरों का नाश करने वाले भारी पराक्रम का तथा समस्त देवताओं और दैत्यों के समक्ष युद्ध में प्रकट किये हुए आपके अद्‌भुत चरित्रों का हम किस प्रकार वर्णन करें॥ ४-६ ॥ आप सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति का कारण हैं। आप में सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण—ये तीन गुण विद्यमान हैं, तो भी दोषों के साथ आपका सम्पर्क नहीं जान पड़ता। भगवान् विष्णु और महादेवजी आदि देवता भी आपका पार नहीं पाते। आप ही समस्त अखिल का आश्रय हैं। यह समस्त जगत् आपका अंशभूत है, क्योंकि आप सबकी आदिभूत अव्यक्त परा प्रकृति हैं॥ ७॥ देवी! सम्पूर्ण यज्ञों में जिसके उच्चारण से सब देवता तृप्ति लाभ करते हैं, वह स्वाहा आप ही हैं। इसके अतिरिक्त आप पितरों की भी तृप्ति का कारण हैं, अतएव सब लोग आपको स्वधा भी कहते हैं। देवी! जो मोक्ष की प्राप्ति का साधन है, अचिन्त्य है, समस्त दोषों से रहित, जितेन्द्रिय, तत्त्वों को ही सार वस्तु मानने वाले तथा मोक्ष की अभिलाषा रखने वाले मुनिजन जिसका अभ्यास करते हैं, वह भगवती आप ही हैं। आप शब्दरूपा हैं अत्यन्त निर्मल ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा उद्‌गीथ के मनोहर पदों के पाठ से युक्त सामवेद का भी आधार आप ही हैं। आप देवी, त्रयी (तीनों वेद)और भगवती (छहों ऐश्वर्य से युक्त) हैं। इस विश्व की उत्पत्ति एवं पालन के लिये आप ही वार्ता (कृषि एवं आजीविका) के रूप में प्रकट हुई हैं। आप सम्पूर्ण जगत् की पीड़ा का नाश करने वाली हैं देवी! जिससे समस्त शास्त्रों के सार का ज्ञान होता है, वह मेधाशक्ति आप ही हैं। दुर्गम भवसागर से पार उतारने वाली नौकारूप दुर्गादेवी भी आप ही हैं। आपकी कहीं भी आसक्ति

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

रही हैं। कैटभ के शत्रु भगवान् विष्णु के वक्षस्थल में एकमात्र निवास करने वाली भगवती लक्ष्मी तथा भगवान् चन्द्रशेखर द्वारा सम्मानित गौरी देवी भी आप ही हैं। आपका मुख मन्द मुसकान से सुशोभित, निर्मल, पूर्ण चन्द्रमा के बिम्ब का अनुकरण करने वाला और उत्तम स्वर्ण की मनोहर कान्ति से कमनीय है, तो भी उसे देखकर महिषासुर को क्रोध हुआ और सहसा उसने उस पर प्रहार कर दिया, यह बड़े आश्चर्य की बात है। देवी! वही मुख जब क्रोध से युक्त होने पर उदयकाल के चन्द्रमा की भाँति लाल और तनी हुई भौंहों के कारण विकराल हो उठा, तब उसे देखकर जो महिषासुर के प्राण तुरन्त नहीं निकल गये, यह उससे भी बढ़कर आश्चर्य की बात है, क्योंकि क्रोध में भरे हुए यमराज को देखकर भला कौन जीवित रह सकता है?॥ ९-१३॥

देवी! आप प्रसन्न हों। परमात्मस्वरूपा आपके प्रसन्न होने पर जगत् का अभ्युदय होता है और क्रोध में भर जाने पर आप तत्काल ही कितने कुलों का सर्वनाश कर डालती हैं, यह बात अभी अनुभव में आयी है, क्योंकि महिषासुर की यह विशाल सेना क्षणभर में आपके कोप से नष्ट हो गई है। सदा अभ्युदय प्रदान करने वाली आप जिन पर प्रसन्न रहती हैं, वे ही देश में सम्मानित हैं, उन्हीं को धन और यश की प्राप्ति होती है, उन्हीं का धर्म कभी शिथिल नहीं होता तथा वे ही अपने हृष्ट-पुष्ट, स्त्री-पुत्र और भृत्यों के साथ धन्य माने जाते हैं देवी! आपकी ही कृपा से पुण्यात्मा पुरुष प्रतिदिन अत्यन्त श्रद्धापूर्वक सदा सब प्रकार के धर्मानुकूल कर्म करता है और उसके प्रभाव से स्वर्गलोक में जाता है, इसलिये आप तीनों लोकों के निश्चय ही मनोवाञ्छित फल देने वाली हैं। माँ दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती हैं और स्वस्थ पुरुषों द्वारा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं। दुःख, दरिद्रता और भय हरने वाली देवी! आपके सिवा दूसरी कौन है, जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिये सदा ही दयालु रहता हो। देवी! इन राक्षसों के मारने से संसार को सुख मिले तथा ये राक्षस चिरकाल तक नरक में रहने के लिये भले ही पाप करते रहे हों, इस समय संग्राम में मृत्यु को प्राप्त होकर स्वर्ग लोक में जायें; निश्चय ही यही सोचकर आप शत्रुओं का वध करती हैं

आप शत्रुओं पर शस्त्रों का प्रहार क्यों करती हैं? समस्त असुरों को दृष्टिपातमात्र से ही भस्म क्यों नहीं कर देती? इसमें एक रहस्य है। ये शत्रु भी हमारे शस्त्रों से पवित्र होकर उत्तम लोक को जायें— इस प्रकार उनके प्रति भी आपका विचार अत्यन्त उत्तम रहता है। खड्ग के तेजपुञ्ज की भयङ्कर दीप्ति से तथा आपके त्रिशूल के अग्रभाग की घनीभूत प्रभा से चौंधियाकर जो असुरों की आँखें फूट नहीं गयीं, उसमें कारण यह था कि वे मनोहर रश्मियों से युक्त चन्द्रमा के समान आनन्द प्रदान करने वाले आपके इस सुन्दर मुख का दर्शन करते थे॥ १४-२०॥

देवी! आपका शील दुराचारियों के बुरे बर्ताव को दूर करने वालाहै। साथ ही यह रूप ऐसा है, जो कभी चिन्तन में भी नहीं आ सकता और जिसकी कभी दूसरों से तुलना भी नहीं हो सकती, तथा आपका बल और पराक्रम तो उन दैत्यों का भी नाश करने वाला है, जो कभी देवताओं के पराक्रम को भी नष्ट कर चुके थे। इस प्रकार आपने शत्रुओं पर भी अपनी दया ही प्रकटकी है। वरदायिनी देवी! आपके इसपराक्रम की किसके साथ तुलना हो सकती है तथा शत्रुओं को भय देने वाला एवं अत्यन्त मनोहर ऐसा रूप भी आपके अतिरिक्त और कहाँ है? हृदय में कृपा और युद्ध में निष्ठुरता—ये दोनों बातें तीनों

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

लोकों के भीतर केवल आप में ही देखी गयी हैं॥ २१-२२॥

हे माते! आपने शत्रुओं का नाश करके इस समस्त त्रिलोकी की रक्षा की है। उन शत्रुओं को भी युद्ध भूमि में मारकर स्वर्गलोक में पहुँचाया है तथा उन्मत्त दैत्यों से प्राप्त होने वाले हम लोगों के भय को भी दूर कर दिया है, आपको हमारा नमस्कार है॥ २३॥ हे देवी! आप शूल से हमारी रक्षा करें। अम्बिके! आप खड्ग से भी हमारी रक्षा करें तथा घण्टा की ध्वनि और धनुष की टंकार से भी हम सबकी रक्षा करें॥ २४॥ चण्डिके! पूर्व, पश्चिम और दक्षिण दिशा में आप हमारी रक्षा करें। ईश्वरी! अपने त्रिशूल को घुमाकर आप उत्तर दिशा में भी हमारी रक्षा करें॥ २५॥ तीनों लोकों में आपके जो परम सुन्दर एवं अत्यन्त भयंकर रूप विचरते रहते हैं, उनके द्वारा भी आप हमारी तथा इस भूलोक की रक्षा करें॥ २६॥ अम्बिके! आपके हाथों में शोभा पाने वाले खड्ग, शूल और गदा आदि जो-जो अस्त्र हों, उन सबके द्वारा आप सब ओर से हम लोगों की रक्षा करें॥ २७॥

ऋषि बोले—इस प्रकार जब देवताओं ने जगन्माता दुर्गा की स्तुति की और नन्दन-वन के दिव्य पुष्पों एवं गन्ध-चन्दन आदि के द्वारा उनका पूजन किया, फिर सबने मिलकर जब भक्तिपूर्वक दिव्य धूपों की सुगन्ध निवेदन की, तब देवी ने प्रसन्नवदन होकर प्रणाम करते हुए सब देवताओं से कहा—देवी बोलीं—देवताओं! तुम सब मुझसे जिस वस्तु की कामना रखते हो, उसे माँगो॥२८-३२॥ देवता बोले—भगवती आपने हमारी सब इच्छा पूरी कर दी, अब कुछ भी बाकी नहीं है। क्योंकि हमारा यह शत्रु महिषासुर मारा गया। महेश्वरी! इतने पर भी यदि आप हमें और वर देना चाहती हैं॥ ३३-३५॥ तो हम जब-जब आपका स्मरण करें, तब-तब आप दर्शन देकर हमारा महान् संकट दूर कर दिया करें। अम्बिके! जो मनुष्य इन स्तोत्रों द्वारा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

आपकी स्तुति करे, उसे वित्त, समृद्धि और वैभव देने के साथ ही उसकी धन और स्त्री आदि सम्पत्ति को भी बढ़ाने के लिये आप सदा हम पर कृपालु रहें॥ ३६-३७॥

ऋषि बोले—राजन् ! देवताओं ने जब अपने तथा जगत के कल्याण के लिए भद्रकाली देवी को इस प्रकार प्रसन्न किया, तब वे 'तथास्तु' कहकर वहीं अन्तर्धान हो गयीं॥ ३८-३९॥ भूपाल! इस प्रकार पूर्वकाल में तीनों लोकों का हित चाहने वाली देवी जिस प्रकार देवताओं के शरीर से प्रकट हुई थी; वह सब कथा मैंने कह सुनायी॥ ४०॥

अब पुनः देवताओं का उपकार करने वाली वे देवी दुष्ट दैत्यों तथा शुम्भ-निशुम्भ का वध करने एवं सब लोकों की रक्षा करने के लिये गौरीदेवी के शरीर से जिस प्रकार प्रकट हुई थीं वह सब प्रसङ्ग मेरे मुख से सुनो। मैं उसका तुमसे वर्णन करता हूँ॥ ४१-४२॥

॥ देवी मध्यम चरित्र (तृतीय) हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सिद्ध कुंजिका स्तोत्रम्

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥ १॥
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥ २॥
कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥ ३॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमोत्रेण संसद्धियेत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्॥ ४॥

अथ मन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वलऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा॥

॥ इतिमन्त्रः ॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि॥ १॥
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि॥ २॥
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका॥ ३॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

क्लींकारी कामरूपायै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी॥ ४॥
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि॥ ५॥
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिकादेवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥ ६॥
हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः॥ ७॥
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा॥ ८॥
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे।
इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे॥
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति।
यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्॥
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे सिद्ध कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

सिद्ध कुञ्जिकास्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

शिवजी बोले—देवी! सुनो। अब मैं उत्तम कुञ्जिका स्तोत्र का उपदेश करूँगा, जिस मन्त्र के प्रभाव से देवी का पाठ सफल होता है॥ १॥ कवच, अर्गला, कीलक, रहस्य, सूक्त, ध्यान, न्यास और

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

यहाँ तक कि अर्चन भी आवश्यक नहीं है ॥ २ ॥ केवल कुञ्जिका के पाठ से दुर्गा-पाठ का फल प्राप्त हो जाता है। यह कुञ्जिका अत्यन्त गुप्त और देवों के लिये भी दुर्लभ है। हे पार्वती ! इसे स्वयोनि की भाँति प्रयत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिये। यह उत्तम कुञ्जिकास्तोत्र केवल पाठ के द्वारा मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन और उच्चाटन आदि आभिचारिक उद्देश्यों को सिद्ध करता है ॥ ३-४ ॥

मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा॥

(मन्त्र में प्रयुक्त बीजों का अर्थ जानना न सम्भव है और न आवश्यक, केवल जप पर्याप्त है।)

हे रुद्रस्वरूपिणी! तुम्हें नमस्कार। हे मधु दैत्य को मारने वाली! तुम्हें नमस्कार है। कैटभविनाशिनी को नमस्कार। महिषासुर को मारने वाली देवी! तुम्हें नमस्कार ॥ १ ॥ शुम्भ का हनन करने वाली और निशुम्भ को मारने वाली! तुम्हें नमस्कार है ॥ २ ॥ हे महादेवी! मेरे जप को जाग्रत और सिद्ध करो। **'ऐंकार'** के रूप में सृष्टि स्वरूपिणी, **'ह्रीं'** में रूप में सृष्टि का पालन करने वाली ॥ ३ ॥

'क्लीं' के रूप में कामरूपिणी तथा (अखिल ब्रह्माण्ड) की बीजरूपिणी देवी! तुम्हें नमस्कार है। चामुण्डा के रूप में चण्डविनाशिनी और **'यैकार'** के रूप में तुम वर देने वाली हो। **'विच्चे'** रूप में तुम नित्य ही अभय देती हो। (इस प्रकार **ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**) तुम इस मन्त्र का सम्पूर्ण स्वरूप हो ॥ ४-५ ॥

'धां धी धूं' के रूप में धूर्जटी (शिव) की तुम पत्नी हो। **'वां वीं वूं'** के रूप में तुम वाणी की अधीश्वरी हो। **'क्रां कें क्रीं क्रूं'** के रूप में कालिका देवी, **'शां शीं शूं'** के रूप में तुम मेरा कल्याण करो।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

‘हुं हुं हुंकार’ स्वरूपिणी, **‘जं जं जं’** जम्भनाशिनी, **‘भ्रां भ्रीं भ्रूं’** के रूप में हे कल्याणकारिणी भैरवी भवानी! तुम्हें बारम्बार प्रणाम है॥ ६-७॥

‘अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं धिजाग्रं’ इन सबको तोड़ो और दीप्त करो करो स्वाहा। **‘पां पीं पूं’** के रूप में तुम पार्वती पूर्णा हो। **‘खां खीं खूं’** के रूप में तुम खेचरी (आकाशचारिणी) अथवा खेचरी मुद्रा हो॥ ८॥

‘सां सीं सूं’ स्वरूपिणी सप्तशती देवी के मन्त्र को मेरे लिये सिद्ध करो। यह कुञ्जिकास्तोत्र मन्त्र को जाग्रत करने के लिये है।

इसे भक्तिहीन व्यक्ति को नहीं देना चाहिये। हे पार्वती! इसे गुप्त रखो। हे देवी! जो बिना कुञ्जिका के सप्तशती का पाठ करता है उसे उसी प्रकार सिद्धि नहीं मिलती जिस प्रकार वन में रोना निरर्थक होता है।

श्रीरुद्रयामल के गौरी तन्त्र में वर्णित
सिद्धकुञ्जिका स्तोत्र हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ।

“ॐ क्रीं कालिकायै नमः”

क्रीं माता का बीजाक्षर है। यदि चित्त एकाग्र करके पवित्रता के साथ इस मंत्र का पाँच लाख बार जप किया जाये तो माता काली के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं।

“ॐ दुं दुर्गायै नमः”

दुं श्री दुर्गाजी का बीजाक्षर है। इस मंत्र का भी पाँच लाख बार जप करने से दुर्गाजी दुःख दूर करती हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री देवी क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमत्व परमेश्वरि॥ १॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि॥ २॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥ ३॥

अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः॥ ४॥

सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वा जगदम्बिके।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु॥ ५॥

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥ ६॥

कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥ ७॥

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि॥ ८॥

॥ इति श्री देवी क्षमा-प्रार्थना सम्पूर्णम्॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी क्षमा-प्रार्थना

(हिन्दी अनुवाद)

हे परमेश्वरी! मेरे द्वारा रात-दिन सहस्त्रों अपराध होते रहते हैं। 'यह मेरा दास है'—ऐसा समझकर मेरे उन अपराधों को तुम कृपापूर्वक क्षमा करो॥ १ ॥ परमेश्वरी! मैं आवाहन नहीं जानता, विसर्जन करना नहीं जानता तथा पूजा करने का ढंग भी नहीं जानता। क्षमा करो॥२॥

देवी! सुरेश्वरी! मैंने जो मन्त्रहीन, क्रियाहीन और भक्तिहीन पूजन किया है, वह सब आपकी कृपा से पूर्णता को प्राप्त हो। सैकड़ों अपराध करके भी जो तुम्हारी शरण में पहुँचकर 'जगदम्बे' कहकर पुकारता है, उसे वह गति प्राप्त होती है, जो ब्रह्मा आदि देवताओं के लिये भी सुलभ नहीं है॥ ३-४॥

हे जगदम्बिका! मैं अपराधी हूँ, किंतु तुम्हारी शरण में आया हूँ। तुम्हारी दया का पात्र हूँ। तुम जैसा चाहो वैसे करो॥ ५॥ देवी! परमेश्वरी! अज्ञान से, भूल से अथवा बुद्धि भ्रमित होने के कारण मैंने जो कमी या अधिकता कर दी हो, वह सब क्षमा करो और प्रसन्न होओ॥ ६॥ सच्चिदानन्दस्वरूपा परमेश्वरी! जगन्माता कामेश्वरी! तुम प्रेमपूर्वक मेरी यह पूजा स्वीकार करो और मुझ पर प्रसन्न रहो। देवी! सुरेश्वरी! तुम गोपनीय से भी गोपनीय वस्तु की रक्षा करने वाली हो। मेरे निवेदन किये हुए इस जप को ग्रहण करो। तुम्हारी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो॥ ७-८॥

॥ श्री देवी क्षमा-प्रार्थना हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दुर्गासप्तशती-संक्षिप्त पाठ विधि

पाठकर्त्ता नित्यस्नानादिक्रियां कृत्वा, प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य, 'ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः' इति त्रिराचम्य।

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्य प्रसवऽउत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि। तस्न ते पवित्रपते पतित्रपूतस्य यत्कान पुने तच्छकेषम्।

इति मन्त्रेण पवित्रधारणं कृत्वा, प्राणायामत्रयं कुर्यात्।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यःस्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरःशुचिः। इत्यात्मांनं पूजन-सामग्री च सम्प्रोक्ष्य हस्तेऽक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा आ नो भद्रा० 'सुमुखश्चैकदन्तश्च०' इत्यादि-मंगलमन्त्रान् पठेत्।

ततो हस्ते जला-ऽक्षत-पुष्प-द्रव्याण्यादाय, संकल्पं कुर्यात्। तद्यथा—

'अद्येत्यादि-मास-पक्षादीनुच्चार्य मम आत्मनः श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफल-प्राप्त्यर्थम् अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुक-शर्माऽहम् अमुक-गोत्रस्य सपत्नीकस्य यजमानस्य (स्वस्य च) आयुरारोग्यैश्वर्याऽभिवृद्ध्यर्थं पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न-सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मी-कीर्ति-लाभ-शत्रुपराजय-सदभीष्ट-सिद्ध्यर्थं च श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवता-प्रीत्यर्थं कवचा-ऽर्गला-कीलक-पठनैकादश-न्यासपूर्वक-नवार्ण-मन्त्राष्टोत्तरशतजप-

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

रात्रिसूक्तपठनपूर्वकं देवी-सूक्तपठन-नवार्ण मन्त्राष्टोत्तर-शतजपरह स्यत्नयपठनान्तं 'मार्कण्डेय उवाच' इत्यारभ्य 'सावर्णिर्भविता मनुः' इत्यन्तं दुर्गासप्त शत्याः पाठं करिष्ये।

ततः कवचा-ऽर्गलां-कीलकं पठित्वा, न्यासादिपूर्वकं नवार्ण-मन्त्रं जपेत्।

पश्चाद् रात्रिसूक्तं पठित्वा, विनियोग-कर-हृदयादि-न्यासं विधाय, 'विद्युद्दाम-समप्रभामि' ति ध्यानं कृत्वा, 'मार्कण्डेय उवाच' इत्यारभ्य 'सावर्णिर्भविता मनुः' इत्यन्तं पाठं कुर्यात्।

अन्ते उत्तरन्यासपूर्वकं दुर्गादेव्याः 'विद्युद्दामे' ति ध्यात्वा, देवी-सूक्तं पठेत्।

ततः अष्टोत्तरशत-नवार्णमन्त्रस्य जपं कृत्वा, तदुत्तर-न्यासान् विधाय 'गुह्याऽतिगुह्यगोप्त्री' ति पठित्वा देव्या वामहस्ते जपं निवेद्य, रहस्यत्नयं पठेत्। पश्चादुत्तरपूजां विधाय आरार्तिक-मन्त्रपुष्पाञ्जलिं क्षमा-प्रार्थनां च कृत्वा प्रणमेत्।

॥ इति दुर्गासप्तशती-संक्षिप्त पाठ विधि समाप्तः ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दुर्गासप्तशती-सम्पुट पाठ विधि

देव्युवाच:

सम्पुटं कतिधा स्वामिन्! वेत्तुमिच्छामि तत्वतः।
कथयस्व सुरेशान! यद्यहं तव वल्लभा? ॥ १॥

ईश्वर उवाच:

सम्पुटं द्विविधं ज्ञेयमुदयास्तकरं प्रिये!।
शृणूदयन्त्वमंत्रादो पश्चादस्तं वदामि ते॥ २॥
मन्त्रमादौ पुनः श्लोकमन्ते पुनः पठेत्।
पुनर्मन्त्रं पुनः श्लोकं कमोऽयमुदाहृतः॥ ३॥
अत्र सर्वत्र श्लोकमिति मन्त्रोपलक्षणम्
अस्तं चिकित्साशास्त्रेषु शरावाभ्यां कृतं भवेत्।
तत्तेऽहं पुनः श्लोकमन्ते मन्त्रविपर्ययम्।
पुनर्मन्त्रं पुनः श्लोकं पुनर्मन्त्रविपर्ययम्॥ ५॥
मारणोच्चाटने बन्धो सम्पुटोऽयमुदाहृतः।
प्रकारोऽयमनादृत्य कुर्वन्त्यात्मप्रकल्पितम्।
रौरवादिषु पच्यन्ते यावदाभूत-संप्लवम्॥ ६॥
अस्य पुरश्चरणस्वरूपं मरीचिकल्पेः
कृष्णाऽष्टमी समारभ्य यावत् कृष्णचतुर्दशी।
बुद्ध्यैकोत्तरया जाप्यं पूर्वसम्पुटितं तु तत्॥ ७॥
एवं देवि! मया प्रोक्तः पौरश्चरणिकः क्रमः।
तदन्ते हवनं कुर्यात् प्रतिश्लोकेन पायसा॥ ८॥
रात्रिसूक्तं प्रतिऋचं तथा देव्याश्च सूक्तम्।
हुत्वान्ते प्रजपेत् स्तोत्रमादौ पूजादिकं मृने!॥ ९॥

॥ इति दुर्गासप्तशती-सम्पुट-पाठविधिः समाप्तः॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कामनापूरक दुर्गासप्तशती का अनुष्ठान-विधान

१. दुर्गासप्तशती के तीनों चरित्रों का पाठ करना चाहिए।

२. अशक्ति में प्रथम एवं मध्यम चरित्र तक पाठ करे।

३. अत्यन्त अशक्ति अवस्था में —'**नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥**' इस श्लोक का ही केवल पाठ करे।

४. पीढ़ा या चौकी पर नया वस्त्र बिछाकर पाठ करना चाहिए।

५. जो सप्तशती की पुस्तक हाथ में रखकर पाठ करता है उसे आधा फल प्राप्त होता है।

६. सप्तशती का पाठ अतिशीघ्रता से तथा मन में नहीं करना चाहिए।

७. स्वयं लिखित अथवा शूद्र आदि द्वारा लिखित सप्तशती की पुस्तक से पाठ नहीं करना चाहिए।

८. उपसर्ग, शान्ति एवं ग्रहजन्य पीड़ा तथा अति भयंकर उत्पात और महामारी शान्ति, शत्रुनाश के लिए क्रमशः तीन, पाँच, सात, नव, ग्यारह, और बारह पाठ करे।

९. संकट, शारीरिक कष्ट, औषधि के काम न करने पर, जाति, कुल एवं आयु नाश में, शत्रु, रोगवृद्धि में, धन नष्ट होने पर, जय और राज्यवृद्धि में सौ पाठ करे।

१०. जो साधक पूर्णिमा, चतुर्दशी, नवमी और अष्टमी को भगवती दुर्गा का त्रिकाल पूजन तथा पाठ करता है वह देवीलोक में निवास करता तथा महान् ऐश्वर्यशाली होता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

११. जो मनुष्य रविवार को सप्तशती का पाठ करता है उसे नव आवृत्ति का फल प्राप्त होता है। उसी प्रकार सोमवार को पाठ करने से एक हजार पाठ करने का फल, मंगलवार को पाठ करने से सौ पाठ करने का पुण्य फल, बुधवार को पाठ करने से एक लाख पाठ तथा गुरु और शुक्रवार को पाठ करने से दो लाख चण्डी पाठ का फल एवं शनिवार को पाठ करने से एक करोड़ पाठ करने का फल प्राप्त होता है।

शुक्ल पक्ष की षष्ठी से प्रारम्भ कर शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तक जो साधक नव पाठ करता है, उसे समस्त कार्य की सिद्धि प्राप्त होती है। किन्हीं-किन्हीं तन्त्रों में कृष्ण पक्ष की अष्टमी से लेकर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तक वृद्धि-क्रम से पाठ करने पर उक्त फल मिलता है, ऐसा प्रतिपादन किया गया है।

१३. मोक्ष प्राप्ति के लिए पायस (खीर)से, मारण में उड़द, मोहन में मधुमिश्रित पायस, उच्चाटन में त्रिमधु, स्तम्भन में मातृलिंग फल और वशीकरण में सरसों से हवन करे।

१४. जो साधक नाभिमात्र जल में खड़े होकर नवार्ण मन्त्र का एक हजार जप करता है उसे कविता करने की शक्ति प्राप्त होती है एवं वह भव-बन्धन से छूट जाता है।

॥ कामनापूरक दुर्गा-सप्तशती का अनुष्ठान समाप्त हुआ ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री दुर्गा तन्त्रम्

दुर्गा-ध्यानम्

विद्युद्दाम-समप्रभां मृगपति-स्कन्ध-स्थितां भीषणां
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्र-गदा-ऽसि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥ १॥

खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघाञ्छूलं भुशुण्डी शिरः
शंख संदधती करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृताम्।
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥ २॥

अक्ष-स्त्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसि च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥ ३॥

घण्टा-शूल-हलानि शंख-मुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥ ४॥

मन्त्रोद्धारः

लिखेदष्टदलं पद्मं चन्दना-ऽगुरु-कुङ्कुमैः।
पद्ममध्ये लिखेच्चक्रं षट्कोणं चण्डिकामयम्॥ १॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

षट्कोणचक्र-मध्यस्थमाद्यबीजत्रयं लिखेत्।
पूर्वादिकोण-षट्के तु बीजान्यन्यानि विन्यसेत्॥ २॥

शापोद्धारमन्त्रः

ओं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिके देवी शापानुग्रहं कुरू-कुरू स्वाहा।

उत्कीलन मन्त्रः

ओं क्रीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरू-कुरू स्वाहा।

मृतसंजीवनी-मन्त्रः

ओं ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनी विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा।

नवार्णमन्त्रः

ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

(नवार्ण यन्त्र पृष्ठ २९ पर दिया जा चुका है।)

दुर्गागायत्री-मन्त्रः

ओं कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।

माला-प्रार्थनाः

ओं मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि!।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
अविघ्नं कुरू माले! त्वं गृहणामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

॥ इति दुर्गातन्त्रं समाप्तम्॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी पुष्पाञ्जलि स्तोत्रम्

अयि गिरि-नन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्व-विनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवर-विन्ध्य-शिरोऽधि-निवासिनि विष्णुविलासिनि
विष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठ-कुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिमि भूतिकृते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते! ॥ १ ॥
सुरवरवर्षिणी दुर्धरधर्षिणी दुर्मुखमर्षिणी हर्षरते।
त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते।
दनुज-निरोषिणि दुर्मद-शोषिणि दुर्मुनि-रोषणि सिन्धुसुते।
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ २ ॥
अयि जगदम्ब! कदम्ब-वन प्रियवासिनि तोषिणि हासरते।
शिखरि-शिरोमणि-तुंग हिमालय-शृंग-निजालय-मध्यगते।
मधु-मधुरे मधु-कैटभ-गंजिनि महिषविदारिणि रासरते।
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ३ ॥
अयि निजहुँकृति-मात्रनिराकृत-धूम्रविलोचन-धूम्रशते।
समर-विशोषित-शोणित-बीजसमुद्भवं बीजलते।
शिव-शिव शुम्भ-निशुम्भ-महाहव-तर्पित-भूत-पिशाचरते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्दिनि शैलसुते ॥ ४ ॥
अयि शतखण्ड-विखण्डित-रुण्ड-वितुण्डित-शण्ड-गजाधिपते।
निज-भुजदण्ड-निपातित-चण्ड-विपाटित-मुण्ड-भटाधिपते।
रिपुगजगण्ड-विदारण-चण्ड-पराक्रम-शौण्ड-मृगाधिपते।
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ५ ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

धनुरनुषंग-रणक्षणसंग-परिस्फुरदंग-नटत्कटके ।
कनक-पिशंग-पृषत्कनिसंग-रसद्भटश्रृंग हताबटुके।
हत-चतुरंग-बल-क्षितिरंग-घटद्-बहुरंग-रटद्-बटुके।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते ॥ ६ ॥
अयि रणदुर्मद-शत्रुवधाद्धुर-निर्भर-शक्तिभृते।
चतुर-विचार-धुरीण-महाशय-दूतकृत-प्रमथाधिपते ।
दुरित-दुरीह-दुराशय दुर्मति दानवदूत दुरन्तगते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते ॥ ७ ॥
अयि शरणागत वैरिवधू जन वीरवराभय दायिकरे।
त्रिभुवन मस्तक शूलविरोधि कृतामल शूलकरे।
दुमि दुमितामर दुन्दुभिनाद मुहुर्मुकरीकृत दिङ्निकरे।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते ॥ ८ ॥
सुरललना ततथेयित थेयित थाभिनियोत्तर नृत्यरते।
कृतकुकुथा कुकुथोदि डदाडिक ताल कुतूहल गानरते।
धुधुकुट धुघूट धिन्धिमितध्वनि धीर मृदंग निनादरते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते ॥ ९ ॥
जय जय जाप्यजये जयशब्द परस्तुति तत्पर विश्वनुते।
झणझण झिंकृत नूपुर शिञ्जित मोहित भूतपते।
नटित नटार्ध नटीनटनायक नाट ननाटित नाट्यरते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते ॥१०॥
अयि सुमन-सुमनः-सुमनः-सुमनोरम कान्तियुते।
श्रितरजनी रजनी-रजनी-रजनी रजनीकर वक्त्रभृते।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सुनयन विभ्रमर भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर भ्रमराभिदृते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते ॥ ११ ॥
महित महाहव मल्ल मतल्लिक वल्लित रल्लित भल्लिरते।
विरचित वल्लि कपालिक पल्लिक झिल्लिक झिल्लिक वर्गवृते।
श्रुतकृतपुल्ल समुल्लसितारुण तल्लज पल्लव सल्ललिते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते ॥ १२ ॥
अयि सुदतोजन लालस मानस मोहन मन्मथ राजसुते।
अविरल गण्डगलन् मदनेदुर मत्त मतंगजराजगते।
त्रिभुवन भूषण भूतकलानिधि रूप पयोनिधि राजसुते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते ॥ १३ ॥
कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भालतले।
सकलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भालतले।
सकल विलास कलानिलय क्रम केलि चलत्कल हंसकुले।
अलिकुल संगकुल कुन्तल मण्डप मौलिमिलद् बकलालिकुले।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते ॥ १४ ॥
करमुरलीरव वर्जित कूजित लज्जित कोकिल मन्जुमते।
मिलित मिलिन्द्र मनोहर गुन्जित रंजित शैल निकुंजगते।
निजगणभूतमहाशवरींगण रंगण सम्भृत केलिरते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते ॥ १५ ॥
कटितट पीत दुकूल विचित्र मयूख तिरस्कृत चण्डरुचे।
जित कनकाचल मौलि मदोर्जित गर्जित कुंजर कुम्भकुचे।
प्रणत सुराऽसुर मौलिमणि स्फुरदंशु लसन्नख चन्द्ररुचे।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते ॥ १६ ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

विजित सहस्त्रकरैक सहस्त्रकरैक सहस्त्रकरैकनुते।
कृत सुरतारक संगरतारक-संगरतारक सूनुनृते।
सुरथ समाधि समान समाधि समान समाधि सुजाप्यरते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते॥ १७॥
पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे।
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः सः कथं न भवेत्।
तव पदमेव परं पदमस्त्विवति शीलयतो मम किं न शिवे।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते॥ १८॥
कनक लसत् कलशीकजलै रनुसिंचति तेऽगंण रंगभुवम्।
भजति स किं न शची कुच कुम्भ नटी परिरम्भ सुखानुभवम्।
तव चरणं शरणं करयाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवम्।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते॥ १९॥
तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्ननुकूलयते।
किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते॥ २०॥
अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे।
अयि जगती जननीति यथाऽसि तथाऽनृमतासि रमे।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दया कुरु मे।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैलसुते॥ २१॥
स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना नियमितो यमतोऽनुदिनं पठेत्।
परमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत्॥ २२॥

॥ इति देवी-पुष्पांजलि-स्तोत्रं समाप्तम्॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री शंकराचार्य विरचितम्

अथ देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्॥ १॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥ २॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥ ३॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥ ४॥

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्॥ ५ ॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ॥ ६ ॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्॥ ७ ॥
न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
च विज्ञानामेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः॥ ८ ॥
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव॥ ९ ॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयंकरोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति॥ १० ॥
जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्॥ ११ ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु॥ १२॥

॥ इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

देवी अपराध क्षमापन स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

माँ! मैं न मन्त्र जानता हूँ, न यन्त्र; अहो! मुझे स्तुति का भी ज्ञान नहीं है। न आवाहन का पता है, न ध्यान का। स्तोत्र और कथा की भी जानकारी नहीं है। न तो तुम्हारी मुद्रायें जानता हूँ, और न व्याकुल होकर मुझे विलाप करना आता है। मैं केवल तुम्हारा अनुसरण— तुम्हारे पीछे चलना जानता हूँ जो सब क्लेशों को और समस्त दुःख-विपत्तियों को हर लेने वाला है। सबका उद्धार करने वाली कल्याणमयी माता! मैं पूजा की विधि नहीं जानता, मेरे पास धन का भी अभाव है, मैं स्वभाव से भी आलसी हूँ तथा मुझसे पूजा का यथाविधि सम्पादन हो भी नहीं सकता; इन सब कारणों से तुम्हारे चरणों की सेवा में जो त्रुटि हो गयी है, उसे क्षमा करना; क्योंकि कुपुत्र का होना सम्भव है, किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती॥ १-२॥

माँ! इस पृथ्वी पर तुम्हारे सीधे-सादे पुत्र तो बहुत-से हैं, किंतु उन सबमें मैं ही तुम्हारा अत्यन्त चपल बालक हूँ; मेरे-जैसा चंचल कोई विरला ही होगा। शिवे! मेरा जो यह त्याग हुआ है, यह तुम्हारे लिये कदापि उचित नहीं है; क्योंकि संसार में कुपुत्र का होना संभव है, किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती।

हे जगदम्बे! हे माता! मैंने तुम्हारे चरणों की सेवा कभी नहीं की, देवी! तुम्हें अधिक धन भी समर्पित नहीं किया; तथापि मुझ

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

जैसे अधम पर जो तुम अपार स्नेह करती हो, इसका कारण यही है कि संसार में कुपुत्र पैदा हो सकता है, परन्तु कहीं भी कुमाता नहीं होती। गणेशजी को जन्म देने वाली माता पार्वती! मुझे नाना प्रकार की सेवाओं में व्यस्त रहना पड़ता है, इसलिये पिचासी वर्ष से अधिक अवस्था बीत जाने पर मैंने देवताओं को छोड़ दिया है, अब उनकी सेवा तथा पूजा मुझसे नहीं हो पाती; अतएव उनसे कुछ भी सहायता मिलने की आशा नहीं है। इस समय यदि तुम्हारी कृपा नहीं होगी तो मैं अवलम्बरहित होकर किसकी शरण में जाऊँगा॥ ३-५॥

हे माता अपर्णा! तुम्हारे मन्त्र का एक अक्षर भी कान में पड़ जाये तो उसका फल यह होता है कि मूर्ख चाण्डाल भी मधुपाक से समान मधुर वाणी का उच्चारण करने वाला उत्तम वक्ता हो जाता है, दीन मनुष्य भी करोड़ों स्वर्ण-मुद्राओं से सम्पन्न हो चिरकाल तक निर्भय रहा करता है। जब मन्त्र के एक अक्षर के श्रवण का ऐसा फल है तो जो लोग विधिपूर्वक जप में लगे रहते हैं, उनके जप से प्राप्त होने वाला उत्तम फल कैसा होगा? इसको कौन मनुष्य जान सकता है। हे भवानी! जो अपने अंगों में चिता की राख-भभूत लपेटे रहते हैं, जिनका विष ही भोजन है, जो दिगम्बर (नग्न रहने वाले) हैं, मस्तक पर जटा और कण्ठ में नागराज वासुकि को हार के रूप में धारण करते हैं तथा जिनके हाथ में कपाल शोभा पाता है, ऐसे भूतनाथ पशुपति भी जो एकमात्र 'जगदीश' की पदवी धारण करते हैं, इसका क्या कारण है? यह महत्त्व उन्हें कैसे मिला; यह केवल तुम्हारे पाणिग्रहण की परिपाटी का फल है; तुम्हारे साथ विवाह होने से ही उनका महत्व बढ़ गया॥ ६-७॥

मुख पर चन्द्रमा की शोभा धारण करने वाली माँ! मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, संसार के वैभव की भी अभिलाषा नहीं है; न विज्ञान

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

की अपेक्षा है, न सुख की आकांक्षा; अतः तुमसे मेरी यही प्रार्थना है कि मेरा जन्म 'मृडानी, रुद्राणी, शिव, भवानी'—इन नामों का जप करते हुए बीते। माँ श्यामा! नाना प्रकार की पूजन साम्रगियों से कभी विधिपूर्वक तुम्हारी आराधना मुझसे न हो सकी। सदा कठोरभाव का चिन्तन करने वाली मेरी वाणी ने कौन-सा अपराध नहीं किया! फिर भी तुम स्वयं ही प्रयत्न करके मुझ अनाथ पर जो किञ्चित् कृपादृष्टि रखती हो, माँ! यह तुम्हारे ही अनुसार है। तुम्हारे-जैसी दयामय माता ही मेरे-जैसे कुपुत्र को भी आश्रय दे सकती है। माता दुर्गे! करुणासिन्धु महेश्वरी! मैं विपत्तियों में फँसकर आज जो तुम्हारा स्मरण करता हूँ [पहले कभी नहीं करता रहा] इसे मेरी शठता न मान लेना; क्योंकि भूख-प्यास से पीड़ित बालक माता का ही स्मरण करते हैं। जगदम्बे! मुझ पर जो तुम्हारी पूर्ण कृपा बनी हुई है, इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है, पुत्र अपराध-पर-अपराध क्यों न करता जाता हो, फिर भी माता उसकी उपेक्षा नहीं करती। महादेवी! मेरे समान कोई पापी नहीं है और तुम्हारे समान दूसरी कोई पापहारिणी नहीं है; ऐसा जानकर जो उचित जान पड़े, वह करो॥ ८-१२॥

॥ श्री शंकराचार्य विरचित देवी अपराध क्षमापन स्तोत्र
हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अथ दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी॥
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला॥
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता॥
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी॥
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी॥
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी।
नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः॥
पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः॥

॥ श्री दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला सम्पूर्णम् ॥

श्री दुर्गाजी के ३२ नामों की माला

(हिन्दी अनुवाद)

१. दुर्गा
२. दुर्गार्तिशमनी
३. दुर्गापद्विनिवारिणी
४. दुर्गमच्छेदिनी
५. दुर्गसाधिनी
६. दुर्गनाशिनी
७. दुर्गतोद्धारिणी
८. दुर्गनिहन्त्री
९. दुर्गमापहा
१०. दुर्गमज्ञानदा
११. दुर्गदैत्यलोकदवानला
१२. दुर्गमा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१३. दुर्गमालोका
१४. दुर्गमात्मस्वरूपिणी
१५. दुर्गमार्गप्रदा
१६. दुर्गमविद्या
१७. दुर्गमाश्रिता
१८. दुर्गमज्ञानसंस्थाना
१९. दुर्गमध्यानभासिनी
२०. दुर्गमोहा
२१. दुर्गमगा
२२. दुर्गमार्थस्वरूपिणी
२३. दुर्गमासुरसंहन्त्री
२४. दुर्गमायुधधारिणी
२५. दुर्गमाङ्गी
२६. दुर्गमता
२७. दुर्गम्या
२८. दुर्गमेश्वरी
२९. दुर्गभीमा
३०. दुर्गभामा
३१. दुर्गभा
३२. दुर्गदारिणी।

जो मनुष्य मुझ दुर्गा की इस नाममाला का जाप करता है, वह निःसंदेह सब प्रकार के भयों से मुक्त हो जायेगा।

कोई शत्रु से पीड़ित हो अथवा दुर्भेद्य बन्धन में पड़ा हो तो, इन बत्तीस नामों के पाठ मात्र से संकट से छुटकारा पा जाता है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। यदि राजा क्रोध से भरकर वध के लिये अथवा और किसी कठोर दण्ड के लिये आज्ञा दे दे या युद्ध में शत्रुओं द्वारा मनुष्य घिर जाये अथवा वन में व्याघ्र आदि हिंसक जन्तुओं के चंगुल में फँस जाय, तो इन बत्तीस नामों का एक सौ आठ बार पाठमात्र करने से यह सम्पूर्ण भयों से मुक्त हो जाता है। विपत्ति के समय इसके समान भयनाशक उपाय दूसरा नहीं है। देवगणों! इस नाममाला का पाठ करने वाले मनुष्यों की कभी कोई हानि नहीं होती। अभक्त, नास्तिक और शठ मनुष्य को इसका उपदेश नहीं देना चाहिये। जो भरी विपत्ति में पड़ने पर भी इस नामावली का हजार, दस हजार अथवा लाख बार पाठ स्वयं करता या ब्राह्मणों से कराता है, वह सब प्रकार की विपत्तियों से मुक्त हो जाता है।

देवताओं से ऐसा कहकर जगदम्बा वहीं अन्तर्धान हो गईं। दुर्गाजी के इस उपाख्यान को जो सुनते हैं, उन पर कोई विपत्ति नहीं आती।

॥ श्री दुर्गा जी के बत्तीस नामों की माला सम्पूर्ण ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री सूक्तम्

अथ ध्यानम्

अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुंजवर्णा
कर युगल-धृतेष्टा-ऽभीति युद्मामबुजा च।
मणिमय मुकुटाढ्याऽलंकृता कल्पजालै-
र्भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥

ॐहिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो मम आवह॥ १॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ २॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद-प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ ३॥

कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामर्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ ४॥

चन्द्रां प्रभासां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमीं शरणंमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥ ५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तुमायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ ६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ ७॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ ८॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ ९॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ १०॥

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ ११॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ १२॥

आर्द्रां पुष्पकरिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ १३॥

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ १४॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो
दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥ १५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पन्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ १६॥

॥ इति श्रीसूक्तं समाप्तम्॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री सूक्तम्

(हिन्दी अनुवाद)

हे जातवेदा अग्निदेव! आप बीते हुए सभी वृतान्तों को जानने वाले तथा बतलाने वाले हैं अतः सुवर्ण के समान पीतवर्ण वाला तथा किञ्चित् हरितवर्ण वाली तथा हरिणी रूपधारिणी सुवर्णमिश्रित रजत की माला धारण करने वाली, चाँदी के समान धवल पुष्पों की माला धारण करने वाली, चन्द्रमा के सदृश प्रकाशमान तथा चन्द्रमा की तरह संसार को प्रसन्न करने वाली या चंचला के समान रूप वाली या हिरण्यमय ही जिसका शरीर है, ऐसे गुणों से युक्त लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ॥ १॥

हे जातवेदा अग्निदेव! आप उन जगत् प्रसिद्ध लक्ष्मी जी को मेरे लिए बुलाओ जिनके आवाहन करने पर मैं सुवर्ण, गौ, अश्व और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ॥ २॥

जिस देवी के आगे घोड़े और मध्य में रथ हैं अथवा जिसके सम्मुख घोड़े रथ में जुते हुए हैं, ऐसे रथ में बैठी हुई, हाथियों के निनाद से संसार को प्रफुल्लित करने वाली देदीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देने वाली लक्ष्मी को मैं अपने सम्मुख बुलाता हूँ। दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता वह लक्ष्मी मेरे घर में सर्वदा निवास करे॥ ३॥

जिसका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मन्दहास्ययुक्ता है, जो चारों ओर सुवर्ण से ओत-प्रोत है एवं दया से आर्द्र हृदय वाली या समुद्र से प्रादुर्भूत होने के कारण आर्द्र शरीर होती हुई भी देदीप्यमान है। स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नाना प्रकार के मनोरथों को पूर्ण करने वाली,

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कमल के ऊपर विराजमान, कमल के सदृश गृह में निवास करने वाली संसार प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने पास बुलाता हूँ॥ ४॥

चन्द्रमा के समान प्रकाश वाली, प्रकृत काँतिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्गलोक में इन्द्रादि देवों से पूजित, अत्यन्त दानशीला, स्वर्गलोक में इन्द्रादि देवों से पूजित, अत्यन्त दानशीला, कमल के मध्य में रहने वाली, सभी की रक्षा करने वाली एवं आश्रयदात्री, जगद्विख्यात उन लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता हूँ। हे लक्ष्मी! आपकी कृपा से मेरी दरिद्रता नष्ट हो। अतः मैं स्वीकार करता हूँ अर्थात् तुम्हारा आश्रय लेता हूँ॥ ५॥

हे सूर्य के समान काँति वाली! आपके तेजोमय प्रकाश के बिना पुष्प के फल देने वाला एक वृक्ष-विशेष उत्पन्न हुआ। तद्नन्तर आपके हाथ से बिल्व का वृक्ष उत्पन्न हुआ। उस बिल्व वृक्ष का फल मेरे वाह्य और आभ्यन्तर की दरिद्रता को नष्ट करे॥ ६॥

हे लक्ष्मी! देवसखा अर्थात् श्री महादेव के सखा (मित्र) इन्द्र, कुबेरादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्निदेव की उपासना करूँ एवं मणि के साथ अर्थात् चिन्तामणि के साथ या कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति अर्थात् दक्षकन्या कुबेर की कोषशाला या यश मुझे प्राप्त हो अर्थात् धन और यश दोनों ही मुझे प्राप्त हों। मैं इस संसार में उत्पन्न हुआ हूँ, अतः हे कुबेर! आप यश और ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें॥ ७॥

भूख तथा प्यासरूप मल को धारण करने वाली एवं लक्ष्मी की ज्येष्ठ भगिनी दरिद्रता का मैं नाश करता हूँ अर्थात् दूर करता हूँ। हे लक्ष्मी! आप मेरे घर में अनैश्वर्य तथा धन वृद्धि के प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें॥ ८॥

सुगन्धित पुष्प के समर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

भी न दबने योग्य, धन-धान्य से सर्वदा पूर्ण कर गौ, अश्वादि पशुओं की समृद्धि देने वाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा संसार प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर में सादर बुलाता हूँ॥ ९॥

हे लक्ष्मी! मैं आपके प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं संकल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप (अर्थात् दुग्ध-दध्यादि एवं यव-ब्रीह्यादि) एवं अन्नों के रूप (अर्थात् भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य-चतुर्विध भोज्य पदार्थ) इन सभी पदार्थों को प्राप्त करूँ। सम्पत्ति और यश मुझमें आश्रय लें अर्थात् मैं लक्ष्मीवान् एवं कीर्तिमान बनूँ॥ १०॥

'कर्दम' नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्रवाली हुई है। हे कर्दम! तुम मुझमें अच्छी प्रकार से निवास करो अर्थात् कर्दम ऋषि की कृपा होने पर लक्ष्मी को मेरे यहाँ रहना ही होगा। हे कर्दम! मेरे घर में लक्ष्मी निवास करें, केवल इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करने वाली सम्पूर्ण संसार की माता लक्ष्मी (ख्याति नामक कन्या की पुत्री) को मेरे वंश में निवास कराओ॥ ११॥

जिस प्रकार कर्दम की सन्तति 'ख्याति' से लक्ष्मी अवतरित हुई,उसी प्रकार कल्पान्तर में भी समुद्र मन्थन द्वारा चौदह रत्नों के साथ लक्ष्मी का भी आविर्भाव हुआ है। इसी अभिप्राय से कहा जा सकता है कि वरुण देवता स्निग्ध अर्थात् मनोहर पदार्थों को उत्पन्न करें। (पदार्थों में सुन्दरता ही लक्ष्मी है। लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रीत—ये चार पुत्र हैं। इनमें 'चिक्लीत से प्रार्थना की गई है कि') हे चिक्लीत नामक लक्ष्मीपुत्र! तुम मेरे गृह में निवास करो। केवल तुम ही नहीं, अपितु दिव्यगुण युक्ता तथा सर्वाश्रयभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ॥ १२॥

हे अग्निदेव! तुम मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात् दिग्गजों (हाथियों) के शुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना (आर्द्र शरीर वाली) पुष्टि को देने

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

वाली अथवा पुष्टि रूपा रक्त और पीतवर्ण वाली, कमल की माता धारण करने वाली, संसार को प्रकाशित करने वाली प्रकाश स्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ॥ १३॥

हे अग्निदेव! तुम मेरे घर में भक्तों पर सदा दयार्द्रचित्त अथवा समस्त भुवन जिसकी याचना करते हैं, दुष्टों को दण्ड देने वाली अथवा यष्टिवत् अवलम्बनीया (सारांश यह है कि, 'जिस प्रकार लकड़ी के बिना असमर्थ पुरुष चल नहीं सकता, उसी प्रकार लक्ष्मी के बिना संसार का कोई भी कार्य नहीं चल सकता'), सुन्दर वर्ण वाली एवं सुवर्ण की माला वाली सूर्यरूपा (अर्थात् जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत् का पालन-पोषण करता है उसी प्रकार लक्ष्मी, ज्ञान और धन के द्वारा संसार का पालन-पोषण करती है) अत प्रकाश स्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ॥ १४॥

हे अग्निदेव! तुम मेरे यहाँ उन जगद्विख्यात लक्ष्मी को जो मुझे छोड़कर अन्यत्र न जाने वाली हों, उन्हें बुलाओ। जिन लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ अर्थात् स्थिर लक्ष्मी को प्राप्त करूँ॥ १५॥

जो मनुष्य लक्ष्मी की कामना करता हो, वह पवित्र और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौघृत का हवन और साथ ही श्रीसूक्त की पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन पाठ करें॥ १६॥

॥ श्री सूक्तम् हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दुर्गासप्तशती के सिद्ध सम्पुट-मन्त्र

सप्तशती अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष—चारों पुरुषार्थों को प्रदान करनेवाली है। जो व्यक्ति जिस भाव और जिस कामना से श्रद्धा एवं विधि के साथ सप्तशती का पारायण करता है, उसे उसी भावना और कामना के अनुसार निश्चय ही फल-सिद्धि होती है। यहाँ हम कुछ ऐसे चुने हुये मन्त्रों को प्रस्तुत करते हैं, जिनका सम्पुट देकर विधिवत् पाठ करने से विभिन्न पुरुषार्थों की व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से सिद्धि होती है। इनमें अधिकांश सप्तशती के ही मन्त्र हैं।

(१) सामूहिक कल्याण के लिये—

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या
नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः॥

(२) विश्व के अशुभ तथा भय का विनाश करने के लिये—

यस्याः प्रभावमतुलंभगवाननन्तो ब्रह्मा
हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशाय
चाशुभभयस्य मतिं करोतु॥

(३) विश्व की रक्षा के लिये—

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां
त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

(४) विश्व के अभ्युदय के लिये—

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः॥

(५) विश्वव्यापी विपत्तियों के नाश के लिये—

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥

(६) विश्व के पाप-ताप-निवारण के लिये—

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं
यथासुरवधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्॥

(७) विपत्ति नाश के लिये—

शरणागत दीनार्तपरित्राण परायणे
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणी नमोऽस्तु ते॥

(८) विपत्ति नाश और शुभ की प्राप्ति के लिये—

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।

(९) भय नाश के लिये—

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते॥

(१०) पाप-नाश के लिये—

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभयोऽनः सुतानिव॥

(११) रोग नाश के लिये—

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
तवामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥

(१२) महामारी नाश के लिये—

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽतु ते॥

(१३) आरोग्य और सौभाग्य की प्राप्ति के लिये—

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

(१४) सुलक्षणी पत्नी की प्राप्ति के लिये—

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्॥

(१५) सर्वबाधा-शान्ति के लिये—

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्॥

(१६) सर्वविध विकास के लिये—

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

धन्यास्त एवं निभृतात्मजभृत्यदारा

येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना॥

(१७) दारिद्रय और दुःखादि नाश के लिये—

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेंशजन्तोः

स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या

सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता॥

(१८) सर्वत्र रक्षा पाने के लिये—

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।

घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥

(१९) समस्त विद्याओं की प्राप्ति के लिये—

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः

स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।

त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्

का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः॥

(२०) सब प्रकार के कल्याण के लिये—

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।

शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

(२१) शक्ति प्राप्ति के लिये—

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।

गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

(२२) प्रसन्नता की प्राप्ति के लिये—

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव॥

(२३) विविध उपद्रवों से बचने के लिये—

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥

(२४) बाधामुक्त होकर धन-पुत्रादि की प्राप्ति के लिये—

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥

(२५) रूप और जय की प्राप्ति के लिये—

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

(२६) पाप नाश और भक्ति की प्राप्ति के लिये—

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

(२७) स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति के लिये—

सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः॥

(२८) मुक्ति के लिये—

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी के प्रमुख अवतार

एक देवी! अनेक नामः—

जैसा कि प्रारम्भ में निरूपित किया गया है, प्रकृति ही आदि देवी है। समय-समय पर उनके अनेक रूप, अवतार, प्रभाव और कार्य सम्पन्न हुए हैं। उन रूपान्तरों और कार्य व्यवहारों के आधार पर, उनके गुणों को आलम्बन बनाकर उनको विभिन्न नामों—संज्ञाओं से अभिहित किया गया है। यह स्थिति केवल देवीजी के नामों तक ही नहीं है, देवताओं को भी उसी प्रकार अनेक नामों से स्मरण किया गया है। वेश भूषा, आहार-विहार, गुण स्वभाव, आकृति-प्रकृति को आधार बनाकर शिव, विष्णु, राम, कृष्ण, दत्तात्रेय, इन्द्र, अग्नि, सूर्य, जल, और वायु आदि देवताओं को अनेक नामों से स्मरण किया जाता है। भगवान विष्णु और शिव के नामों की संख्या एक-एक हजार तक है। पौराणिक सन्दर्भों में उनका उल्लेख अनेक स्थलों पर प्राप्त होता है। यहाँ तक कि 'विष्णु सहस्त्र-नाम' और शिव सहस्त्रनाम' जैसे स्तोत्र भी प्रचलित हैं, जो उन देवताओं के हजार नामों की तालिका प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रकार विभिन्न आधारों पर देवी जी को भी शताधिक नामों से स्मरण किया जाता है। शक्ति, साधना से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों, शक्ति, तन्त्र के ग्रन्थों, मार्कण्डेय पुराण और देवी भागवत आदि में प्रसंगानुसार देवी के अनेक नामों का उल्लेख किया गया है। पाठकों, साधकों की जानकारी के लिए यहाँ संक्षेप में देवीजी के कुछ विशिष्ट नामों की तालिका प्रस्तुत की जा रही है:—

नवदुर्गाः—

देवीजी का सर्वाधिक प्रसिद्ध रूप 'दुर्गा' का है। विभिन्न कारणों

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

से दुर्गाजी ने विशेष रूप से अवतार लेकर नौ बार भक्तों की रक्षा की। वे सभी अवतार, प्रसंग अनेक ग्रन्थों में विस्तार से वर्णित हैं। नवरात्र में उन्हीं नव अवतारों की (प्रतिदिन क्रमशः एक अवतार की) पूजा की जाती है:—

१. शैलपुत्री
२. ब्रह्मचारिणी
३. चन्द्रघण्टा
४. कूष्माण्डा
५. स्कन्दमाता
६. कात्यायनी
७. कालरात्रि
८. महागौरी
९. सिद्धिदात्री।

अष्ट मातृकाः—

नवदुर्गाओं के अतिरिक्त ये देवी रूप भी बहुत सम्मान्य हैं:—

१. ऐन्द्री
२. वैष्णवी
३. माहेश्वरी
४. कौमारी
५. लक्ष्मी
६. धरा
७. ईश्वरी
८. ब्राह्मी।

दश महाविद्याः—

महाविद्याओं के रूप में देवी के दस नाम प्रसिद्ध हैं, उनका विस्तृत विवेचन आगे किया जायेगा। यहाँ प्रसंग पूर्ति के निमित्त उनकी नामावली प्रस्तुत है:—

१. काली
२. तारा
३. षोडशी
४. भुवनेश्वरी
५. भैरवी
६. छिन्नमस्ता
७. धूमावती
८. बगलामुखी
९. मातंगी
१०. कमला।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दुर्गाजी के ३२ नामों की और १०८ नामों की माला

१. दुर्गा
२. दुर्गार्तिशमनी
३. दुर्गापद्विनिवारिणी
४. दुर्गमच्छेदिनी
५. दुर्गसाधिनी
६. दुर्गनाशिनी
७. दुर्गतोद्धारिणी
८. दुर्गनिहन्त्री
९. दुर्गमापहा
१०. दुर्गमज्ञानदा
११. दुर्गदैत्यलोकदवानला
१२. दुर्गमा
१३. दुर्गमालोका
१४. दुर्गमात्मस्वरूपिणी
१५. दुर्गमार्गप्रदा
१६. दुर्गमविद्या
१७. दुर्गमाश्रिता
१८. दुर्गमज्ञानसंस्थाना
१९. दुर्गमध्यानभासिनी
२०. दुर्गमोहा
२१. दुर्गमगा
२२. दुर्गमार्थस्वरूपिणी
२३. दुर्गमासुरसंहन्त्री
२४. दुर्गमायुधधारिणी
२५. दुर्गमाङ्गी
२६. दुर्गमता
२७. दुर्गम्या
२८. दुर्गमेश्वरी
२९. दुर्गभीमा
३०. दुर्गभामा
३१. दुर्गभा
३२. दुर्गदारिणी।

भगवती दुर्गाजी की उपर्युक्त नामावली में उन्हें बत्तीस संज्ञाओं से अभिहित किया गया है। इसके अतिरिक्त ग्रन्थों में एक और नामवाली प्राप्त होती है, जिसमें देवीजी के १०८ नामों (अष्टोत्तरशत) का उल्लेख है। वह नामावली इस प्रकार हैं:—

१. सती
२. साध्वी
३. भवप्रीता
४. भवानी
५. भगमोचनी
६. आर्या

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७. दुर्गा
८. जाया
९. आद्या
१०. त्रिनेत्रा
११. शूलधारिणी
१२. पिनाकधारणी
१३. चित्रा
१४. चन्द्रघण्टा
१५. महातपा
१६. मनः
१७. बुद्धि
१८. अहंकारा
१९. चित्ररूपा
२०. चिता
२१. चितिः
२२. सर्वमन्त्रमयी
२३. सत्ता
२४ सत्यानन्दरूपिणी (सत्या)
२५. अव्यया
२६. सदागति (सद्गति)
२७. शाम्भवी
२८. देवमाता
२९. चिन्ता
३०. रत्नप्रिया
३१. सर्वविद्या
३२. दक्षकन्या
३३. दक्षयज्ञ.विनाशिनी
३४. अपर्णा
३५. अनेक वर्णा
३६. पाटला
३७. पाटलावता
३८. पट्टाबरा (पट्टाम्बर परिधाना)
३९. मञ्जीररञ्जिनी
४०. अमेयविक्रमा
४१. क्रूरा
४२. सुन्दरी
४३. सुरसुन्दरी
४४. नवदुर्गा
४५. मातंगी
४६. मतंगमुनिपूजिता
४७. ब्राह्मी
४८. अनन्ता
४९. भाविनी
५०. भाव्या
५१. भव्या
४२. चामुण्डा
५३. वाराही
५४. लक्ष्मी
५५. पुरुषाकृति
५६. विमला
५७. उत्कर्षिणी
५८. ज्ञाना
५९. क्रिया
६०. नित्या

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६१. बुद्धिदा
६२. बहुला
६३. बहुप्रेमा
६४. सर्ववाहन वाहना
६५. निशुम्भ-शुम्भ हननी
६६. महिषासुर मर्दिनी
६७. मधुकैटभहन्ती
६८. चण्डमुण्ड विनाशिनी
६९. सर्वासुर विनाशा
७०. सर्वदानव-घातिनी
७१. सर्वशास्त्रमयी
७२. सत्या
७३. सर्वास्त्रधारिणी
७४. माहेश्वरी
७५. ऐन्द्री
७६. कौमारी
७७. वैष्णवी
७८. युवती
७९. यति
८०. अप्रौढ़ा
८१. प्रौढ़ा
८२. वृद्धमाता
८३. बलप्रदा
८४. महोदरी
८५. भुक्केशी
८६. घोररूपा
८७. महाबला
८८. अग्निज्वाला
८९. रौद्रमुखी
९०. कालरात्रि
९१. तपस्विनी
९२. नारायणी
९३. भद्रकाली
९४. विष्णुमाया
९५. खलोदरी
९६. शिवदूती
९७. कराली
९८. अनन्ता
९९. परमेश्वरी
१००. अनेक शास्त्र-हस्ता
१०१. अनेकास्त्रधारिणी
१०२. कुमारी
२०३. एककन्या
२०४. कैशोरी
२०५. कात्यायनी
१०६. सावित्री
१०७. प्रत्यक्षा
१०८. ब्रह्मवादिनी।

मान्यता है कि यदि कोई साधक और कुछ न करके, केवल इन १०८ नामों का पाठ करते हुए प्रतिदिन देवीजी का श्रद्धापूर्वक स्मरण स्तवन करे, तो वह भी उनकी कृपा से सफल मनोरथ हो जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी के विशेष प्रभावी श्रीविग्रह

यद्यपि भारत में देवीजी के मन्दिरों और मूर्तियों की गणना नहीं की जा सकती और वे सभी महत्वपूर्ण हैं। परन्तु पौराणिक-संदर्भों, साधनागत, मान्यताओं तथा कुछ अन्य विशिष्ट प्रभावोपलब्धियों के आधार पर निम्नलिखत मूर्तियाँ और स्थान देवीजी के विशेष प्रभाव क्षेत्र माने जाते हैं। साधकों एवं भक्तों का अनुमान है कि अन्य स्थानों की अपेक्षा यहाँ की मूर्तियों का दर्शन व पूजन निश्चित रूप से अल्प समय में ही अपने प्रभाव की अनुभूति करा देता है। वे विशिष्ट बारह शक्ति पीठ (देवी के निवास स्थल) निम्नांकित हैं:—

१. कामाक्षी देवी — काञ्चीपुरम्
२. भ्रमराम्बा देवी — मलय प्रदेश
३. कुमारी देवी — कन्याकुमारी
४. अम्बाजी — गुजरात (प्रभास तीर्थ)
५. महालक्ष्मी — कोल्हापुर
६. कालिकाजी — उज्जैन
७. ललिता — प्रयाग
८. मंगलावती — गया
९. विन्ध्यवासिनी — विन्ध्याचल
१०. विशालाक्षी — बनारस (काशी)
११. त्रिपुरसुन्दरी — बंगाल (त्रिपुरा)
१२. गुह्यकेशी — नेपाल

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

'स्वाहादेवी'
(दुर्गा का एक नाम-रूप) के पर्याय

श्री दुर्गाजी का एक नाम 'स्वाहा' भी है। इस 'स्वाहा' नाम के अन्य भी कई पर्यायवाची शब्द (नाम) हैं। यथा—

१. स्वाहा २. वह्निप्रिया ३.वह्निजाया ४. शक्ति ५. क्रिया ६. सन्तोषकारिणी ७. कालरात्रि ८. ध्रुवा ९. परिपाककरी १०. गति ११. नरदाहिका १२. दहन, क्षमा १३. संसारसाररूपा १४. देवजीवनरूपा १५. संसारतारिणी १६. देव पोषणकारिणी।

देवी के १०८ शक्तिपीठ

सती (शिव, पत्नी)का आत्मदाह प्रसंग एक सुप्रसिद्ध पौराणिक आख्यान है। उसके अनुसार राजा दक्ष प्रजापति के यहाँ यज्ञ समारोह में अपने पति शिवजी की उपेक्षा देखकर सती ने आत्म-दाह कर लिया था। समाचार पाकर शिवजी के गणों ने यज्ञ विध्वंस करके राजा दक्ष को समुचित दण्ड दिया। प्रिया के विछोह में शिवजी बहुत व्याकुल हो गये। वे सती का शव कन्धे पर लाकर विक्षिप्तों की तरह इधर-उधर भागने लगे। वे कभी-कभी उन्मत्तों की भाँति प्रलाप करते हुए गाने और नाचने भी लगते थे। भावावेश में उनका वह नृत्य महाताण्डव में परिवर्तित हो गया। अस्वाभाविक रूप में शिवजी को असन्तुलित होते देख देवताओं को चिन्ता हुई। वस्तुतः सृष्टि के नियामक शिवजी ही हैं। उनका मानसिक असन्तुलन विश्व, ब्रह्माण्ड को नष्ट कर सकता था। ऐसे भयंकर संकट की आशंका से सारे देवता सिहर उठे। तब विष्णु ने यह सोचकर कि शिवजी का क्षोभ सती के शव के कारण ही है, उसे अपने चक्र से छिन्न-भिन्न कर दिया। चूँकि

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

शिवजी त्वरित गति से इधर-उधर भ्रमण, नर्तन कर रहे थे। अत:विष्णु द्वारा वह मन्त्र चालित चक्र शिवजी के कन्धे पर लदे सती के शव से बार-बार टकराता रहा। उसकी तीव्र गति से शव का जो भी अंग स्पर्श में आया, तत्क्षण कटकर दूर जा गिरा। इस प्रकार सती के शवखण्ड जहाँ-जहाँ गिरे पावनता की दृष्टि से उन समस्त स्थानों को 'शक्तिपीठ' अथवा 'सिद्धपीठ' की संज्ञा दी गई। जहाँ शक्ति की देवी-शिवपत्नी श्री सतीजी का निरन्तर निवास माना गया। यही कारण है कि आज भी देवी पूजा सम्बन्धी कितने ही समारोह और पारिवारिक मंगल, संस्कार सम्पन्न करने के लिए—देवी उपासक उन सिद्ध स्थलों (शक्तिपीठों) में जाते रहते हैं।

विवेचन भेद से शक्ति-पीठों की संख्या में अन्तर भी है। परन्तु यह निश्चित है कि शक्ति-पीठों का अपना एक अलौकिक प्रभाव है और यहाँ पर की गयी देवी-उपासना कभी व्यर्थ नहीं होती। तन्त्र ग्रन्थों में केवल इक्यावन शक्तिपीठ माने गये हैं। इस ग्रन्थ में सती के शवांगों का पूरा विवरण कि कहाँ कौन सा अंग कहाँ गिरा था, वहाँ कौन सी शक्ति निवास करती है तथा वहाँ के भैरव (नगरपाल, स्थान रक्षक) का क्या नाम है—विस्तार से वर्णित है। उस विवरण को पढ़कर लगता है कि १०८ शक्ति-पीठों की परिकल्पना इस आधार पर की गयी होगी कि चक्र द्वारा विच्छिन्न शवांग (छोटे-बड़े सभी खण्ड तथा रक्त मांस के अंश) कुल जितने स्थानों पर गिरे थे, उन सबकी योग संख्या १०८ थी। 'तन्त्र चूड़ामणि' में वर्णित ५१ शक्तिपीठ वे स्थान हैं, जहाँ सती के समूचे और स्पष्ट अंग कटकर गिरे थे। चाहे जो भी कारण हो, शास्त्रों में ५१ शक्ति-पीठों को विशेष मान्यता प्राप्त है और आज भी नवरात्र में देवी पर्वों पर साधुजन अपनी श्रद्धासामर्थ्य के अनुसार निकटस्थ शक्तिपीठ पर जाकर पूजा, उपासना तथा अन्य धार्मिक कृत्य सम्पन्न करते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पद्म पुराण श्रीमद् देवीभागवत पुराण, मत्स्य पुराण और ब्रह्म पुराण आदि में १०८ शक्तिपीठों का वर्णन मिलता है। किस सिद्धपीठ में कौन सी देवी निवास करती है, इसका क्रमिक विवरण इस प्रकार है:—

१०८ शक्तिपीठ और निवासिनी देवी

१. वाराणसी–विशालाक्षी
२. नैमिषारण्य–लिंगधारिणी
३. प्रयाग–ललिता
४. गन्धमादन–कामाक्षी
५. मानसरोवर–कुमुदा
६. मानसरोवर–अम्बर–विश्वकामा
७. गोमन्त (गोआ)–गोमती
८. मन्दराचल–कामाचारिणी
९. चैत्ररथवन–मदोत्कटा
१०. हस्तिनापुर–जयन्ती
११. कन्नौज–गौरी
१२. मलय–रम्भा
१३. भुवनेश्वर–कीर्तिमती
१४. विश्वपीठ–विश्वेश्वरी
१५. पुष्कर–पुरुहता
१६. केदारधाम–सन्मार्गदायिनी
१७. हिमालय पृष्ठभाग–नन्दा
१८. गोकर्ण–भद्रकर्णिका
१९. स्थानेश्वर–भवानी
२०. बिल्वतीर्थ–बिल्वपत्रिका
२१. श्रीशैल–माधवी
२२. भद्रेश्वर–भद्रा
२३. वराहपर्वत–जया
२४. सन्तान तीर्थ–ललिताम्बा
२५. गया–मंगला
२६. जगन्नाथपुरी–विमला
२७. सहस्त्राक्ष–उत्पलाक्षी
२८. कमलाक्ष–महोत्पाल
२९. विपाशा–अमोघाक्षी
३०. पुण्ड्रवर्धन–पाटला
३१. सुपार्श्व–नारायणी
३२. त्रिकूट–भद्रसुन्दरी
३३. विपुल–विपुला
३४. मलयाचल–कल्याणी
३५. सह्याद्रि–एकवीरा
३६. हरिश्चन्द्र–चन्द्रिका
३७. रामतीर्थ–रमणी
३८. यमुना–मृगावती
३८. कोटितीर्थ–कोटवी
४०. माधवदन–सुगन्धा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४१. गोदाश्रम-त्रिसंध्या
४२. गंगाद्वार-रतिप्रिया
४३. शिवकुण्ड-सुभानन्दा
४४. देविकानन्द-नन्दिनी
४५. द्वारावती-रूक्मिणी
४६. वृन्दावन-राधा
४७. कमलालय-कमला
४८. रुद्रिकोटि-रोहिणी
४९. कालिंजर-काली
५०. शालग्राम-महादेवी
५१. शिवलिंग-जलप्रिया
५२. महालिंग-कपिला
५३. मारकोट-मुकुटेश्वरी
५४. मायापुरी (हरिद्वार)-कुमारी
५५. उष्णतीर्थ-अभया
५६. विन्ध्यकन्दरा-नितम्बा
५७. मान्डव्य तीर्थ-माण्डवी
५८. माहेश्वरीपुर-स्वाहा
५९. छागलाण्ड-प्रचण्डा
६०. अमरकण्टक-चण्डिका
६१. सोमेश्वर-वृषारूढ़ा
६२. प्रभास तीर्थ-पुष्करावती
६३. सरस्वती-देवमाता
६४. महालय-महाभागा
६५. पनगंगा-पिंगलेश्वरी
६६. कृतशीलतीर्थ-सिंहिका
६७. कार्तिकेयपीठ-यशस्करी
६८. उत्पलावर्त्तक-लीला
६९. शोणसंयम-सुभद्रा
७०. सिद्धवन-लक्ष्मा
७१. भारताश्रम-अनंगा
७२. मथुरा-देवकी
७३. पाताल-परमेश्वरी
७४. चित्रकूट-सीता
७५. विंध्याचल-विंध्यवासिनी
७६. कोल्हापुर-महालक्ष्मी
७७. विनायकतीर्थ-उमादेवी
७८. वैद्यनाथ-अरोगा
७९. महाकाल-माहेश्वरी
८०. कपालमोचन-शुद्धि
८१. कारावन-माया
८२. शंखोद्वार-ध्वनि
८३. पिण्डारक-धृति
८४. चन्द्रभागा-काला
८५. अच्छोद-शिवधारिणी
८६. वेणुतट-अमृता
८७. बदरीतीर्थ-उर्वशी
८८. उत्तरकुरु-औषधि
८९. कुशद्वीप-कुशोदक
९०. हेमकुट-मन्मथा
९१. मुकुटतीर्थ-सत्यवादिनी
९२. अश्वतीर्थ-वन्दनीया

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

९३. वैश्रवणालय-निधि
९४. वेदबेदन-गायत्री
९५. शिवसन्निधि-पार्वती
९६. देवलोक-इन्द्राणी
९७. जालन्धर-विश्वमुखी
९८. किष्किन्धा-तारा
९९. देवदारुकवन-षष्टि
१००. काश्मीर-मेघा
१०१. हिमाद्रि-भीमा
१०२. विश्वेश्वर-पुष्टि
१०३. ब्रह्मलोक-सरस्वती
१०४. सूर्यबिम्ब-प्रभा
१०५. मातृका-वैष्णवी
१०६. सतीसमुदाय-अरुन्धती
१०७. नारीसमुदाय-तिलोत्तमा
१०८. चित्र (दृश्य)-ब्रह्मकला

यद्यपि भारतीय अध्यात्म के अनेक आदिग्रन्थों में इन १०८ सिद्धपीठों का उल्लेख किया है, परन्तु आज के युग में, जबकि सब कुछ व्यावहारिक दृष्टि से, यथार्थवादी कसौटी पर परखा जाता है, ये समस्त शक्तिपीठ उपलब्ध अथवा दृश्यमान नहीं हैं। कई एक का तो अस्तित्व भी संदिग्ध प्रतीत होता है, पौराणिक कल्पना मात्र। कदाचित् ऐसे ही द्वन्द्व के निवारण हेतु परवर्ती ग्रन्थ 'तन्त्र-चूड़ामणि' में केवल ५१ शक्तिपीठों की परिकल्पना को मान्यता दी गयी है। इस ग्रन्थ में वर्णित ५१ शक्तिपीठों के स्थान वर्तमान भारत भूमि पर अवस्थित हैं। आगे उनका विस्तृत विवरण प्रस्तुत है।

चूंकि शक्तिपीठों की अवधारणा में सती के वहाँ गिर हुए अंगों को प्रमुख आधार माना गया है। इस प्रकार उस तीर्थ शक्तिपीठ में निवास करने वाली देवी तथा उसके पृथक एक भैरव (स्वामी, सेवक, सहायक, रक्षक अथवा शिव का प्रतिरूप) की भी कल्पना की गयी है।

शक्तिपीठ की क्रम संख्या, नाम, वर्तमान स्थान, वहाँ सती का कौन-सा अंगा गिरा था, वहाँ कौनसी शक्ति (देवी रूप) निवास करती है, वहाँ का भैरव कौन है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

देवी के ५१ शक्तिपीठ

१. हिंगुला, क्वेटा (बिलोचिस्तान), ब्रह्मरन्ध्र, कोट्टीशा, भीम लोचन।
२. शर्करार, सक्खर, (सिन्ध), तीनों नेत्र, महिषमर्दिनी, क्रोधीश।
३. सुगन्धा, शिकारपुर (सिन्ध), नासिका, सुनन्दा, त्र्यम्बक।
४. काश्मीर, कण्ठ भाग, महामाया, त्रिसन्धेश्वर।
५. ज्वालामुखी, काँगड़ा, महाजिह्वा, सिद्धिदा, उन्मत्त भैरव।
६. जालन्धर, पंजाब, स्तन, त्रिपुरमालिनी, भीषण।
७. वैद्यनाथ, चिता भूमि (बिहार), हृदय, जयदुर्गा, वैद्यनाथ।
८. काठमाण्डु, नेपाल, दोनों जानु भाग, गुह्येश्वरी, कपाली।
९. मानस, मालवा, दायाँ हाथ, दाक्षायणी, अमर।
१०. विरजा क्षेत्र, कटक (उड़ीसा), नाभि, विमल, जगन्नाथ।
११. गण्डकी, मुक्तिनाथ, गण्ड-स्थल, गण्डकी देवी, चक्रपाणि।
१२. बहुला, केतुग्राम, बाँयीं भुजा, बहुला, भीरुक।
१३. उज्जयिनी, उज्जैन, कुहनी, मंगल चण्डी (हरसिद्धि) कपिलाम्बर।
१४. त्रिपुरा, राधाकिशोर, दायाँ पैर, त्रिपुरसुन्दरी, त्रिपुरेश।
१५. चहल, सीताकुण्ड चटगाँव, दायीं भुजा, भवानी, चन्द्रशेखर।
१६. त्रिस्रोता, जलपाईगुड़ी (बंगाल), बायाँ पैर, भ्रामरी, भैरवेश्वर।
१७. प्रयाग, इलाहाबाद, हाथ की उँगलियाँ, ललिता, भव।
१८. कामगिरि, गोहाटी (आसाम), योनि प्रदेश, कामाख्या, उमानन्द।
१९. जयन्ती, बाडरभाग गाँव, बायीं जाँघ, जयन्ती, कुमुदीश्वर।
२०. युगाद्या, बर्दवान, दायाँ अँगूठा, भूतधात्री, क्षीरखण्डक।
२१. कालीपीठ, कलकत्ता, दायें पैर की उँगलियाँ, कालिका, नकुलीश।
२२. किरीट, मुर्शिदाबाद, किरीट, विमला, सम्वर्त्त।
२३. वाराणसी, बनारस, कुण्डल, विशालाक्षी, कालभैरव।
२४. कन्याश्रम, कन्याकुमारी, पृष्ठभाग, शर्वाणी निमिष।
२५. कुरुक्षेत्र, स्थानेश्वर, गुल्फ, सावित्री, स्थाणु।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२६. मणिबन्ध, मणिपुर, दोनों मणिबन्ध, गायत्री, सर्वानन्द।
२७. श्रीशैल, श्रीहट्टा (आन्ध्र), ग्रीवा, महालक्ष्मी, शम्बरानन्द।
२८. काञ्ची, काञ्चीवरम् अस्थियाँ, देवगर्भा, रूरु।
२९. कालमाधव, मथुरा, नितम्ब भाग, काली, असितांग।
३०. शोणदेश, नर्मदा, नितम्बाँश, नर्मदा, भद्रसेन।
३१. रामगिरि, नागपुर, स्तनांश, शिवानी, चण्डभैरव।
३२. वृन्दावन, वृक्षवन, केशराशि, उमा, भूतेश।
३३. शुचि (अनिश्चित), ऊर्ध्वदन्त, नारायणी, संहार।
३४. पंचसागर, समुद्रक्षेत्र अधोदन्त, वाराही, महारुद्र।
३५. करतोयातट, भवानीपुर, बायाँ कान, अपर्णा, वामन भैरव।
३६. श्रीपर्वत, नीलाचल पर्वत, दायाँ गुल्फ, श्री सुन्दरी, सुन्दरानन्द।
३७. विभास, मिदनापुर, बायाँ गुल्फ, कपालिनी, सर्वानन्द।
३८. प्रभास, सोमनाथ (गुजरात) , उदर भाग, चन्द्रभागा, वक्रतुण्ड।
३९. भैरव पर्वत, खपरी, ओष्ठ, अवन्ती, लम्बकर्ण।
४०. सर्वशैल (अनिश्चित), बायाँ गण्डस्थल, रागिनी, वत्सनाभ।
४१. जनस्थल, नासिका, चिबुक, भ्रामरी, विकृताक्ष।
४२. गोदावरी तट, नासिका, गण्डस्थल, विश्वेश्वरी, दण्डपाणि।
४३. रत्नावली, कालहस्ती, दायाँ कन्ध, कुमारी, शिव।
४४. मिथिला, जनकपुर, बायाँ कन्धा, उमा, महोदर।
४५. तलहाटी, वीरभूमि, नला, कालिका, योगेश।
४६. कर्णाट, जरनपुर, कान, जयदुर्गा, अभीरु।
४७. वक्रेश्वर वीरभूमि, मन (हृदय), महिषमर्दिनी, वक्रनाथ।
४८. यशोर, खुलना, पाणि (हथेली), यशोरेश्वरी, भण्ड।
४९. अट्टहास, लाभपुर, निम्नओष्ठ, फुल्लरा, विश्वेश।
५०. नन्दिपुर, सैंथिया, कण्ठहार, नन्दिनी, नन्दिकेश्वर।
५१. लंका, लंका, नूपुर, इन्द्राणी, राक्षसेश्वर।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पाठ भेद अथवा मान्यता भेद से कुछ विद्वानों ने निम्नांकित दो अन्य शक्तिपीठों का भी उल्लेख किया है—

१. विराट क्षेत्र, राजस्थान (जयपुर, अलवर, भरतपुर के बीच का क्षेत्र), पैरों की ऊँगलियाँ, अम्बिका, भैरव अमृत।
२. मगध देश, पटना (बिहार), दायीं जंघा, सर्वानन्दकरी, व्योमकेश।

अस्तु, देवी की सत्ता, उनका अस्तित्व और प्रभाव सर्वत्र, कण-कण में व्याप्त है। साधक भक्त अपनी आस्था के अनुसार कहीं भी उनके दर्शन कर सकते हैं। वैसे कुछ शक्तिपीठ और देवी मन्दिर तथा प्रतिमाएँ निश्चत रूप से आज भी प्रभावशाली हैं और साधक जन वहाँ श्रद्धापूर्वक जायें तो अवश्य ही चमत्कारी अनुभूति होती है। इस दृष्टि से आसाम की कामाख्या देवी, हरिद्वार की मनसा देवी, उज्जैन की हरसिद्धि देवी, सतना की शारदा देवी और काँगड़ा की ज्वालामुखी देवी के दर्शनों की चमत्कारिक अनुभूति अनेक साधकों को हुई है। वैसे—'जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी॥' के अनुसार देवीजी भी सर्वत्र विराजमान हैं और कभी भी, कहीं भी, भक्त को दर्शन दे देती हैं।

चौंसठ योगिनियाँ

शक्ति ग्रन्थों में आदिशक्ति दुर्गा देवी के अनेक क्रमों से विभिन्न अवतारों का वर्णन किया गया है। उनके सौम्य और रौद्र अनेक रूप हैं, जो समय-समय पर विविध अवतारों में प्रकट हुए हैं। आदि शक्ति की सभी तीनों वृत्तियों (सात्त्विक, राजसिक और तामसिक) से सम्बन्धित विभिन्न देवियों की परिकल्पना की गई है। इसी क्रम से देवी अवतारों का एक वर्ग 'योगिनी' कहलाता है। इनके कुछ रूपों को छोड़कर, अधिकांश योगिनियों के रूप भयंकर, विकृत और

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

रौद्र हैं। अस्तु, देवता अपनी रूपरेखा में चाहे जैसा हो, साधक के लिए वह सदैव ही रक्षक होता है। इसी सिद्धान्त पर कितने ही साधक देवी के रौद्र रूपों में यक्षिणी योगिनी आदि की उपासना करते हैं। योगिनियों की संख्या चौंसठ है। इसीलिए इन्हें 'चतुर्षष्ठि योगिनी' कहा जाता है। यहाँ यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि यद्यपि योगिनियों की संख्या (६४) पर तो मतैक्य है, परन्तु उनके नाम और क्रम में बड़ा अन्तर है। इस प्रसंग में सामान्यतया प्रचलित नामावली इस प्रकार मानी जाती है—

१. अपर्णा
२. रूक्षकर्णी
३. राक्षसी
४. क्षपणा
५. क्षमा
६. पिंगाक्षी
७. क्षेमा
८. इला
९. नीलालया
१०. लीला
११. रक्ता
१२. बलाकेशी
१३. लालसा
१४. विमला
१५. हुताशी
१६. विशालाक्षी
१७. हुंकारा
१८. बड़वामुखी
१९. महाक्रूरा
२०. क्रोधना
२१. भयंकरी
२२. महानना
२३. हयानना
२४. तारा
२५. रससंग्राही
२६. शम्बरी
२७. उपक्षया
२८. तालधणिका
२९. रक्ताक्षी
३०. सुप्रसिद्धा
३१. विद्युद्जिह्वा
३२. करंकिणी
३३. मेघनादा
३४. प्रचण्डा
३५. उग्रा
३६. कौलकर्णी
३७. वरप्रदा
३८. चण्डा
४०. प्रपञ्चा
४१. प्रलयान्तिका
४२. शिशुवक्त्वा
४३. पिशाची
४४. लोलुपा
४५. सर्वज्ञा
४६. तरला
४७. तारा
४८. ऋग्वेदा
४९. वायुवेगा
५०. वृहतकुक्षि
५१. विकृता
५२. विश्वरूपिका

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५३. यमजिह्वा	५७. रागिनी (वामिनी)	६१. विडाली
५४. जयन्ती	५८. विकृतस्तना	६२. रेवती
५५. धमनी	५९. दर्पया	६३. पूतना
५६. तपनी	६०. जयन्तिका	६४. विजयान्तिका

यद्यपि आज के व्यस्त भौतिक युग में इन सबकी न तो उपासना सम्भव है और न उनकी प्रासंगिता ही अपना कोई विशेष महत्त्व रखती है। तथापि प्रसंग पूर्ति के लिए उल्लेख आवश्यक था। वैसे मेरा अपना मत और अनुभव है कि देवजी के ४-५ अति प्रचलित और सौम्य रूपों—(दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, चण्डिका, चामुण्डा, पार्वती, कौमारी) आदि में से किसी भी एक देवी की शरण लेकर भक्तजन, कष्टमुक्त होकर सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते हैं। अस्तु अगले पृष्ठ पर चौंसठ योगिनियों की नामावली, ग्रन्थ भेद के आधार पर पुनः प्रस्तुत की जा रही है—

प्रतिष्ठा-योगिनी में वर्णित चौंसठ योगिनी

१. दिव्य योगिनी	११. ह्लींकारी	२०. दीर्घलम्बोष्ठी
२. महायोगिनी	१२. भूतामयी (भूतडामरी)	२१. मालिनी
३. सिद्धयोगिनी		२२. मन्त्रयोगिनी
४. माहेश्वरी	१३. उर्ध्वकेशी	२३. कालाग्नि
५. प्रेताक्षी	१४. विरूपाक्षी	२४. मोहिनी,
६. डाकिनी	१५. शुष्काङ्गी	२५. चक्रायी
७. काली	१६. निशाकरी	२६. फूत्कारी
८. कालरात्रि	१७. नरभोजिनी	२७. वीरभद्रा
९. हुंकारी	१८. प्रेतवाहिनी	२८ धूम्राक्षी
१०. सिद्धवेताला	१९. कर्कारी	२९. कलहप्रिया

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३०. राक्षसी
३१. घोरत्ताक्षी
३२. चण्डी
३३. वाराही
३४. विशालाक्षी
३५. कौमारी
३६. मुण्डधारिणी
३७. भैरवी
३८. विराटी
३९. भयङ्करी
४०. वज्रधारिणी
४१. क्रोधी
४२. दुर्मुखी
४३. भक्षिणी
४४. कौमारी
४५. मन्त्रवाहिनी
४६. विशाली
४७. कार्मुकी
४८. काघ्री
४९. प्रेतभक्षिणी
५०. महाराक्षसी
५१. कुण्डलिनी
५२. बालुकायी
५३. कौवेरी
५४. यमदूती
५५. कौशिकी
५६. धूर्जरी
५७. घोररूपा
५८. कपालिनी
५९. कपालिका
६०. सिद्धिप्रदा
६१. विकटाक्षी (विकटानना)
६२. यक्षिणी
६३. अमला
६४. निकला

'कालिकापुराण' में वर्णित चौंसठ योगिनियाँ

शक्ति ग्रन्थों में एक और बहुत सामान्य ग्रन्थ है—'कालिका पुराण' इस ग्रन्थ में चौंसठ योगिनियों का उल्लेख मिलता है। विद्वानों ने इस नामावली को विशेष मान्यता दी है। ये नाम अन्य कई ग्रन्थों में भी प्राप्त होते हैं। मार्कण्डेय पुराण में तथा 'श्रीमद् देवी भागवत' में भी आदिशक्ति महामाया दुर्गाजी के अनेक रूपावतारों के सन्दर्भ में इन नामों का उल्लेख किया गया है—

१. ब्रह्माणी
२. चण्डिका
३. रौद्री
४. इन्द्राणी
५. कौमारी
६. वैष्णवी
७. दुर्गा
८. नारसिंही
९. कालिका
१०. चामुण्डा
११. शिवदूती
१२. वाराही
१३. कौशिकी
१४. माहेश्वरी
१५. शांकरी

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१६. जयन्ती
१७. सर्वमंगला
१८. काली
१९. कपालिनी
२०. मेधा
२१. शिवा
२२. शाकम्भरी
२३. भीमा
२४. शान्ता
२५. भ्रामरी
२६. रुद्राणी
२७. अम्बिका
२८. क्षमा
२९. धात्री
३०. स्वाहा
३१. स्वधा
३२. अपर्णा
३३. महोदरी
३४. घोररूपा
३५. महाकाली
३६. भद्रकाली
३७. भयंकरी
३८. क्षेमंकरी
३९. उग्रचण्डा
४०. चण्डोग्रा
४१. चण्डनायिका
४२. चण्डा
४३. चण्डवती
४४. चण्डी
४५. महामोहा
४६. प्रियंकरी
४७. बलविकारिणी
४८. बलप्रमथिनी
४९. मनोन्मथिनी
५०. सर्वभूतयक्षिनी
५१. उमा
५२. तारा
५३. महानिद्रा
५४. विजया
५५. जया
५६. शैलपुत्री
५७. चन्द्रघण्टा
५८. स्कन्दमाता
५९. कालरात्रि
६०. मातंगी
६१. कूष्माण्डा
६२. कात्यायनी
६३. महागौरी
६४. बगलामुखी

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री दुर्गाजी के १०८ नाम

१. सती
२. साध्वी
३. भवप्रीता
४. भवानी
५. भवमोचनी
६. आर्या
७. दुर्गा
८. जया
९. आद्या
१०. त्रिनेत्रा
११. शूलधारिणी
१२. पिनाकधारिणी
१३. चित्रा
१४. चंद्रघण्टा
१५. महातपा
१६. मन
१७. बुद्धि
१८. अहंकारा
१९. चित्तरूपा
२०. चिता
२१. चिति
२२. सर्वमंत्रमयी
२३. सत्ता
२४. सत्यानंदस्वरूपिणी
२५. अनन्ता
२६. भाविनी
२७. भाव्या
२८. भव्या
२९. अभव्या
३०. सदागति
३१. शाम्भवी
३२. देवमाता
३३. चिन्ता
३४. रत्नप्रिया
३५. सर्वविद्या
३६. दक्षकन्या
३७. दक्षयज्ञ विनाशिनी
३८. अपर्णा
३९. अनेकवर्णा
४०. पाटला
४१. पाटलावती
४२. पट्टाम्बर-परीधाना
४३. कलमंजीररंजिनी
४४. अप्रमेय-विक्रमा
४५. क्रूरा
४६. सुन्दरी
४७. सुरसुन्दरी
४८. वनदुर्गा
४९. मातंगी
५०. मतङ्गमुनि पूजिता
५१. ब्राह्मी
५२. माहेश्वरी
५३. ऐन्द्री
५४. कौमारी

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५५. वैष्णवी
५६. चामुण्डा
५७. वाराही
५८. लक्ष्मी
५९. पुरुषाकृति
६०. विमला
६१. उत्कर्षिणी
६२. ज्ञाना
६३. क्रिया
६४. नित्या
६५. बुद्धिदा
६६. बहुला
६७. बहुला प्रेता
६८. सर्ववाहन-वाहना
६९. निशुम्भशुम्भ-हननी
७०. महिषासुरमर्दिनी
७१. मधुकैटभ हन्त्री
७२. चण्डमुण्ड-विनाशिनी
७३. सर्वअसुर विनाशिनी
७४. सर्वदानवघातिनी
७५. सर्वशास्त्रमयी
७६. सत्या
७७. सर्वास्त्रधारिणी
७८. अनेकशस्त्रहस्ता
७९. अनेकास्त्रधारिणी
८०. कुमारी
८१. एककन्या
८२. कैशोरी
८३. युवती
८४. यति
८५. अप्रौढ़ा
८६. प्रौढ़ा
८७. वृद्ध माता
८८. बलप्रदा
८९. महोदरी
९०. मुक्तकेशी
९१. घोररूपा
९२. महाबला
९३. अग्निज्वाला
९४. रौद्रमुखी
९५. कालरात्रि
९६. तपस्विनी
९७. नारायणी
९८. भद्रकाली
९९. विष्णुमाया
१००. जलोदरी
१०१. शिवदूती
१०२. कराली
१०३. अनन्ता
१०४. परमेश्वरी
१०५. कात्यायनी
१०६. सांवित्री
१०७. प्रत्यक्षा
१०८. ब्रह्मवादिनी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री दुर्गा सहस्त्रनामावली

(श्री दुर्गाजी के १००० नाम)

१. ॐ दुं दुर्गायै नमः
२. ॐ दुर्गतिरायै नमः
३. ॐ दुर्गचलनिवासिन्यै नमः
४. ॐ दुर्गमार्गानुसञ्चारायै नमः
५. ॐ दुर्गमार्गनिवासिन्यै नमः
६. ॐ दुर्गमार्गप्रविष्टायै नमः
७. ॐ दुर्गमार्गप्रवेशिन्यै नमः
८. ॐ दुर्गमार्गकृतावासायै नमः
९. ॐ दुर्गमार्गजयाप्रियायै नमः
१०. ॐ दुर्गमार्गगृहीतार्चायै नमः
११. ॐ दुर्गमार्गस्थितात्मिकायै नमः
१२. ॐ दुर्गमार्गस्तुतिपरायै नमः
१३. ॐ दुर्गमार्गस्मृतिपरायै नमः
१४. ॐ दुर्गमार्गसदास्थाल्यै नमः
१५. ॐ दुर्गमार्गरतिप्रियायै नमः
१६. ॐ दुर्गमार्गस्थलस्थानायै नमः
१७. ॐ दुर्गमार्गविलासिन्यै नमः
१८. ॐ दुर्गमार्गत्यक्तवस्त्रायै नमः
१९. ॐ दुर्गमार्गप्रवर्तिन्यै नमः
२०. ॐ दुर्गसुरनिहन्त्र्यै नमः
२१. ॐ दुर्गासुरनिषूदिन्यै नमः
२२. ॐ दुर्गासुरहरायै नमः
२३. ॐ दूत्यै नमः
२४. ॐ दुर्गासुरविनाशिन्यै नमः
२५. ॐ दुर्गासुरवधोन्मत्तायै नमः
२६. ॐ दुर्गासुरवधोत्सुकायै नमः
२७. ॐ दुर्गासुरवधोत्साहायै नमः
२८. ॐ दुर्गासुरवधोद्यतायै नमः
२९. ॐ दुर्गासुरवधप्रेप्सवे नमः
३०. ॐ दुर्गासुरमखान्कृते नमः
३१. ॐ दुर्गासुरध्वंसतोषायै नमः
३२. ॐ दुर्गदानवदारिण्यै नमः
३३. ॐ दुर्गविद्राविण्यै नमः
३४. ॐ दुर्गविद्रावणकर्यै नमः
३५. ॐ दुर्गक्षोभणकर्यै नमः
३६. ॐ दुर्गशीर्षनिकृन्तिन्यै नमः
३७. ॐ दुर्गविध्वंसनकर्यै नमः
३८. ॐ दुर्गदैत्यनिकृन्तिन्यै नमः
३९. ॐ दुर्गदैत्यप्राणहरायै नमः
४०. ॐ दुर्गदैत्यान्तकारिण्यै नमः
४१. ॐ दुर्गदैत्यहरत्रायै नमः
४२. ॐ दुर्गदैत्यासृगुन्मदायै नमः
४३. ॐ दुर्गदैत्याशनकार्यै नमः
४४. ॐ दुर्गचर्माम्बरावृत्तायै नमः
४५. ॐ दुर्गयुद्धोत्सवकर्यै नमः
४६. ॐ दुर्गयुद्धविशारदायै नमः
४७. ॐ दुर्गयुद्धासवरतायै नमः
४८. ॐ दुर्गयुद्धविमार्दिन्यै नमः
४९. ॐ दुर्गयुद्धहास्यरतायै नमः
५०. ॐ दुर्गयुद्धट्टहासिन्यै नमः
५१. ॐ दुर्गयुद्धमहामत्तायै नमः
५२. ॐ दुर्गयुद्धानुसारिण्यै नमः
५३. ॐ दुर्गयुद्धोत्सवात्साहायै नमः
५४. ॐ दुर्गदेशनिषेविण्यै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५५. ॐ दुर्गदेशवासरतायै नमः
५६. ॐ दुर्गदेशविलासिन्यै नमः
५७. ॐ दुर्गदेशार्चनरतायै नमः
५८. ॐ दुर्गदेशजनप्रियायै नमः
५९. ॐ दुर्गमस्थानसंस्थानायै नमः
६०. ॐ दुर्गमध्यानुसाधनायै नमः
६१. ॐ दुर्गमान्यै नमः
६२. ॐ दुर्गमध्यानायै नमः
६३. ॐ दुर्गमात्मस्वरूपिण्यै नमः
६४. ॐ दुर्गमागमसन्धानायै नमः
६५. ॐ दुर्गमागमसंस्तुतायै नमः
६६. ॐ दुर्गमागमदुर्ज्ञेयायै नमः
६७. ॐ दुर्गमश्रुतिसम्मतायै नमः
६८. ॐ दुर्गमश्रुतिमान्यायै नमः
६९. ॐ दुर्गमश्रुतिमूजितायै नमः
७०. ॐ दुर्गमश्रुतिसुप्रीतायै नमः
७१. ॐ दुर्गमश्रुतिहर्षदायै नमः
७२. ॐ दुर्गमश्रुतिसंस्थानायै नमः
७३. ॐ दुर्गश्रुतिमानितायै नमः
७४. ॐ दुर्गमाचारसन्तुष्टायै नमः
७५. ॐ दुर्गमाचारतोषितायै नमः
७६. ॐ दुर्गमाचारनिर्वृत्तायै नमः
७७. ॐ दुर्गमाचारपूजितायै नमः
७८. ॐ दुर्गमाचारवशितायै नमः
७९. ॐ दुर्गमस्थानदायिन्यै नमः
८०. ॐ दुर्गमप्रेमनिरतायै नमः
८१. ॐ दुर्गमद्रविणप्रदायै नमः
८२. ॐ दुर्गमाम्बुजमध्यस्थायै नमः
८३. ॐ दुर्गमाम्बजुवासिन्यै नमः
८४. ॐ दुर्गनाडीमार्गगत्यै नमः
८५. ॐ दुर्गनाडीप्रचारिण्यै नमः
८६. ॐ दुर्गनाडीपद्मरतायै नमः
८७. ॐ दुर्गनाड्यम्बुजस्थिताय नमः
८८. ॐ दुर्गनाडीगतायातायै नमः
८९. ॐ दुर्गनाडीकृतास्पदायै नमः
९०. ॐ दुर्गनाडीरतरतायै नमः
९१. ॐ दुर्गनाडीशसंस्तुतायै नमः
९२. ॐ दुर्गनाडीश्वररतायै नमः
९३. ॐ दुर्गनाडीशचुम्बितायै नमः
९४. ॐ दुर्गनाडीशक्रोडस्थायै नमः
९५. ॐ दुर्गनाड्युत्थितोत्सुकायै नमः
९६. ॐ दुर्गनाड्यारोहणायै नमः
९७. ॐ दुर्गनाडीनिषेवितायै नमः
९८. ॐ दरिस्थानायै नमः
९९. ॐ दरिस्थानवासिन्यै नमः
१००. ॐ दनुजान्तकृते नमः
१०१. ॐ दरीकृततपस्यायै नमः
१०२. ॐ दरीकृतहरार्चनायै नमः
१०३. ॐ दरीजापितद्रिष्टायै नमः
१०४. ॐ दरीकृतरतिक्रियायै नमः
१०५. ॐ दरीकृतकरार्हायै नमः
१०६. ॐ दरीक्रीडितुपत्रिकायै नमः
१०७. ॐ दरीसन्दर्शनरतायै नमः
१०८. ॐ दरीरोदितवृश्चिकायै नमः
१०९. ॐ दरीगुप्तिकौतुकाढ्ययै नमः
११०. ॐ दरीभ्रमणतत्परायै नमः
१११. ॐ दनुजान्तर्यै नमः
११२. ॐ दीनायै नमः
११३. ॐ दनुसन्तानदारिण्यै नमः
११४. ॐ दनुजध्वंसिन्यै नमः
११५. ॐ दूतायं नमः
११६. ॐ दनुजेन्द्रविनाशिन्यै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

११७. ॐ दानवध्वंसिन्यै नमः
११८. ॐ देव्यै नमः
११९. ॐ दानवानां भयङ्कर्यै नमः
१२०. ॐ दानव्यै नमः
१२१. ॐ दानवाराध्यायै नमः
१२२. ॐ दानवेन्द्रवरप्रदायै नमः
१२३. ॐ दानवेन्द्रनिहन्त्र्यै नमः
१२४. ॐ दानवद्वेषिणीसत्यै नमः
१२५. ॐ दानवारिप्रेमरतायै नमः
१२६. ॐ दानवारिप्रपूजितायै नमः
१२७. ॐ दानवारिकृताचार्यै नमः
१२८. ॐ दानवारिभूतिदायै नमः
१२९. ॐ दानवारिमहानन्दायै नमः
१३०. ॐ दानवारिरतिप्रियायै नमः
१३१. ॐ दानवारिदानरतायै नमः
१३२. ॐ दानवारिकृतास्पदाये नमः
१३३. ॐ दानवारिस्तुतिरतायै नमः
१३४. ॐ दानवारिस्मृतिप्रियायै नमः
१३५. ॐ दानवार्याहाररतायै नमः
१३६. ॐ दानवारिप्रबोधिन्यै नमः
१३७. ॐ दानवारिधृतप्रेमायै नमः
१३८. ॐ दुःखशोकविमोचिन्यै नमः
१३९. ॐ दुःखहन्त्र्यै नमः
१४०. ॐ दुःखदात्र्यै नमः
१४१. ॐ दुःखनिर्मूलकारिण्यै नमः
१४२. ॐ दुःखनिर्मूलनकर्यै नमः
१४३. ॐ दुःखदार्यरिनाशिन्यै नमः
१४४. ॐ दुःखहरायै नमः
१४५. ॐ दुःखनाशायै नमः
१४६. ॐ दुःखग्रामायै नमः
१४७. ॐ दुरासदायै नमः
१४८. ॐ दुःखहीनायै नमः
१४९. ॐ दुःखधीरायै नमः
१५०. ॐ द्रविणाचारदायिन्यै नमः
१५१. ॐ द्रविणोत्सर्गसन्तुष्टायै नमः
१५२. ॐ द्रविणत्यागतोषिकायै नमः
१५३. ॐ द्रविणस्पर्शसन्तुष्टायै नमः
१५४. ॐ द्रविणस्पर्शमानदायै नमः
१५५. ॐ द्रविणस्पर्शहर्षाढ्यायै नमः
१५६. ॐ द्रविणस्पर्शतुष्टिदायै नमः
१५७. ॐ द्रविस्पर्शनकार्यै नमः
१५८. ॐ द्रविणस्पर्शनातुरायै नमः
१५९. ॐ द्रविणस्पर्शनोत्साहायै नमः
१६०. ॐ द्रविणस्पर्शसाधितायै नमः
१६१. ॐ द्रविणस्पर्शनमतायै नमः
१६२. ॐ द्रविणस्पर्शपुत्रिकायै नमः
१६३. ॐ द्रविणस्पर्शरक्षिण्यै नमः
१६४. ॐ द्रविणस्तोमदायिन्यै नमः
१६५. ॐ द्रविणाकर्षणकर्यै नमः
१६६. ॐ द्रविणौघविसर्जिन्यै नमः
१६७. ॐ द्रविणाचलदानाढ्यायै नमः
१६८. ॐ द्रविणाचलवासिन्यै नमः
१६९. ॐ दीनामात्रे नमः
१७०. ॐ दीनबन्धवे नमः
१७१. ॐ दीनविघ्नविनाशिन्यै नमः
१७२. ॐ दीनसेव्यायै नमः
१७३. ॐ दीनसिद्धायै नमः
१७४. ॐ दीनसाध्यायै नमः
१७५. ॐ दिगम्बर्यै नमः
१७६. ॐ दीनगेहकृतानन्दायै नमः
१७७. ॐ दीनगेहविलासिन्यै नमः
१७८. ॐ दीनभावप्रेमरतायै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१७९. ॐ दीनभावविनोदिन्यै नमः
१८०. ॐ दीनमानवचेतःस्थायै नमः
१८१. ॐ दीनमानवहर्षदायै नमः
१८२. ॐ दीनदैन्यविघातेच्छायै नमः
१८३. ॐ दीनद्रविणदायिन्यै नमः
१८४. ॐ दीनसाधनसन्तुष्टायै नमः
१८५. ॐ दीनदर्शनदायिन्यै नमः
१८६. ॐ दीनपुत्रादिदात्र्यै नमः
१८७. ॐ दीनसम्पद्विधायिन्यै नमः
१८८. ॐ दत्तात्रेयध्यानरतायै नमः
१८९. ॐ दत्तात्रेयप्रपूजितायै नमः
१९०. ॐ दत्तात्रेयर्षिसंससिद्धायै नमः
१९१. ॐ दत्तात्रेयविभावितायै नमः
१९२. ॐ दत्तात्रेयकृतार्हायै नमः
१९३. ॐ दत्तात्रेयप्रसाधितायै नमः
१९४. ॐ दत्तात्रेयहर्षदात्र्यै नमः
१९५. ॐ दत्तात्रेयसुखप्रदायै नमः
१९६. ॐ दत्तात्रेयस्तुतायै नमः
१९७. ॐ दत्तात्रेयसदानुतायै नमः
१९८. ॐ दत्तात्रेयप्रेमरतायै नमः
१९९. ॐ दत्तात्रेयनुमानितायै नमः
२००. ॐ दत्तात्रेयसमुद्गीतायै नमः
२०१. ॐ दत्तात्रेयकुटुम्बिन्यै नमः
२०२. ॐ दत्तात्रेयप्राणतुल्यायै नमः
२०३. ॐ दत्तात्रेयशरीरिण्यै नमः
२०४. ॐ दत्तात्रेयकृतानन्दायै नमः
२०५. ॐ दत्तात्रेयांशसम्भवायै नमः
२०६. ॐ दत्तात्रेयविभूतिस्थायै नमः
२०७. ॐ दत्तात्रेयानुसारिण्यै नमः
२०८. ॐ दत्तात्रेयगीतिरतायै नमः
२०९. ॐ दत्तात्रेयधनप्रदायै नमः
२१०. ॐ दत्तात्रेयदुःखहरायै नमः
२११. ॐ दत्तात्रेयवरप्रदायै नमः
२१२. ॐ दत्तात्रेयज्ञानदात्र्यै नमः
२१३. ॐ दत्तात्रेयभयापहायै नमः
२१४. ॐ देवकन्यायै नमः
२१५. ॐ देवमान्यायै नमः
२१६. ॐ देवदुःखविनाशिन्यै नमः
२१७. ॐ देवसिद्ध्यै नमः
२१८. ॐ देवपूज्यायै नमः
२१९. ॐ देवेज्यायै नमः
२२०. ॐ देववन्दितायै नमः
२२१. ॐ देवमान्यायै नमः
२२२. ॐ देवधन्यायै नमः
२२३. ॐ देवविघ्नविनाशिन्यै नमः
२२४. ॐ देवरम्यायै नमः
२२५. ॐ देवरतायै नमः
२२६. ॐ देवकौतुकतत्परायै नमः
२२७. ॐ देवक्रीडायै नमः
२२८. ॐ देवब्रीडायै नमः
२२९. ॐ देववैरिविनाशिन्यै नमः
२३०. ॐ देवकामायै नमः
२३१. ॐ देवरामायै नमः
२३२. ॐ देवद्विष्टविनाशिन्यै नमः
२३३. ॐ देवदेवप्रियायै नमः
२३४. ॐ देव्यै नमः
२३५. ॐ देवदानववन्दितायै नमः
२३६. ॐ देवदेवरतानन्दायै नमः
२३७. ॐ देवदेववरोत्सुकायै नमः
२३८. ॐ देवदेवप्रेमरतायै नमः
२३९. ॐ देवदेवप्रियम्बदायै नमः
२४०. ॐ देवदेवप्राणतुल्यायै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२४१. ॐ देवदेवनितम्बिन्यै नमः
२४२. ॐ देवदेववहृतमनसे नमः
२४३. ॐ देवदेवसुखावहायै नमः
२४४. ॐ देवदेवक्रीडरतायै नमः
२४५. ॐ देवदेवसुखप्रदायै नमः
२४६. ॐ देवदेवमहानन्दायै नमः
२४७. ॐ देवदेवप्रचुम्बितायै नमः
२४८. ॐ देवदेवोपभुक्तायै नमः
२४९. ॐ देवदेवानुसेवितायै नमः
२५०. ॐ देवदेवगतप्राणायै नमः
२५१. ॐ देवदेवगतात्मिकायै नमः
२५२. ॐ देवदेवहर्षदात्र्यै नमः
२५३. ॐ देवदेवसुखप्रदायै नमः
२५४. ॐ देवदेवमहानन्दायै नमः
२५५. ॐ देवदेवविलासिन्यै नमः
२५६. ॐ देवदेवधर्मपत्न्यै नमः
२५७. ॐ देवदेवमनोगतायै नमः
२५८. ॐ देवदेवध्वे नमः
२५९. ॐ देवदेवार्चनप्रियायै नमः
२६०. ॐ देवदेवाङ्कनिलयायै नमः
२६१. ॐ देवदेवाङ्गशायिन्यै नमः
२६२. ॐ देवदेवाङ्गसुखिन्यै नमः
२६३. ॐ देवदेवाङ्गवासिन्यै नमः
२६४. ॐ देवदेवाङ्कभूषायै नमः
२६५. ॐ देवदेवाङ्गभूषणायै नमः
२६६. ॐ देवदेवप्रियकर्यै नमः
२६७. ॐ देवदेवाप्रियान्तकृते नमः
२६८. ॐ देवदेवप्रियप्राणायै नमः
२६९. ॐ देवदेवप्रियात्मिकायै नमः
२७०. ॐ देवदेवार्चकप्राणयै नमः
२७१. ॐ देवदेवार्चकप्रियायै नमः
२७२. ॐ देवदेवार्चकोत्साहयै नमः
२७३. ॐ देवदेवार्चनप्रियायै नमः
२७४. ॐ देवदेवार्चकाविघ्नायै नमः
२७५. ॐ देवदेवप्रस्वे नमः
२७६. ॐ देवदेवस्यजन्यै नमः
२७७. ॐ देवदेवविधायिन्यै नमः
२७८. ॐ देवदेवस्य रमण्यै नमः
२७९. ॐ देवदेवहृदाश्रयायै नमः
२८०. ॐ देवदेवष्टदेव्यै नमः
२८१. ॐ देवतापसपातिन्यै नमः
२८२. ॐ देवताभावसन्तुष्टायै नमः
२८३. ॐ देवताभावतोषितायै नमः
२८४. ॐ देवताभाववरदायै नमः
२८५. ॐ देवताभावसिद्धिदायै नमः
२८६. ॐ देवताभावसंसिद्ध्यै नमः
२८७. ॐ देवताभावसंभवायै नमः
२८८. ॐ देवताभावसुखिन्यै नमः
२८९. ॐ देवताभाववन्दितायै नमः
२९०. ॐ देवताभावसुप्रीतायै नमः
२९१. ॐ देवताभावहर्षदायै नमः
२९२. ॐ देवताविघ्नहन्त्र्यै नमः
२९३. ॐ देवताद्विष्टनाशिन्यै नमः
२९४. ॐ देवतापूजितपदायै नमः
२९५. ॐ देवताप्रेमतोषतायै नमः
२९६. ॐ देवतागारनिलयायै नमः
२९७. ॐ देवतासौख्यदायिन्यै नमः
२९८. ॐ देवतानिलभावायै नमः
२९९. ॐ देवताहृतमानसायै नमः
३००. ॐ देवताकृतपादार्चायै नमः
३०१. ॐ देवताहृतभक्तिक्रायै नमः
३०२. ॐ देवतागर्वमध्यस्थायै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३०३. ॐ देवतायै नमः
३०४. ॐ देव-देवतायै नमः
३०५. ॐ दनवे नमः
३०६. ॐ दुंदुर्गायै नमोनाम्न्यै नमः
३०७. ॐ दुं फटमन्त्रस्वरूपिण्यै नमः
३०८. ॐ दूंनमो मन्त्रस्वरूपायै नमः
३०९. ॐ दूंनमोमूर्त्तिमकात्मिकायै नमः
३१०. ॐ दूरदर्शिप्रियायै नमः
३११. ॐ दुष्टायै नमः
३१२. ॐ दुष्टभूतनिषेवितायै नमः
३१३. ॐ दूरदर्शिप्रेमरतायै नमः
३१४. ॐ दूरदर्शिप्रियंवदायै नमः
३१५. ॐ दूरदर्शिसिद्धिदात्र्यै नमः
३१६. ॐ दूरदर्शिप्रतोषितायै नमः
३१७. ॐ दूरदर्शिकण्ठसंस्थायै नमः
३१८. ॐ दूरदर्शिप्रहर्षितायै नमः
३१९. ॐ दूरदर्शिगृहीतार्चायै नमः
३२०. ॐ दूरदर्शिप्रतर्पितायै नमः
३२१. ॐ दूरदर्शिप्राणतुल्यायै नमः
३२२. ॐ दूरदर्शिसुखप्रदायै नमः
३२३. ॐ दूरदर्शिभ्रान्तिहरायै नमः
३२४. ॐ दूरदर्शिहृदास्पदायै नमः
३२५. ॐ दूरदर्श्यरिविद्धावायै नमः
३२६. ॐ दीर्घदर्शिप्रमोदिन्यै नमः
३२७. ॐ दीर्घदर्शिप्राणतुल्यायै नमः
३२८. ॐ दीर्घदर्शिवरप्रदायै नमः
३२९. ॐ दीर्घदर्शिहर्षदात्र्यै नमः
३३०. ॐ दीर्घदर्शिप्रहर्षितायै नमः
३३१. ॐ दीर्घदर्शिमहानन्दायै नमः
३३२. ॐ दीर्घदर्शिगृहालयायै नमः
३३३. ॐ दीर्घदर्शिगृहीतार्चायै नमः
३३४. ॐ दीर्घदर्शिहृतार्हणायै नमः
३३५. ॐ दयायै नमः
३३६. ॐ दानवत्यै नमः
३३७. ॐ दात्र्यै नमः
३३८. ॐ दयालवे नमः
३३९. ॐ दीनवत्सलायै नमः
३४०. ॐ दयार्द्रायै नमः
३४१. ॐ दयाशीलायै नमः
३४२. ॐ दयाढ्यायै नमः
३४३. ॐ दयात्मिकायै नमः
३४४. ॐ दयायै नमः
३४५. ॐ दानवत्यै नमः
३४६. ॐ दात्र्यै नमः
३४७. ॐ दयालवे नमः
३४८. ॐ दीनवत्सलायै नमः
३४९. ॐ दयार्द्रायै नमः
३५०. ॐ दयाशीलायै नमः
३५१. ॐ दयाढ्यायै नमः
३५२. ॐ दयात्मिकायै नमः
३५३. ॐ दयाम्बुधये नमः
३५४. ॐ दयासारायै नमः
३५५. ॐ दयासागरपारगायै नमः
३५६. ॐ दयासिन्धवे नमः
३५७. ॐ दयाभारायै नमः
३५८. ॐ दयावत्करुणाकर्यै नमः
३५९. ॐ दयावद्वत्सलायै नमः
३६०. ॐ देव्यै नमः
३६१. ॐ दयायै नमः
३६२. ॐ दानरतायै नमः
३६३. ॐ दयावद्भक्तिसुखिन्यै नमः
३६४. ॐ दयावत्परितोषितायै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३६५. ॐ दयावत्स्नेहनिरतायै नमः
३६६. ॐ दयावत्प्रतिपादिकायै नमः
३६७. ॐ दयावत्त्राणकर्त्र्यै नमः
३६८. ॐ दयावन्मुक्तिदायिन्यै नमः
३६९. ॐ दयावद्भवासन्तुष्टायै नमः
३७०. ॐ दयावत्परितोषितायै नमः
३७१. ॐ दयावत्तारणपरायै नमः
३७२. ॐ दयावत्सिद्धिदायिन्यै नमः
३७३. ॐ दयावत्पुत्रवद्भवायै नमः
३७४. ॐ दयावत्पुत्ररूपिण्यै नमः
३७५. ॐ दयावद्देहनिलयायै नमः
३७६. ॐ दयाबन्धवे नमः
३७७. ॐ दयाश्रयायै नमः
३७८. ॐ दयालुवात्सल्यकर्यै नमः
३७९. ॐ दयालुसिद्धिदायिन्यै नमः
३८०. ॐ दयालुशरणासक्तायै नमः
३८१. ॐ दयालुर्देहमन्दिरायै नमः
३८२. ॐ दयालुभक्तिभावस्थायै नमः
३८३. ॐ दयालुप्राणरूपिण्यै नमः
३८४. ॐ दयालुसुखदायै नमः
३८५. ॐ दम्भायै नमः
३८६. ॐ दयालुप्रेमवर्षिण्यै नमः
३८७. ॐ दयालुवशगायै नमः
३८८. ॐ दीर्घायै नमः
३८९. ॐ दीर्घाङ्ग्यै नमः
३९०. ॐ दीर्घलोचनायै नमः
३९१. ॐ दीर्घनेत्रायै नमः
३९२. ॐ दीर्घचक्षुषे नमः
३९३. ॐ दीर्घबाहुलतात्मिकायै नमः
३९४. ॐ दीर्घकेश्यै नमः
३९५. ॐ दीर्घमुख्यै नमः
३९६. ॐ दीर्घघोणायै नमः
३९७. ॐ दारुणायै नमः
३९८. ॐ दारुणासुरहन्त्र्यै नमः
३९९. ॐ दारुणासुरदारिण्यै नमः
४००. ॐ दारुणाहवकण्यै नमः
४०१. ॐ दारुणाहवहर्षितायै नमः
४०२. ॐ दारुणाहवहोमाढ्यायै नमः
४०३. ॐ दारुणाचलनाशिन्यै नमः
४०४. ॐ दारुणाचारनिरतायै नमः
४०५. ॐ दारुणोत्सवहर्षितोयै नमः
४०६. ॐ दारुणोद्यतरूपायै नमः
४०७. ॐ दारुणारिनिवारिण्यै नमः
४०८. ॐ दारुणेक्षणसंयुक्तायै नमः
४०९. ॐ दोश्चतुष्कविराजितायै नमः
४१०. ॐ दशदोष्कायै नमः
४११. ॐ दशभुजायै नमः
४१२. ॐ दशबाहुविराजितायै नमः
४१३. ॐ दशास्त्रधारिण्यै नमः
४१४. ॐ ॐ देव्यै नमः
४१५. ॐ दशदिक्ख्यातविक्रमायै नमः
४१६. ॐ दशरथर्चितपदायै नमः
४१७. ॐ दाशरथिप्रियायै नमः
४१८. ॐ दाशरथिप्रेमतुष्टायै नमः
४१९. ॐ दाशरथिरतिप्रियायै नमः
४२०. ॐ दाशरथिप्रियकर्यै नमः
४२१. ॐ दाशरथिप्रियम्बदायै नमः
४२२. ॐ दाशरथीष्टसंदात्र्यै नमः
४२३. ॐ दाशरथीष्टदेवतायै नमः
४२४. ॐ दाशरथिद्वेषनाशायै नमः
४२५. ॐ दाशरथ्यानुकूल्यदायै नमः
४२६. ॐ दाशरथिप्रियतामायै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४२७. ॐ दाशरथिप्रपूजितायै नमः
४२८. ॐ दशाननारिसम्पूज्यायै नमः
४२९. ॐ दशानानरिदेवतायै नमः
४३०. ॐ दशाननारिप्रमदायै नमः
४३१. ॐ दशाननारिजन्मभूम्यै नमः
४३२. ॐ दशाननारिरतिदायै नमः
४३३. ॐ दशाननारिसेवितायै नमः
४३४. ॐ दशनानारिसुखदायै नमः
४३५. ॐ दशाननारिवैरिहृते नमः
४३६. ॐ दशाननारीष्टदेव्यै नमः
४३७. ॐ दशग्रीवारिवन्दितायै नमः
४३८. ॐ दशग्रीवारिजनन्यै नमः
४३९. ॐ दशग्रीवारिभाविन्यै नमः
४४०. ॐ दशग्रीवारिसहितायै नमः
४४१. ॐ दशग्रीवसभजितायै नमः
४४२. ॐ दशग्रीवारिरमण्यै नमः
४४३. ॐ दशग्रीववध्वे नमः
४४४. ॐ दशग्रीवनाशकर्त्र्यै नमः
४४५. ॐ दशग्रीववरप्रदायै नमः
४४६. ॐ दशग्रीवपुरस्थायै नमः
४४७. ॐ दशग्रीववधोत्सुकायै नमः
४४८. ॐ दशग्रीवप्रीतिदात्र्यै नमः
४४९. ॐ दशग्रीवविनाशिन्यै नमः
४५०. ॐ दशग्रीवावहकर्यै नमः
४५१. ॐ दशग्रीवानपायिन्यै नमः
४५२. ॐ दशग्रीवप्रियावन्द्यायै नमः
४५३. ॐ दशग्रीवहृतायै नमः
४५४. ॐ दशग्रीवाहितकर्यै नमः
४५५. ॐ दशग्रीवेश्वरप्रियायै नमः
४५६. ॐ दशग्रीवेश्वरप्राणायै नमः
४५७. ॐ दशग्रीववरप्रदायै नमः
४५८. ॐ दशग्रीवेश्वररतायै नम
४५९. ॐ दशवर्षीयकन्यकायै नमः
४६०. ॐ दशवर्षीयबालायै नमः
४६१. ॐ दशवर्षीयवासिन्यै नमः
४६२. ॐ दशपापहरायै नमः
४६३. ॐ दम्यायै नमः
४६४. ॐ दशहस्तविभूषितायै नमः
४६५. ॐ दशशस्त्रलसद्दोष्कायै नमः
४६६. ॐ दशदिक्पालवन्दितायै नमः
४६७. ॐ दशावताररूपायै नमः
४६८. ॐ दशावताररूपिण्यै नमः
४६९. ॐ दशविद्याभिन्नदेव्यै नमः
४७०. ॐ दशप्राणस्वरूपाय नमः
४७१. ॐ दशविद्यास्वरूपाय नमः
४७२. ॐ दशविद्यामय्यै नमः
४७३. ॐ दृक्स्वरूपायै नमः
४७४. ॐ दृक्प्रकाशिन्यै नमः
४७५. ॐ दृग्रूपायै नमः
४७६. ॐ दृक्प्रकाशिन्यै नमः
४७७. ॐ दिगन्तरायै नमः
४७८. ॐ दिगन्तस्थायै नमः
४७९. ॐ दिगम्बरविलासिन्यै नमः
४८०. ॐ दिगम्बरसमाजस्थयै नमः
४८१. ॐ दिगम्बरप्रपूजितायै नमः
४८२. ॐ दिगम्बरसहचर्यै नमः
४८३. ॐ दिगम्बरकृतास्पदायै नमः
४८४. ॐ दिगम्बरहृतार्चितायै नमः
४८५. ॐ दिगम्बरकथाप्रियायै नमः
४८६. ॐ दिगम्बरगुणरतायै नमः
४८७. ॐ दिगम्बरस्वरूपिण्यै नमः
४८८. ॐ दिगम्बरशिरोधार्यायै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४८९. ॐ दिगम्बरहृताश्रयायै नमः
४९०. ॐ दिगम्बरप्रेमरतायै नमः
४९१. ॐ दिगम्बररतातुरायै नमः
४९२. ॐ दिगम्बरीस्वरूपायै नमः
४९३. ॐ दिगम्बरीगणार्चितायै नमः
४९४. ॐ दिगम्बररीगणप्राणायै नमः
४९५. ॐ दिगम्बररीगणप्रियायै नमः
४९६. ॐ दिगम्बररीगणाराध्यायै नमः
४९७. ॐ दिगम्बरगणेश्वर्यै नमः
४९८. ॐ दिगम्बरगणस्पर्शनिह्लायै नमः
४९९. ॐ दिगम्बरीकोटिवृतायै नमः
५००. ॐ दिगम्बरीगणवृतायै नमः
५०१. ॐ दुरन्तायै नमः
५०२. ॐ दुष्कृतिहरायै नमः
५०३. ॐ दुर्ध्येयायै नमः
५०४. ॐ दुरितक्रमायै नमः
५०५. ॐ दुरन्तदानवद्वेष्ट्र्यै नमः
५०६. ॐ दुरन्तदनुजान्तकृते नमः
५०७. ॐ दुरन्तपापहन्त्र्यै नमः
५०८. ॐ दस्त्रनिस्तारकारिण्यै नमः
५०९. ॐ दस्त्रमानससंस्थानायै नमः
५१०. ॐ दस्त्रज्ञानविवर्धिन्यै नमः
५११. ॐ दस्त्रसंभोगजन्यै नमः
५१२. ॐ दस्त्रसंभोगदायिन्यै नमः
५१३. ॐ दस्त्रसंभोगभवनायै नमः
५१४. ॐ दस्त्रविद्याविधायिन्यै नमः
५१५. ॐ दस्त्रोद्वेगहरायै नमः
५१६. ॐ दस्त्रजनन्यै नमः
५१७. ॐ दस्त्रसुन्दर्यै नमः
५१८. ॐ दस्त्रभक्तिविधाज्ञानायै नमः
५१९. ॐ दस्त्रद्विष्टविनाशिन्यै नमः
५२०. ॐ दस्त्रापकारदमन्यै नमः
५२१. ॐ दस्त्रसिद्धिविधायिन्यै नमः
५२२. ॐ दस्त्रताराधितायै नमः
५२३. ॐ दस्त्रमातृप्रपूजितायै नमः
५२४. ॐ दस्त्रदैन्यहरायै नमः
५२५. ॐ दस्त्रतातनिषेवितायै नमः
५२६. ॐ दस्त्रपितृशतज्योतिषे नमः
५२७. ॐ दस्त्रकौशलदायिन्यै नमः
५२८. ॐ दशशीर्षारिसहितायै नमः
५२९. ॐ दशशीर्षारिकामिन्यै नमः
५३०. ॐ दशशीर्षपुर्यै नमः
५३१. ॐ देव्यै नमः
५३२. ॐ दशशीर्षसभाजितायै नमः
५३३. ॐ दशशीर्षारिसुप्रीतायै नमः
५३४. ॐ दशशीर्षबधूप्रियायै नमः
५३५. ॐ दशशीर्षशिरश्छेत्र्यै नमः
५३६. ॐ दशशीर्षनितम्बिन्यै नमः
५३७. ॐ दशशीर्षहरप्राणायै नमः
५३८. ॐ दशशीर्षहरात्मिकायै नमः
५३९. ॐ दशशीर्षहराराध्यायै नमः
५४०. ॐ दशशीर्षारिवन्दितायै नमः
५४१. ॐ दशशीर्षारिसुखदायै नमः
५४२. ॐ दशशीर्षकपालिन्यै नमः
५४३. ॐ दशशीर्षज्ञानदात्र्यै नमः
५४४. ॐ दशशीर्षारिदेहिन्यै नमः
५४५. ॐ दशशीर्षवधोपात्त श्रीरामचन्द्ररूपतायै नमः
५४६. ॐ दशशीर्षराष्ट्रदेव्यै नमः
५४७. ॐ दशशीर्षारिसारिण्यै नमः
५४८. ॐ दशशीर्षभ्रातृतुष्टायै नमः
५४९. ॐ दशशीर्षवधूप्रियायै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५५०. ॐ दशशीर्षवधूरप्राणायै नमः
५५१. ॐ दशशीर्षवधूरतायै नमः
५५२. ॐ दैत्यगुरुतासाध्वयै नमः
५५३. ॐ दैत्यगुरुप्रपूजितायै नमः
५५४. ॐ दैत्यगुरुपदेष्ट्र्यै नमः
५५५. ॐ दैत्यगुरुनिषेवितायै नमः
५५६. ॐ दैत्यगुरुमतप्राणायै नमः
५५७. ॐ दैत्यगुरुतापनाशिन्यै नमः
५५८. ॐ दुरन्तदुःखशमन्यै नमः
५५९. ॐ दुरन्तदमनीतम्यै नमः
५६०. ॐ दुरन्तशोकमन्यै नमः
५६१. ॐ दुरन्तरोगनाशिन्यै नमः
५६२. ॐ दुरन्तवैरिदमन्यै नमः
५६३. ॐ दुरन्तदैत्यनाशिन्यै नमः
५६४. ॐ दुरन्तकलुषघ्न्यै नमः
५६५. ॐ दुष्कृतिस्तोमनाशिन्यै नमः
५६६. ॐ दुराशयायै नमः
५६७. ॐ दुराधारयै नमः
५६८. ॐ दुर्जयायै नमः
५६९. ॐ दुष्टकामिन्यै नमः
५७०. ॐ दर्शनीयायै नमः
५७१. ॐ दृश्यायै नमः
५७२. ॐ अदृश्यायै नमः
५७३. ॐ दृष्टिगोचरायै नमः
५७४. ॐ दूतीयागप्रियायै नमः
५७५. ॐ दूत्यै नमः
५७६. ॐ दूतीयागकरप्रियायै नमः
५७७. ॐ दूतीयागकरानन्दायै नमः
५७८. ॐ दूतयागसुप्रदायै नमः
५७९. ॐ दूतीयागकरायातायै नमः
५८०. ॐ दूतीयागप्रमोदिन्यै नमः
५८१. ॐ दुर्वासःपूजितायै नमः
५८२. ॐ दुर्वासोमुनिभावितायै नमः
५८३. ॐ दुर्वासोऽर्चितपादायै नमः
५८४. ॐ दुर्वासोमौनभावितायै नमः
५८५. ॐ दुर्वासोमुनिवन्द्यायै नमः
५८६. ॐ दुर्वासोमुनिदेवतायै नमः
५८७. ॐ दुर्वासोमुनिमात्रे नमः
५८८. ॐ दुर्वासोमुनिसिद्धिदायै नमः
५८९. ॐ दुर्वासोमुनिभावस्थायै नमः
५९०. ॐ दुर्वासोमुनिसेवितायै नमः
५९१. ॐ दुर्वासोमुनिचित्तस्थायै नमः
५९२. ॐ दुर्वासोमुनिमण्डितायै नमः
५९३. ॐ दुर्वासोमुनिसञ्चारायै नमः
५९४. ॐ दुर्वासोहृदयङ्गमायै नमः
५९५. ॐ दुर्वासोहृयाराध्यायै नमः
५९६. ॐ दुर्वासोहृत्सरोजगायै नमः
५९७. ॐ दुर्वासस्तापसाराध्यायै नमः
५९८. ॐ दुर्वासस्तापसाश्रयायै नमः
५९९. ॐ दुर्वासस्तापसरतायै नमः
६००. ॐ दुर्वासस्तापसेश्वर्यै नमः
६०१. ॐ दुर्वासोमुनिकन्यायै नमः
६०२. ॐ दुर्वासोऽद्भुतसिद्धियायै नमः
६०३. ॐ दररात्र्यै नमः
६०४. ॐ दरहारायै नमः
६०५. ॐ दरयुक्तायै नमः
६०६. ॐ दरपहायै नमः
६०७. ॐ दरघ्न्यै नमः
६०८. ॐ दरहन्त्र्यै नमः
६०९. ॐ दरयुक्तायै नमः
६१०. ॐ दराश्रयायै नमः
६११. ॐ दरस्मेरायै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६१२. ॐ दरापाङ्ग्यै नमः
६१३. ॐ दयादात्र्यै नमः
६१४. ॐ दयाश्रयायै नमः
६१५. ॐ दस्त्रपूज्यायै नमः
६१६. ॐ दस्त्रमात्रे नमः
६१७. ॐ दस्त्रदेव्यै नमः
६१८. ॐ दुरोन्मदायै नमः
६१९. ॐ दस्त्रसिद्धायै नमः
६२०. ॐ दस्त्रसंस्थायै नमः
६२१. ॐ दस्त्रतापविमोचिन्यै नमः
६२२. ॐ दस्त्रक्षोभहरानित्यायै नमः
६२३. ॐ दस्त्रलोकगतात्मिकायै नमः
६२४. ॐ दैत्यगुर्वङ्गनावन्द्यायै नमः
६२५. ॐ दैत्यगुर्वङ्गनाप्रियायै नमः
६२६. ॐ दैत्यगुर्वङ्गनासिद्धायै नमः
६२७. ॐ दैत्यगुर्वङ्गनात्सुकायै नमः
६२८. ॐ दैत्यगुरुप्रियतामायै नमः
६२९. ॐ दैवगुरुनिषेवितायै नमः
६३०. ॐ दैवगुरुप्रसूरूपायै नमः
६३१. ॐ दैवगुरुकृतार्हणायै नमः
६३२. ॐ देवगुरुप्रेमयुतायै नमः
६३३. ॐ देवगुर्वनुमानितायै नमः
६३४. ॐ देवगुरुप्रभावज्ञायै नमः
६३५. ॐ देवगुरुसुखप्रदायै नमः
६३६. ॐ देवगुरुज्ञानदात्र्यै नमः
६३७. ॐ देवगुरुप्रमोदिन्यै नमः
६३८. ॐ दैत्यस्त्रीगणसमपूज्यायै नमः
६३९. ॐ दैत्यस्त्रीगणपूजितायै नमः
६४०. ॐ दैत्यस्त्रीगणरूपायै नमः
६४१. ॐ दैत्यस्त्रीचित्तहररिण्यै नमः
६४२. ॐ दैवस्त्रीगणपूज्यायै नमः
६४३. ॐ देवस्त्रीगणवन्दितायै नमः
६४४. ॐ देवस्त्रीगणचित्तस्थायै नमः
६४५. ॐ देवस्त्रीगणभूषितायै नमः
६४६. ॐ देवस्त्रीगणसंसिद्धायै नमः
६४७. ॐ देवस्त्रीगणतोषितायै नमः
६४८. ॐ देवस्त्रीगणहस्तस्थचारु-चामरवीजितायै नमः
६४९. ॐ देवस्त्रीगणहस्तस्थचारु-गन्धविलेपितायै नमः
६५०. ॐ देवाङ्गनाधृतादर्शदृष्ट्यर्थ-मुखचन्द्रमायै नमः
६५१. ॐ देवङ्गनोत्सृष्टनागवल्ली-दलकृतोत्सुकायै नमः
६५२. ॐ देवस्त्रीगणहस्तस्थदीप-मालाविलोकनायै नमः
६५३. ॐ देवस्वीगणहस्तस्थधूप-घ्राणविनोदिन्यै नमः
६५४. ॐ देवनारीकरगतवासका-सवपापिन्यै नमः
६५५. ॐ देवनारीकङ्कतिकाकृत-केशनिर्माजनायै नमः
६५६. ॐ देवनारीसेव्यगात्रायै नमः
६५७. ॐ देवनारीकृतोत्सुकायै नमः
६५८. ॐ देवनारीविरचितपुष्प-मालाविराजितायै नमः
६५९. ॐ देवनारीविचित्राङ्ग्यै नमः
६६०. ॐ देवस्त्रीदत्तभोजनायै नमः
६६१. ॐ देवस्त्रीगणगीतायै नमः
६६२. ॐ देवस्त्रीगीतसोत्सुकायै नमः
६६३. ॐ देवस्त्रीनृत्यसुखिन्यै नमः
६६४. ॐ देवस्त्रीनृत्यदर्शिन्यै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६६५. ॐ देवस्त्रीयोजितलसद्रत्न-
पादपदाम्बुजायै नमः
६६६. ॐ देवस्त्रीगणविस्तीर्णचारु-
तल्पनिषेदुष्यै नमः
६६७. ॐ देवनारी-चारकराकलि-
ताङ्घ्यादिदेहिकायै नमः
६६८. ॐ देवनारीकरव्यग्रताल-
वृन्दमरुत्सुकायै नमः
६६९. ॐ देवनारीवेणुवीणानाद-
सोत्कण्ठमानसायै नमः
६७०. ॐ देवकोटिस्तुतिनुतायै नमः
६७१. ॐ देवकोटिकृतार्हणायै नमः
६७२. ॐ देवकोटिगीतुगणायै नमः
६७३. ॐ देवकोटिकृतस्तुत्यै नमः
६७४. ॐ दन्तदष्टयोद्रेगफलायै नमः
६७५. ॐ देवकोलाहलाकुलायै नमः
६७६. ॐ द्वेषरागपरित्यक्तायै नमः
६७७. ॐ द्वेषरागविवर्जितायै नमः
६७८. ॐ दामपूज्यायै नमः
६७९. ॐ दामभूषायै नमः
६८०. ॐ दामोदरविनाशिन्यै नमः
६८१. ॐ दामोदरप्रेमरतायै नमः
६८२. ॐ दामोदरभगिन्यै नमः
६८३. ॐ दामोदरप्रस्वे नमः
६८४. ॐ दामोदरपत्न्यै नमः
६८५. ॐ दामोदरपतिव्रतायै नमः
६८६. ॐ दामोदराऽभिन्नदेहायै नमः
६८७. ॐ दामोदररतिप्रियायै नमः
६८८. ॐ दामोदराऽभिन्नतनवे नमः
६८९. ॐ दामोदरकृतास्पदायै नमः
६९०. ॐ दामोदरकृतप्राणायै नमः
६९१. ॐ दामोदरगतात्मिकायै नमः
६९२. ॐ दामोदरकौतुकाढ्यायै नमः
६९३. ॐ दामोदरकलाकलायै नमः
६९४. ॐ दामोदरालिङ्गिताङ्ग्यै नमः
६९५. ॐ दामोदरकुतूहलायै नमः
६९६. ॐ दामोदरकृताह्लादायै नमः
६९७. ॐ दामोदरसुचुन्निताय नमः
६९८. ॐ दामोदरसुताकृष्टायै नमः
६९९. ॐ दामोदरसुखप्रदायै नमः
७००. ॐ दामोदरसहाढ्यायै नमः
७०१. ॐ दामोदरसहायिन्यै नमः
७०२. ॐ दामोदरगुणज्ञायै नमः
७०३. ॐ दामोदरवरप्रदायै नमः
७०४. ॐ दामोदरनुकूलायै नमः
७०५. ॐ दामोदरनितम्बिन्यै नमः
७०६. ॐ दामोदरजलक्रीडाकु-
शलायै नमः
७०७. ॐ दर्शनप्रियायै नमः
७०८. ॐ दामोदरजलक्रीडा-
त्यक्तस्वजनसौहृदायै नमः
७०९. ॐ दामोदरलसद्रास-
केलिकौतुकिन्यै नमः
७१०. ॐ दामोदरभ्रातृकायै नमः
७११. ॐ दामोदरपरायणायै नमः
७१२. ॐ दामोदरधरायै नमः
७१३. ॐ दामोदरवैरिविनाशिन्यै नमः
७१४. ॐ दामोदरोपजायायै नमः
७१५. ॐ दामोदरनिमन्त्रितायै नमः
७१६. ॐ दामोदरपराभूतायै नमः
७१७. ॐ दामोदरपराजितायै नमः
७१८. ॐ दामोदरसमाक्रान्तायै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७१९. ॐ दामोदरहताशुभायै नमः
७२०. ॐ दामोदरोत्सवरतायै नमः
७२१. ॐ दामोदरोत्सवावहायै नमः
७२२. ॐ दामोदरस्तन्यदात्र्यै नमः
७२३. ॐ दामोदरगवेषितायै नमः
७२४. ॐ दमयन्तीसिद्धिदात्र्यै नमः
७२५. ॐ दमयन्तीप्रसाधितायै नमः
७२६. ॐ दमयन्तीष्टदेव्यै नमः
७२७. ॐ दमयन्तीस्वरूपिण्यै नमः
७२८. ॐ दमयन्तीकृतार्चायै नमः
७२९. ॐ दमनर्षिस्वरूपिण्यै नमः
७३०. ॐ दमनर्षिप्राणतुल्यायै नमः
७३१. ॐ दमनर्षिस्वरूपिण्यै नमः
७३२. ॐ दमनर्षिस्वरूपायै नमः
७३३. ॐ दम्भपूरितविग्रहायै नमः
७३४. ॐ दम्भहन्त्र्यै नमः
७३५. ॐ दम्भदात्र्यै नमः
७३६. ॐ दम्भलोकविमोहिन्यै नमः
७३७. ॐ दम्भशीलायै नमः
७३८. ॐ दम्भहरायै नमः
७३९. ॐ दम्भवत्परिमर्दिन्यै नमः
७४०. ॐ दम्भरूपायै नमः
७४१. ॐ दम्भकर्यै नमः
७४२. ॐ दम्भसन्तानदारिण्यै नमः
७४३. ॐ दत्तमोक्षायै नमः
७४४. ॐ दत्तधनायै नमः
७४५. ॐ दत्तारोग्यायै नमः
७४६. ॐ दाम्भिकायै नमः
७४७. ॐ दत्तपुत्रायै नमः
७४८. ॐ दत्तदारायै नमः
७४९. ॐ दत्तहारायै नमः
७५०. ॐ दारिकायै नमः
७५१. ॐ दत्तभोगायै नमः
७५२. ॐ दत्तकोशायै नमः
७५३. ॐ दत्तहस्यादिवाहनायै नमः
७५४. ॐ दत्तमत्यै नमः
७५५. ॐ दत्तभार्यायै नमः
७५६. ॐ दत्तशास्त्रावबोधिकायै नमः
७५७. ॐ दत्तपानायै नमः
७५८. ॐ दत्तदानायै नमः
७५९. ॐ दत्तदारिद्रयनाशिन्यै नमः
७६०. ॐ दत्तसौधावनीवासायै नमः
७६१. ॐ दत्तस्वर्गायै नमः
७६२. ॐ दासदायै नमः
७६३. ॐ दास्यतुष्टायै नमः
७६४. ॐ दास्यहरायै नमः
७६५. ॐ दासदासीशतप्रदायै नमः
७६६. ॐ दाररूपायै नमः
७६७. ॐ दारवासायै नमः
७६८. ॐ दारवासिहृदास्पदायै नमः
७६९. ॐ दारवासिनजनाराध्यायै नमः
७७०. ॐ दारवासिजनप्रियायै नमः
७७१. ॐ दारवासिविनिर्मितायै नमः
७७२. ॐ दारवासिसमर्चितायै नमः
७७३. ॐ दारवास्याहृतप्राणायै नमः
७७४. ॐ दारवास्यरिनाशिन्यै नमः
७७५. ॐ दारवासिविघ्नहरायै नमः
७७६. ॐ दारवासिविमुक्तिद्रायै नमः
७७७. ॐ दाराग्निरूपिण्यै नमः
७७८. ॐ दारायै नमः
७७९. ॐ दारकार्यरिनाशिन्यै नमः
७८०. ॐ दम्पत्यै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७८१. ॐ दम्पतीष्टायै नमः
७८२. ॐ दम्पतीप्राणरूपिकायै नमः
७८३. ॐ दम्पतीस्नेहनिरतायै नमः
७८४. ॐ दम्पत्यसाधनप्रियायै नमः
७८५. ॐ दम्पत्यसुखसेनायै नमः
७८६. ॐ दम्पत्यसुखदायिन्यै नमः
७८७. ॐ दम्पत्याचारनिरतायै नमः
७८८. ॐ दम्पत्यामोदमोदितायै नमः
७८९. ॐ दम्पत्यामोदसुखिन्यै नमः
७९०. ॐ दम्पत्याह्लादकारिण्यै नमः
७९१. ॐ दम्पतीष्टपादपद्मायै नमः
७९२. ॐ दम्पत्यप्रेमरूपिण्यै नमः
७९३. ॐ दाम्पत्यभोगभवनायै नमः
७९४. ॐ दाडिमीफलभोजिन्यै नमः
७९५. ॐ दाडिमीफलसन्तुष्टायै नमः
७९६. ॐ दाडिमीफलमानसायै नमः
७९७. ॐ दाडिमीवृक्षसंस्थानायै नमः
७९८. ॐ दाडिमीवृक्षवासिन्यै नमः
७९९. ॐ दाडिमीवृक्षरूपायै नमः
८००. ॐ दाडिमीवनवासिन्यै नमः
८०१. ॐ दाडिमीफलसाम्योरु-
पयोधरसमन्वितायै नमः
८०२. ॐ दक्षिणायै नमः
८०३. ॐ दक्षिणारूपायै नमः
८०४. ॐ दक्षिणारूपधारिण्यै नमः
८०५. ॐ दक्षकन्यायै नमः
८०६. ॐ दक्षपुत्र्यै नमः
८०७. ॐ दक्षमात्रे नमः
८०८. ॐ दक्षस्वे नमः
८०९. ॐ दक्षगोत्रायै नमः
८१०. ॐ दक्षसुतायै नमः
८११. ॐ दक्षयज्ञविनाशिन्यै नमः
८१२. ॐ दक्षयज्ञनाशकर्त्र्यै नमः
८१३. ॐ दक्षयज्ञान्तकारिण्यै नमः
८१४. ॐ दक्षप्रसूत्यै नमः
८१५. ॐ दक्षज्यायै नमः
८१६. ॐ दक्षवंशैकपावन्यै नमः
८१७. ॐ दक्षात्मजायै नमः
८१८. ॐ दक्षसूनवे नमः
८१९. ॐ दक्षज्ञायै नमः
८२०. ॐ दक्षजातिकायै नमः
८२१. ॐ दक्षजन्मने नमः
८२२. ॐ दक्षजनुषे नमः
८२३. ॐ दक्षदेहसमुद्भवायै नमः
८२४. ॐ दक्षजनुषे नमः
८२५. ॐ दक्षयागध्वंसिन्यै नमः
८२६. ॐ दक्षकन्यकायै नमः
८२७. ॐ दक्षिणाचारनिरतायै नमः
८२८. ॐ दक्षिणाचारतुष्टिदायै नमः
८२९. ॐ दक्षिणाचारसंसिद्धायै नमः
८३०. ॐ दक्षिणाचारभावितायै नमः
८३१. ॐ दक्षिणाचारसुखिन्यै नमः
८३२. ॐ दक्षिणाचारसाधितायै नमः
८३३. ॐ दक्षिणाचारमोक्षास्यै नमः
८३४. ॐ दक्षिणाचारवन्दितायै नमः
८३५. ॐ दक्षिणाचारशरणायै नमः
८३६. ॐ दक्षिणाचारहर्षितायै नमः
८३७. ॐ द्वारपालप्रियायै नमः
८३८. ॐ द्वारवासिन्यै नमः
८३९. ॐ द्वारसंस्थितायै नमः
८४०. ॐ द्वाररूपायै नमः
८४१. ॐ द्वारसंस्थायै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

८४२. ॐ द्वारदेशनिवासिन्यै नमः
८४३. ॐ द्वारकर्यै नमः
८४४. ॐ द्वारधात्र्यै नमः
८४५. ॐ दोषमात्रविवर्जितायै नमः
८४६. ॐ दोषकरायै नमः
८४७. ॐ दोषहरायै नमः
८४८. ॐ दोषराशिविनाशिन्यै नमः
८४९. ॐ दोषाकरविभूषाढ्यायै नमः
८५०. ॐ दोषाकरकपालिन्यै नमः
८५१. ॐ दोषाकरसहस्त्राभायै नमः
८५२. ॐ दोषाकरसमाननायै नमः
८५३. ॐ दोषाकरमुख्यै नमः
८५४. ॐ दिव्यायै नमः
८५५. ॐ दोषाकरकराग्रजायै नमः
८५६. ॐ दोषाकरसमज्योतिष नमः
८५७. ॐ दोषाकरसुशीतलायै नमः
८५८. ॐ दोषाकरश्रेण्यै नमः
८५९. ॐ दोषादृषापाङ्गवीक्षणायै नमः
८६०. ॐ दोषाकरेष्टदेव्यै नमः
८६१. ॐ दोषाकरनिषेवितायै नमः
८६२. ॐ दोषाकरप्राणरूपायै नमः
८६३. ॐ दोषाकरमरीचिकायै नमः
८६४. ॐ दोषाकरोल्लसद्भालायै नमः
८६५. ॐ दोषाकरसुहर्षिण्यै नमः
८६६. ॐ दोषाकरशिरोभूषायै नमः
८६७. ॐ दोषाकरवधूप्रियायै नमः
८६८. ॐ दोषाकरवधूप्राणायै नमः
८६९. ॐ दोषाकरवधूमतायै नमः
८७०. ॐ दोषाकरवधूप्रीतायै नमः
८७१. ॐ दोषाकरवध्वै नमः
८७२. ॐ दोषापूज्यायै नमः
८७३. ॐ दोषापूजितायै नमः
८७४. ॐ दोषहारिण्यै नमः
८७५. ॐ दोषाज़ापमहानन्दायै नमः
८७६. ॐ दोषाजापपरायणायै नमः
८७७. ॐ दोषापुरश्चाररतायै नमः
८७८. ॐ दोषापूजकपुत्रिण्यै नमः
८७९. ॐ दोषापूजकवात्सल्य
कारिणीजगदम्बिकायै नमः
८८०. ॐ दोषापूजकवैरघ्न्यै नमः
८८१. ॐ दोषापूजकविघ्नहृते नमः
८८२. ॐ दोषापूजकसन्तुष्टायै नमः
८८३. ॐ दोषापूजकमुक्तिदायै नमः
८८४. ॐ दमप्रसूनसम्पूज्यायै नमः
८८५. ॐ दमपुष्पप्रियायै नमः
८८६. ॐ दुर्योधनप्रपूज्यायै नमः
८८७. ॐ दुःशासनसमर्चितायै नमः
८८८. ॐ दण्डपाणिप्रियायै नमः
८८९. ॐ दण्डपाणिंमात्रे नमः
८९०. ॐ दयानिधये नमः
८९१. ॐ दण्डपाणिसमाराध्यायै नमः
८९२. ॐ दण्डपाणिप्रपूजितायै नमः
८९३. ॐ दण्डपाणिगृहासक्तायै नमः
८९४. ॐ दण्डपाणिप्रियंवदायै नमः
८९५. ॐ दण्डपाणिप्रियतमायै नमः
८९६. ॐ दण्डपाणिमनोहरायै नमः
८९७. ॐ दण्डपाणिहृतप्राणायै नमः
८९८. ॐ दण्डपाणिसुसिद्धिदायै नमः
८९९. ॐ दण्डपाणिपरामृष्टायै नमः
९००. ॐ दण्डपाणिप्रहर्षितायै नमः
९०१. ॐ दण्डपाणिविघ्नहरायै नमः
९०२. ॐ दण्डपाणिशिरोधृतायै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१०३. ॐ दण्डपाणिप्राप्तचर्यायै नमः
१०४. ॐ दण्डपाण्युन्मुख्यै नमः
१०५. ॐ दण्डपाणिप्राप्तपदायै नमः
१०६. ॐ दण्डपाणिवरोन्मुख्यै नमः
१०७. ॐ दण्डहस्तायै नमः
१०८. ॐ दण्डपाण्यै नमः
१०९. ॐ दण्डबाहवे नमः
११०. ॐ दरान्तकृते नमः
१११. ॐ दण्डदोषकायै नमः
११२. ॐ दण्डकरायै नमः
११३. ॐ दण्डचित्तकृतास्पदायै नमः
११४. ॐ दण्डिविद्यायै नमः
११५. ॐ दण्डिमात्रे नमः
११६. ॐ दण्डिखण्डकनाशिन्यै नमः
११७. ॐ दण्डिप्रियायै नमः
११८. ॐ दण्डिपूज्यायै नमः
११९. ॐ दण्डिसन्तोषदायिन्यै नमः
१२०. ॐ दस्युपूज्यायै नमः
१२१. ॐ दस्युरतायै नमः
१२२. ॐ दस्युद्रविणदायिन्यै नमः
१२३. ॐ दस्युवर्गकृतार्हायै नमः
१२४. ॐ दस्युवर्गविनाशिन्यै नमः
१२५. ॐ दस्युनिर्णाशिन्यै नमः
१२६. ॐ दस्युकुलनिर्णाशिन्यै नमः
१२७. ॐ दस्युप्रियकर्यै नमः
१२८. ॐ दस्युनृत्यदर्शनतत्परायै नमः
१२९. ॐ दुष्टदण्डकर्यै नमः
१३०. ॐ दुष्टवर्गविद्राविण्यै नमः
१३१. ॐ दुष्टवर्गनिग्रहार्हायै नमः
१३२. ॐ दूषकप्राणनाशिन्यै नमः
१३३. ॐ दूषकोत्तापजनन्यै नमः
१३४. ॐ दूषकारिष्टकारिण्यै नमः
१३५. ॐ दूषकद्वैषणकर्यै नमः
१३६. ॐ दाहिकायै नमः
१३७. ॐ दहनात्मिकायै नमः
१३८. ॐ दारुकारिनिहन्त्र्यै नमः
१३९. ॐ दारुकेश्वरपूजितायै नमः
१४०. ॐ दारुकेश्वरमात्रे नमः
१४१. ॐ दोरुकेश्वरवन्दितायै नमः
१४२. ॐ दर्भहस्तायै नमः
१४३. ॐ दर्भयुतायै नमः
१४४. ॐ दर्भकर्मविवर्जितायै नमः
१४५. ॐ दर्भमय्यै नमः
१४६. ॐ दर्भतनवे नमः
१४७. ॐ दर्भसर्वस्वरूपिण्यै नमः
१४८. ॐ दर्भकर्माचाररतायै नमः
१४९. ॐ दर्भहस्तकृतार्हणायै नमः
१५०. ॐ दर्भानुकूलायै नमः
१५१. ॐ दाम्भर्यायै नमः
१५२. ॐ दर्वीपात्रानुदामिन्यै नमः
१५३. ॐ दमघोषप्रपूज्यायै नमः
१५४. ॐ दमघोषवरदायै नमः
१५५. ॐ दमघोषसमाराध्यायै नमः
१५६. ॐ दावाग्निरूपिण्यै नमः
१५७. ॐ दावाग्निरूपायै नमः
१५८. ॐ दावाग्निनिर्णाशितमहानमः
१५९. ॐ दन्तदंष्ट्रासरकलायै नमः
१६०. ॐ दन्तचर्चितहस्तिकायैनमः
१६१. ॐ दन्तर्दष्ट्रस्यन्दनायै नमः
१६२. ॐ दन्तनिर्णाशितासुरायै नमः
१६३. ॐ दधिपूज्यायै नमः
१६४. ॐ दधिप्रीतायै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१६५. ॐ दधीचिवरदायिन्यै नमः
१६६. ॐ दधीचिष्टदेवतायै नमः
१६७. ॐ दधीचिमोक्षदायिन्यै नमः
१६८. ॐ दधीचिदैत्यहन्त्र्यै नमः
१६९. ॐ दधीचिदरदारिण्यै नमः
१७०. ॐ दधीचिभक्तिसुखिन्यै नमः
१७१. ॐ दधीचिमुनिसवितायै नमः
१७२. ॐ दधीचिज्ञानदात्र्यै नमः
१७३. ॐ दधीचिगुणदायिन्यै नमः
१७४. ॐ दधीचिकुलसम्भूषायै नमः
१७५. ॐ दधीचिभुक्तिदायै नमः
१७६. ॐ दधीचिकुलदेव्यै नमः
१७७. ॐ दधीचिकुलदेवतायै नमः
१७८. ॐ दधीचिकुलगम्यायै नमः
१७९. ॐ दधीचिकुलपूजितायै नमः
१८०. ॐ दधीचिसुखदात्र्यै नमः
१८१. ॐ दधीचिदैन्यहारिण्यै नमः
१८२. ॐ दधीचिदुःखहन्त्र्यै नमः
१८३. ॐ दधीचिकुलसुन्दर्यै नमः
१८४. ॐ दधीचिकुलसम्भूतायै नमः
१८५. ॐ दधीचिकुलपालिन्यै नमः
१८६. ॐ दधीचिदानगम्यायै नमः
१८७. ॐ दधीचिदानमानिन्यै नमः
१८८. ॐ दधीचिदानसन्तुष्टायै नमः
१८९. ॐ दधीचिदानदेवतायै नमः
१९०. ॐ दधीचिजयसंप्रीतायै नमः
१९१. ॐ दधीचिजपमानसायै नमः
१९२. ॐ दधीचिजपपूजाढ्यायै नमः
१९३. ॐ दधीचिजपमालिकायै नमः
१९४. ॐ दधीचिजपसन्तुष्टायै नमः
१९५. ॐ दधीचिजपतोषिण्यै नमः
१९६. ॐ दधीचितापसाराध्यायै नमः
१९७. ॐ दधीचिशुभदायिन्यै नमः
१९८. ॐ दूर्वायै नमः
१९९. ॐ दूर्वादलश्यामायै नमः
१०००. ॐ दूर्वादलसमद्युतयै नमः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी, नमो नमो अम्बे दुख हरनी।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी, तिहूँ लोक फैली उजियारी॥
शशि ललाट मुख महा विशाला, नेत्र लाल भृकुटी विकाराला।
रूप मातु को अधिक सुहावै, दरश करत जन अति सुख पावै॥
तुम संसार शक्ति लय कीना, पालन हेतु अन्न धन दीना।
अन्नपूरणा हुई जग पाला, तुम ही आदि सुन्दरी बाला॥
प्रलय काल सब नाशन हारी, तुम गौरी शिव शंकर प्यारी।
शिव योगी तुम्हरे गुण गावैं, ब्रह्मा विष्णु तुम्हे नित ध्यावैं॥
रूप सरस्वती को तुम धारा, दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा।
धरा रूप नरसिंह को अम्बा, परगट भई फाड़ के खम्बा॥
रक्षा करि प्रहलाद बचायो, हिरणाक्षप को स्वर्ग पठायो।
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं, श्री नारायण अंग समाहीं॥
क्षीरसिंधु में करत विलासा, दयासिंधु दीजै मन आसा।
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी, महिमा अमित न जात बखानी॥
मातंगी धूमावती माता, भुवनेश्वरि बगला सुख दाता।
श्री भैरव तारा जग तारिणी, क्षिन्न भाल भवदुःख निवारिणी॥
केहरि वाहन सोहे भवानी, लंगूर वीर चलत अगवानी।
कर में खप्पर खड्ग विराजै, जाको देख काल डर भाजै॥
सोहे अस्त्र और त्रिशूला, जाते उठत शत्रु हिय शूला।
नगरकोट में तुम्हीं विराजत, तिहूँ लोक में डंका बाजत॥
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे, रक्तबीज शंखन संहारे।
महिषासुर नृप अति अभिमानी, जेहि अघ भार मही अकुलानी॥
रूप कराल काली को धारा, सेन सहित तुम तिहि संहारा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

परी गाढ़ सन्तन पर जब जब, भई सहाय मातु तुम तब तब॥
अमर पुरी औरों सब लोका, तव महिमा सब रहे अशोका।
बाला में है ज्योति तुम्हारी, तुम्हे सदा पूजैं नर नारी॥
प्रेम भक्ति से जो जस गावै, दुःख दारिद्र निकट नहीं आवै।
ध्यावें तुम्हें जो नर मन लाई, जन्म मरण ते सो छुट जाई॥
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी, योग न होय बिन शक्ति तुम्हारी।
शंकर आचारज तप कीनो, काम क्रोध जीति सब लीनों॥
निशि दिन ध्यान धरो शंकर को, काहु काल नहिं सुमिरो तुमको।
शक्ति रूप को मरम न पायो, शक्ति गई तब मन पछतायो॥
शरणागत हुई कीर्ति बखानी, जै जै जै जगदम्ब भवानी।
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा, दई शक्ति नहीं कीन विलम्बा॥
मोको मात कष्ट अति घेरो, तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो।
आशा तृष्णा निपट सतावै, रिपु मूरख मोहि अति डर पावै॥
शत्रु नाश कीजै महारानी, सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी।
करो कृपा हे मातु दयाला, ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला॥
जब लगि जियों सदा फल पाऊँ, तुम्हरो जस मैं सदा सुनाऊँ।
दुर्गा चालीसा जो कोई गावै, सब सुख भोग परम पद पावै॥
देवीदास शरण निज जानी, करहु कृपा जगदम्बा भवानी।

॥ श्री दुर्गा चालीसा समाप्त ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री विन्ध्येश्वरी चालीसा

नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो नमो जगदम्ब।
सन्तजनों के काज में, करती नहीं विलम्ब॥

जय जय जय विन्ध्याचल रानी, आदि शक्ति जग विदित भवानी।
सिंह वाहिनी जै जगमाता, जै जै जै त्रिभुवन सुखदाता॥
कष्ट निवारिनि जय जग देवी, जै जै सन्त असुर सुर सेवी।
महिमा अमित अपार तुम्हारी, शेष सहस मुख वर्णत हारी॥
दीनन का दुख हरत भवानी, नहिं देख्यो तुम सब कोउ दानी।
सब कर मनसा पुरवत माता, महिमा अमित जगत विख्याता॥
जो जन ध्यान तुम्हारो लावै, सो तुरतहिं वाँछित फल पावै।
तुही वैष्णवी तुही रुद्रानी, तुही सारदा अरु ब्रह्मानी॥
रमा राधिका श्यामा काली, तुही मातु सन्तन प्रतिपाली।
उमा माधवी चण्डी ज्वाला, बेगि मोहि पर होहु दयाला॥
तुही हिंगलाज महारानी, तुही शीतला अरु विज्ञानी।
दुर्गा दुर्ग विनाशिनी माता, तुही लक्ष्मी जग सुख दाता॥
तुही जान्हवी अरु उत्रानी, हेमावती अम्ब निर्वानी।
अष्टभुजी वाराहिनी देवा, करत विष्णु शिव जाकर सेवा॥
चौसट्टी देवी कल्यानी, गौरी मंगला सब गुण खानी।
पाटनमुंबा दन्त कुमारी, भद्रकालि सुनु विनय हमारी॥
बज्र धारिणी शोक नाशिनी, आयु रक्षिनी विन्ध्यवासिनी।
जया और विजया बैताली, माता संकटी अरु विक्राली॥
नाम अनन्त तुम्हार भवानी, वरनै किमि मानुष अज्ञानी।
जापर कृपा मात तव होई, तो वह करै चहै मन जोई॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

कृपा करहु मोपर महारानी, सिद्ध करिय अब यह मम बानी।
जो नर धरै मात कर ध्याना, ताकर सदा होय कल्याना॥
विपति ताहि सपने नहिं आवे, जो देवी का जाप करावै।
जो नर कहँ ऋण होय अपारा, सो नर पाठ करै शतबारा॥
निश्चय ऋण मोचन होई जाई, जो नर पाठ करे मन लाई।
अस्तुति जो नर पढ़े पढ़ावे, या जग में सो वह सुख पावै॥
जाको व्याधि सतावै भाई, जाप करत सब दूर पराई।
जो नर अति बन्दी महं होई, बार हजार पाठ कर सोई॥
निश्चय बन्दी ते छुटि जाई, सत्य वचन मम मानहु भाई।
जापर जो कछु संकट होई, निश्चय देविहिं सुमिरे सोई॥
जा कहं पुत्र होय नहिं भाई, सो नर या विधि करे उपाई।
पाँच वर्ष जो पाठ करावै, नौरातर महं विप्र जिमावे॥
निश्चय होहिं प्रसन्न भवानी, पुत्र देहिं ताकहं गुणखानी।
ध्वजा नारियल आनि चढ़ावे, विधि समेत पूजन करवावे॥
नितप्रति पाठ करे मन लाई, प्रेम सहित नहिं आन उपाई।
यह श्री विन्ध्याचल चालीसा, रंक पढ़त होवे अवनीसा।
यह जानि अचरज मानहु भाई, कृपादृष्टि जा पर हुई जाई।
जै जै जै जगमात भवानी, कृपा करहु मोहि पर जन जानी॥

॥ श्री विन्ध्येश्वरी चालीसा समाप्त॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

श्री काली जी की आरती

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे॥
सुन जगदम्बा! कर न विलम्बा, सन्तन के भण्डार भरे।
संतन प्रतिपाली, सदा खुशाली, जै काली कल्याण करे॥ १॥
बुद्धि विधाता, तू जगमाता, मेरा काज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे॥
जब जब भीर पड़ी भक्तन पर, तब तब आय सहाय करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जै काली कल्याण करे॥ २॥
बार बार तैं सब जग मोह्यो, तरुणी रूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, कहीं भार्या हो भोग करे॥
संतन सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जै काली कल्याण करे॥ ३॥
ब्रह्मा विष्णु महेश सहसफन, लिए भेंट तेरे द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र धरे॥
हुए शनिश्चर कुंकुमवरणी, जब लांगुर पर हुकुम करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जै काली कल्याण करे॥ ४॥
कुपित होइकर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे।
खड्ग त्रिशूल हाथ में लेकर, रक्तबीज को भस्म करे॥
शुम्भ निशुम्भ पछाड़े माता, महिषासुर को पकड़ दरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जै काली कल्याण करे॥ ५॥
जब तुम दयारूप को धारो, पल में संकट दूर करे।
आदितवार आदि का राजत, अपने जन का कष्ट हरे॥
सौम्य स्वभाव धरा मेरी माता, जन की अरज कबूल करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जै काली कल्याण करे॥ ६॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज करे।
दर्शन पावें मंगल गावें, सिद्ध साधु चर भेंट धरे॥
ध्यान धरत ही श्री काली को, चार पदारथ हाथ परे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जै काली कल्याण करे॥७॥
ब्रह्मा वेद पढ़ै तेरे द्वारे, शिवशंकर जी ध्यान धरें।
इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती, चँवर कुबेर डुलाय करे॥
जय जननी जय मातु भवानी, अचल भवन में राज करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जैकाली कल्याण करै॥८॥

श्री अम्बा जी की आरती

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गायें भारती।
माता तेरे भक्त जनों पर भीड़ पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी।
सौ सौ सिंहों से बलशाली अष्ट भुजाओं वाली।
दुखियों के दुःख को निवारती। ओ मैया...
मां बेटे का इस जग में है बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत कपूत सुने हैं पर ना माता सुनी कुमाता।
सब पर करुणा दरसाने वाली अमृत बरसाने वाली।
दुखियों के दुःख को निवारती। ओ मैया...
नहीं मांगते धन और दौलत ना चांदी ना सोना।
हम तो मांगते तेरे मन का एक छोटा सा कोना।
सबकी बिगड़ी बनाने वाली लाज बचाने वाली,
सतियों के सत को संवारती। ओ मैया...

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

आरती श्री दुर्गाजी की

जय अम्बे गौरी मैया जय मंगल मूर्ति मैया जय आनन्द करनी।
तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ टेक ॥ जय अम्बे गौरी...
माँग सिंदूर विराजत टीको मृग मद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना चन्द्र बदन नीको ॥ जय अम्बे गौरी...
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला कंठन पर साजै ॥ जय अम्बे गौरी...
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुःखहारी ॥ जय अम्बे गौरी...
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति ॥ जय अम्बे गौरी...
शुम्भ-निशुम्भ विदारे महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती ॥ जय अम्बे गौरी...
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥ जय अम्बे गौरी...
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ जय अम्बे गौरी...
चौसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥ जय अम्बे गौरी...
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता ॥ जय अम्बे गौरी...
भुजा चार अति शोभित खड्ग खप्पर धारी।
मन-वांछित फल पावत सेवत नर नारी ॥ जय अम्बे गौरी...
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति ॥ जय अम्बे गौरी...
यह अम्बा जी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै ॥ जय अम्बे गौरी...

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दुखों का विनाश करने वाला

श्री दुर्गा नवार्ण यन्त्र

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri